श्री तीर्थंकरचक्र विधान

रचयिता

मुनि श्री सुव्रतसागर जी महाराज

प्रकाशक

श्री जैनोदय विद्या समूह

- कृति : श्री तीर्थंकरचक्र विधान
- आशीर्वाद : आचार्य श्री १०८ विद्यासागरजी महाराज
- रचयिता : मुनि श्री १०८ सुव्रतसागरजी महाराज
- संयोजन : ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना
- प्रसंग : आचार्य श्री का ५०वाँ मुनिदीक्षा संयम स्वर्ण महोत्सव एवं मुनि श्री का २०वाँ मुनि दीक्षा दिवस
- संस्करण : प्रथम, २०१८
- आवृत्ति : ११००
- लागत मूल्य : ०००/-
- प्राप्ति स्थान : ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना
94251-28817
- पुण्यार्जक :
- मुद्रक : विकास आफसेट, भोपाल

मंगलाचरण

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
श्री तीर्थंकरचक्र विधान से, जन का मंगल होवे॥
मंगलकारी तीर्थंकर हैं, विघ्न अमंगलकारी।
धर्मध्वजा के संवाहक हैं, मुक्तिवधू अधिकारी॥
जिनकी पूजन अर्चन करके, महा पुण्य सुख होवे।
श्री तीर्थंकरचक्र विधान से, जन का मंगल होवे॥१॥
जो संसारी इस दुनियाँ में, भूल गये पथ संसारी।
मोक्षमार्ग से भटक-भटक कर, सुख से कभी न नाँचे॥
उन्हें दिशा निर्देशक बनकर, सच्चा साथी होवे।
श्री तीर्थंकरचक्र विधान से, जन का मंगल होवे॥२॥
असाध्य रोगी भी तो इससे, लेकर धर्म सहारे।
स्वस्थ मस्त सुन्दर बन जाते, होते वारे न्यारे॥
इस सम औषध मंत्र रसायन, दूजा कोई न होवे।
श्री तीर्थंकरचक्र विधान से, जन का मंगल होवे॥३॥
तीव्र असाता कर्मोदय से, जब सब करें किनारे।
जब कोई न दिखे सहारे, तो तु मत घबराये॥
बस तीर्थंकर चक्र पूजकर, तू बड़भागी होवे।
श्री तीर्थंकरचक्र विधान से, जन का मंगल होवे॥४॥
जड़ धन रत्नों का क्या कहना, आगे पीछे डोले।
आतम का वो धन पाकर के, मुक्ति के पट खोले॥
श्री अरिहंत सिद्ध सा वैभव, सुव्रत का भी होवे।
श्री तीर्थंकरचक्र विधान से, जन का मंगल होवे॥५॥

(दोहा)

जिनशासन की शान है, जो चौबीसी तीस।
पृथक-पृथक व समूह में, जिन्हें नमोस्तु धर शीश॥

(पुष्पांजलिं...)

समुच्चय पूजन

(ज्ञानोदय)

ढाई द्वीप में पाँच भरत हैं, इतने ही ऐरावत हैं।
इन दस क्षेत्रों में त्रिकाल में, तीस क्षेत्र परिवर्तित हैं॥
पूज्य तीस चौबीसी जिनमें, हुए सात सौ बीस जिनम्।
जिनके दर्शन हो न सके तो, हुआ हमारा व्याकुल मन॥
हुई भावना पूजन की तो, मन को मंदिर बना लिया।
भक्ति चौक के श्रद्धासन पर, प्रभु को सादर बुला लिया॥
आवेदन सुनकर प्रभु आओ, दो हमको जिन संवेदन।
जिनको नमोस्तु समगं समगं, फिर पत्तेयं पत्तेयं॥

(दोहा)

प्रभु श्रद्धा विश्वास से, होता सब आसान।
शक्ति चक्र की प्राप्ति हो, अतः करें आह्वान॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी संबंधी सप्तशत् विंशति तीर्थंकराः अत्र अवतन अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ...। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्...।(पुष्पांजलिं...)

(सखी)

नहीं जन्म मृत्यु की इच्छा, नहीं सुख शांति की वांछा।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी संबंधी सप्तशत् विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

मटि ताप खेद नशवाये, नहीं देह सुगन्धित पाये।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी संबंधी सप्तशत् विंशति तीर्थंकरेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

नहीं जगत संपदा पाने, नहीं अक्षय आत्म बनाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी संबंधी सप्तशत् विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

नहीं स्वर्ग भोग की आशा, नहीं ब्रह्म रमण का वासा।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी संबंधी सप्तशत् विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं...।

नहीं भोग भोगना जग के, नहीं स्वाद चाहते खुद के।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी संबंधी सप्तशत् विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

नहीं देह कांति चमकाने, नहीं आत्म ज्योति प्रकटाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी संबंधी सप्तशत् विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

नहीं कर्म विजय की इच्छा, नहीं चाहे शिक्षा दीक्षा।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी संबंधी सप्तशत् विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

नहीं गुच्छे पाना फल के, नहीं सपने मोक्ष महल के।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी संबंधी सप्तशत् विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

नहीं केवल अर्घ चढ़ाने, नहीं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी संबंधी सप्तशत् विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंच कल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

जो कल्याणक गर्भ के, तीन काल के नाम।
पूज्य तीस चौबीसियाँ, जिनको नम्र प्रणाम॥

ॐ ह्रीं गर्भमंगल मंडिताय तीस चौबीसी संबंधी सप्तशत् विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

जो कल्याणक जन्म के, तीन काल के नाम।
पूज्य तीस चौबीसियाँ, जिनको नम्र प्रणाम॥

ॐ ह्रीं जन्ममंगल मंडिताय तीस चौबीसी संबंधी सप्तशत् विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

जो कल्याणक तपों के, तीन काल के नाम।
पूज्य तीस चौबीसियाँ, जिनको नम्र प्रणाम॥

ॐ ह्रीं तपमंगल मंडिताय तीस चौबीसी संबंधी सप्तशत् विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

जो कल्याणक ज्ञान के, तीन काल के नाम।
पूज्य तीस चौबीसियाँ, जिनको नम्र प्रणाम॥

ॐ ह्रीं ज्ञानमंगल मंडिताय तीस चौबीसी संबंधी सप्तशत् विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

जो कल्याणक मोक्ष के, तीन काल के नाम।
पूज्य तीस चौबीसियाँ, जिनको नम्र प्रणाम॥

ॐ ह्रीं मोक्षमंगल मंडिताय तीस चौबीसी संबंधी सप्तशत् विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

तीस-तीस चौबीसियाँ, जयमाला के नाम।
जिन तीर्थंकरचक्र को, बारम्बार प्रणाम॥

(विष्णु)

जहाँ-जहाँ पर जैन भक्त, मंदिर मिले वहाँ।
जहाँ-जहाँ पर जिन मंदिर हैं, प्रभु के चैत्य वहाँ॥
तीन काल वाले तीर्थंकर, सभी पूजत हैं।
हम भी उनके नाम जाप कर, आत्म खोजते हैं॥१॥

जम्बू-धातकी-पुष्करार्ध में,पूरव-पश्चिम में।
क्षेत्र भरत ऐरावत वाले, सब ही भगवन् के॥
भूत-भविष्यत-वर्तमान के, तीर्थंकर प्यारे।
पूज्य सात सौ बीस जिनेश्वर, जग के उजयारे॥२॥

जिनमें से कुछ-कुछ जिनवर तो, मोक्ष पधारे हैं।
कुछ भविष्य में जायेंगे सो, नमन हमारे हैं॥
प्रथम रहे निर्वाणनाथ जी, तीर्थंकर स्वामी।
अंतिम सुरार्घदेव उन्हीं में, जिनको प्रणमानि॥३॥

इन चौबीसी तीर्थंकर के, मंत्रों की माला।
परंपरा से जपते-जपते, हरती जंजाला॥
इनके व्रत उपवास क्रिया कर, अनुष्ठान करना।
तथा सात सौ बीस जैन व्रत, करके दुःख हरना॥४॥

उद्यापन में यथायोग्य कुछ, दान पुण्य कर लो।
या फिर करो प्रतिष्ठा प्रभु की, जन्म सफल कर लो॥
या फिर दान तीस ग्रंथों का, करके धर्म करो।
या फिर आर्या मुनि बनकर के, सारे कर्म हरो॥५॥

इतना कोई कर न सके तो, नाम मंत्र जपना।
इतना कोई कर न सको तो, दर्शन तो करना॥
इतना भी यदि कर न सको तो, भाव नमन कर लो।
इतना भी यदि कर न सको तो, बिना भाव भज लो॥६॥

भाव रहित भी प्रभु का भजना, पुण्य बहुत देता।
जो क्रमशः दे स्वर्ग मोक्ष जो, सिद्ध तत्त्व देता॥
'सुव्रत' इनकी माला जप के, शुद्धातम पाओ।
मालामाल शीघ्र हो आतम, सिद्ध शिला पाओ॥७॥

(सोरठा)

हम करके गुणगान, भजे तीस चौबीसियाँ।
हो सबको कल्याण, खोले आतम खिड़कियाँ॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी संबंधी सप्तशत् विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें तीस चौबीसियाँ, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दें, हम पूजत भगवान॥

(शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुखों को मेंट दो, चौबीसी जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

अर्घ्यावली–१

(सखी)

निर्वाण नाम को सार्थक, प्रभु तुमने शीघ्र बनाया।
तब ही सब कर्म नशाके, निर्वाण मोक्ष पद पाया॥
हम तन का बाण नशाके, निर्वाण सुखी पद पायें।
तब ही निर्वाण प्रभु को, करके नमोस्तु सुख पायें॥१॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरतक्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री निर्वाणनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

ज्यों रत्न राशि सागर में, मिलती अनमोल निधि है।
यों सागरनाथ प्रभु में, रत्नत्रय की सन्निधि है॥
वह सागर सम रत्नत्रय, हम पाने को ललचायें।
तब ही सागर जिनवर को, करके नमोस्तु सुख पायें॥२॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री सागरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

यूँ भी इस दुनियाँ में तो, है दुर्लभ साधु स्वरूपा।
फिर महासाधु प्रभु बनना, है अति दुर्लभ जिनरूपा॥
सिंह चर्या जैसे साधु, बनकर हम आतम ध्यायें।
सो महासाधु जिनवर को, करके नमोस्तु सुख पायें॥३॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री महासाधु जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

सिद्धातम जैसी आतम, मैली कर्मों के मल से।
वह शुद्ध विमलप्रभ करके, जा मिले मुक्ति मंजिल से॥
हम विमल बनें गल हरके, कुन्दन सी आतम पायें।
सो पूज्य विमलप्रभ जिन को, करके नमोस्तु सुख पायें॥४॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री विमलप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

जो जड़ धन शिर पर रखते, सामान्य वही जन होते।
जो जड़ धन के शिर पर हों, प्रभु श्रीधर वो जिन होते॥
अब चेतन धन को पाने, हम जड़ धन को तज पायें।
तब ही श्रीधर जिनवर को, करके नमोस्तु सुख पायें॥५॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्रीधर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

क्या लेन-देन अपना पर, जग लेन-देन से चलता।
जो निज पर रत्नत्रय है, वह सुदत्त प्रभु से मिलता॥
जग लेन-देन हम तज के, बस तेरे ही हो जायें।
तब ही सुदत्त जिनवर को, करके नमोस्तु सुख पायें॥६॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री सुदत्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

तज द्रव्य भाव नो कर्मा, निर्लिप्त अवस्था पाई।
हैं पूज्य अमलप्रभ वो ही, निज निर्मलता अपनाई॥
ज्यों कमल अमल जल में त्यों, निर्लिप्त दशा हम पायें।
सो पूज्य अमलप्रभ जिन को, करके नमोस्तु सुख पायें॥७॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री अमलप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

सर्वोच्च हुये जो जग में, वो हैं उद्धर प्रभु स्वामी।
छू देख सकें न जिनको, बस बारम्बार नमामि॥
अब अपने पास बुलालो, हम लोक शिखर पर आयें।
तब ही उद्धर जिनवर को, करके नमोस्तु सुख पायें॥८॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री उद्धरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

जो सद्गुरु परम वो पाये, सिद्धों का शहर सुहाना।
वो अंगिर स्वामी हमको, जल्दी उस देश बुलाना॥
प्रभु करें हमारी रक्षा, हम ऐसी आश लगायें।
तब ही अंगिर जिनवर को, करके नमोस्तु सुख पायें॥९॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री अंगिरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

जग की सब मतियाँ गतियाँ, जो हरकर सन्मति पाये।
जो पंचमगति में शोभें, जो सन्मति शुद्ध बनायें॥
हम हरें कुमति दुर्गति को, निज रसानुभूति पायें।
तब ही सन्मति जिनवर को, करके नमोस्तु सुख पायें॥१०॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री सन्मतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

जो अनन्त हैं सिन्धुसम, गंभीर मधुर हितकर हैं।
जिन इन्दु सिन्धुसम दाता, प्रभु सिन्धु नाम जिनवर हैं॥
अब क्षार सिन्धुसम तजके, हम आतम क्षीर बहायें।
जो सिन्धु नाथ जिनवर को, करके नमोस्तु सुख पायें॥११॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री सिन्धुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

ज्यों कुसुम खिलें काँटों में, ज्यों तपे आग में कुन्दन।
ऐसे प्रभु कुसमांजलि हैं, हो जिन्हें कोटिशः वन्दन॥
हम सुविधा-दुविधा पल में, कुसुमों सम कुन्द खिलायें।
तब ही कुसमांजलि प्रभु को, करके नमोस्तु सुख पायें॥१२॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री कुसमांजलिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

जो शुद्ध आत्मा अपनी, वह सिद्ध राजधानी हो।
उन सिद्धचक्र शिवगण को, वंदन में क्या हानि हो॥
उन शिवगण जिनेन्द्र की हम, चरणों की धूलि पायें।
तब ही शिवगण जिनवर को, करके नमोस्तु सुख पायें॥१३॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री शिवगणनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

उत्साह रखें जो दिल में, धर नेक इरादे साँचे।
उत्साहनाथ वो बनते, जिनका यश दुनियाँ वाँचे॥
उत्साह राह में रखकर, हम कभी नहीं घबरायें।
तब ही उत्साह प्रभु को, करके नमोस्तु सुख पायें॥१४॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री उत्साहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

जितने जग में गुण दिखते, वे ज्ञान महल में रुकते।
उनके प्रभु हैं ज्ञानेश्वर, जिनको हम बच्चे झुकते॥
ज्ञानेश्वर की गोदी में, हम बच्चे भी इठलायें।
तब ही ज्ञानेश्वर प्रभु को, करके नमोस्तु सुख पायें॥१५॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री ज्ञानेश्वरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

जो देवों के भी देवा, जो नाथों के भी नाथा।
वे परम पूज्य परमेश्वर, उनसे है अपना नाता॥
उनके ही खातिर हम तो, झूठे संबंध नशायें।
सो परमेश्वर जिनवर को, करके नमोस्तु सुख पायें॥१६॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री परमेश्वरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

जो स्वपर प्रकाशी आतम, वह सबसे निर्मल सुन्दर।
विमलेश्वर उसके स्वामी, सिद्धेश्वर पूज्य दिगम्बर॥
हम विमल सरोवर जैसी, झिलमिल आतम झलकायें।
तब ही विमलेश्वर प्रभु को, करके नमोस्तु सुख पायें॥१७॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री विमलेश्वरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

जो ख्याति लाभ पूजायें, सब जिन को शीश झुकायें।
वे पूज्य यशोधर जिन के, यश से हम भी यश पायें॥
यश धारण हम भी करके, निज को निज में प्रकटायें।
सो पूज्य यशोधर प्रभु को, करके नमोस्तु सुख पायें॥१८॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर ॐ ह्रीं भूतकालिक तीर्थंकर श्री यशोधरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

जो कर्म कालिमा काली, जिनने पूरी हर डाली।
वे पूज्य कृष्णमति जिनवर, पाये हैं मुक्ति निराली॥
वह मुक्ति निराली पाने, हम भक्ति हिलोरें पायें।
सो पूज्य कृष्णमति प्रभु को, करके नमोस्तु सुख पायें॥१९॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री कृष्णमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

मन में उपजे वो मति हो, वह सुधरे जब संगति हो।
सर्वज्ञ पूज्य पद दें वो, तो पूज्य ज्ञानमति मति हो॥
हम रहे अल्पमति भोले, क्या उनको गीत सुनायें।
सो पूज्य ज्ञानमति प्रभु को, करके नमोस्तु सुख पायें॥२०॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री ज्ञानमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

जो शुद्ध बुद्ध चेतन है, वो अपराजित सुख शाला।
वो प्राप्त शुद्धमति करके, प्रभु पाए मुक्ति वरमाला॥
हो मुक्ति वधू नत-नयना, हम ऐसे स्वप्न सजायें।
सो पूज्य शुद्धमति प्रभु को, करके नमोस्तु सुख पायें॥२१॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री शुद्धमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

जिस कुल में संत जनमते, या संतों की हो सेवा।
श्रीभद्र जन्म ले उसमें, बन गये देव-अधिदेवा॥
हम समंतभद्र सम बनके, श्रीभद्रनाथ बन जायें।
तब ही श्रीभद्र प्रभु को, करके नमोस्तु सुख पायें॥२२॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री श्रीभद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

जो लाँघे जग सीमायें, पर आतम लाँघ न पाये।
अतिक्रांतनाथ वे बनकर, शुद्धातम रूप सजाये॥
हो विश्वपूर्ण मर्यादित, हम यही भावना भायें।
तब ही अतिक्रांत प्रभु को, करके नमोस्तु सुख पायें॥२३॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री अतिक्रांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

जो प्रथम संत मुनि बनके, जिन शांति सुधा बरसाये।
जो भक्ति मुक्ति अंकुर दे, वो शांता प्रभु कहलाये॥
भव क्रांति-अशांति हरें हम, निज शांत रूप प्रगटायें।
तब ही शांता जिनवर को, करके नमोस्तु सुख पायें॥२४॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री शांतानाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(पूर्णार्घ्य)

हमने भगवान ना देखे, बस गुरुओं से है जाना।
ग्रन्थों में पढ़ा सुना है, या बिम्बों से पहचाना॥
क्या सुन्दर इनकी गाथा, क्या सुन्दर मोक्ष कहानी।
क्या सुन्दर इनकी करुणा, तब ही दुनियाँ दीवानी॥

हम तो थोड़ा ही माँगें, तुम देते भर-भर झोली।
अब इतना और करो तुम, सजवादो मुक्ति की डोली॥
कई बार सजीं हैं डोली, कितनी हुई अंतिम यात्रा।
फिर भी डोली अर्थी की, सम्पूर्ण रुकी ना यात्रा॥

थक गये बहुत हम स्वामी, भव यात्रा अब रुकवादो।
अर्थी सजने के पहले, अद्भुत डोली सजवादो॥

जो सजी कभी न उसमें, बस एक बार बिठवादो।
यह अर्घ्य और कैसे भी, हस्ताक्षर तुम करवालो॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं....।

अर्घ्यावली—२

(लय—माता तू दया करके.....)

जिनवर की पूजा से, सबका मंगल होता।
हम करें नमोऽस्तु तो, हर कार्य सफल होता॥

जब धर्म बिना प्राणी, कर्मों के दुख पाये।
तब वृषभनाथ स्वामी, सुख शांति धर्म लाये॥
उसने वो सब पाया, जिसने जो कुछ चाहा।
सो अर्घ्य चढ़ा हमने, तुमसे तुमको चाहा॥१॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री आदिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

जो अजितनाथ प्रभु की, बहु भक्ति करता हो।
जग मित्र बने उसका, कभी बाल न बांका हो॥
हम अंतर बाहर के, रिपु की जय चाह रहे।
सो अर्घ्य चढ़ा तुमको, तुमसे ही माँग रहे॥२॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री अजितनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

दुनियाँ का वैभव तो, शंभवप्रभु त्याग चुके।
जब निज में लीन हुये, तो त्रय जग आन झुके॥
फिर त्रय जग के सिर पर, प्रभु की छत्र छाया।
सो अर्घ्य चढ़ा तुमको, माँगें तेरी छाया॥३॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री शम्भवनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

पर के अभिनंदन से, निज खोते पर पाते।
प्रभु के अभिनंदन से, पर खोते निज पाते॥
प्रभु सा बन जाने को, प्रभु वंदन करते हैं।

सो अर्घ्य चढ़ा प्रभु का, अभिनंदन करते हैं॥४॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

हम रखें मोह मति को, सो राग-द्वेष होता।
तब रत्नत्रय के बिन, कब आत्म ध्यान होता॥
हे सुमतिनाथ जिनवर, प्रभु हमें सुमति देना।
हम अर्घ्य चढ़ायें तो, हमको सद्गति देना॥५॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

दुनियाँ के दलदल से, प्रभु दूर हुये ऐसे।
दुनियाँ में रहकर भी, हो खिले कमल जैसे॥
सो पद्मप्रभु जैसा, बनने जग ललक रहा।
यह अर्घ्य चढ़ाया तो, परमातम झलक रहा॥६॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

प्रभु दया भाव धरके, निज आतम श्रृंगारें।
सो छोड़ दिया जग पर, हम तुमको स्वीकारें॥
हे सुपार्श्व प्रभु हमको, तुम नहीं भूल जाना।
हम अर्घ्य चढ़ा चाहें, बस चरण धूल पाना॥७॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

नभ के चंदा से तो, सरवर के कमल खिलें।
लेकिन चंदाप्रभु से, भव्यों के कमल खिलें॥
सो नभ का चंदा तज, हम तुमको पूज रहे।
यह अर्घ्य चढ़ाकर के, निज में जिन खोज रहे॥८॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

जग के रिश्ते नाते, ज्यों फूल और काँटे।
जिनमें आतम उलझी, तो मिले कर्म चाँटे॥

पर पुष्पदंत प्रभु ने, काँटे चाँटे छोड़े।
सो अर्घ्य चढ़ा सबने, सिर झुका हाथ जोड़े॥९॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानभूतकालिक तीर्थंकर श्री सुविधिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

निज कुल सिद्धि को तुम, जिन कुल के सिद्ध बने।
हम भी गुरुकुल पाके, तुम जैसे सिद्ध बनें॥
हे शीतल! प्रभु हमको, जिनकुल का दान करो।
हम अर्घ्य चढ़ायें तुम, भक्तों का ध्यान रखो॥१०॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं.....।

हर मुश्किल का हल हो, हाँ! आज नहीं कल हो।
जो चुने आपका पथ, उसका चित् उज्ज्वल हो॥
हे श्रेयांसनाथ हर लो, हम संकट दुख को भी।
हम अर्घ्य चढ़ायें तुम, प्रभु थामो हमको भी॥११॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री श्रेयांसनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

जो बाल ब्रह्म व्रत ले, वो निज से प्रेम करे।
अर्हन्त महन्त बने, तो मुक्तिवधू भी वरे॥
सो वासुपूज्य जैसा, अपना भी स्वयंवर हो।
हम अर्घ्य चढ़ायें तुम, यह चमत्कार कर दो॥१२॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

जो देह मैल धोकर, तन को चमकाते हैं।
वो अपनी आतम को, संसारी बनाते हैं॥
पर विमलनाथ प्रभु ने, तन तज चेतन पाया।
सो अर्घ्य चढ़ा हमने, निज चेतन चमकाया॥१३॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री विमलनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

संसार अनंत रहा, जिसमें हैं पाप अनन्त।
इन सबको तज तुमने, पाया चैतन्य अनन्त॥

सो अनन्तनाथ स्वामी, हमको भी करो अनन्त।
हम अर्घ्य चढ़ायें तुम, महकादो आत्म बसन्त॥१४॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री अनन्तनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

बस एक धर्म ही हो, लेकिन बहु-मत होते।
यह तथ्य समझकर ही, संसार विगत होते॥
प्रभु धर्म धारकर ये, निज आत्म धर्म पाये।
सो अर्घ्य चढ़ा हम भी, तुम सम बनने आये॥१५॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

संसार शांति खोजे, पर कहाँ मिली शांति।
जब दर्श किया प्रभु का, तो तनिक मिली शांति।
हे शांतिनाथ स्वामी, अपने सम शांति भरो।
हम अर्घ्य चढ़ायें तुम, भक्तों की अशांति हरो॥१६॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

सब द्रव्य पदार्थों में, बस जीव मुख्य होता।
उस पर करुणा करके, निज आत्म सौख्य होता॥
वह कुन्थुप्रभु पाये, जिसकी अपनी इच्छा।
सो अर्घ्य चढ़ायें हम, तुम दे देना दीक्षा॥१७॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

नभ मंडल के जैसे, अरनाथ असीमित हैं।
गुणगान करें कैसे, क्योंकि शब्द तो सीमित हैं॥
फिर भी अंतिम क्षण तक, गुणगान न छोड़ेंगे।
यह अर्घ्य चढ़ा हम भी, सिद्धों तक दौड़ेंगे॥१८॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री अरनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

संसार जीतने को, हर व्यक्ति चाह रहा।
पर आत्म विजय करना, जिन सेवक माँग रहा॥

सो मल्लिनाथ अपना, तुम भक्त बना लेना।
हम अर्घ्य चढ़ायें तुम, शुद्धात्म दान देना॥१९॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

हो भले जन्म छोटा, पर रहे सु-व्रती का।
सागर जैसा जीवन, व्रत बिना रहा तीखा॥
सो सुव्रतनाथ हमें, अपने सुव्रत दे दो।
हम अर्घ्य चढ़ायें तुम, चरणों की रज दे दो॥२०॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

जिसके मन में रहते, नमिनाथ चिदानंदी।
वह ऋद्धि-सिद्धि पाके, बनता परमानंदी॥
सो भक्तों के मन में, अपना डेरा डालो।
हम अर्घ्य चढ़ायें तुम, चैतन्य सजा डालो॥२१॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री नमिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

दुख जीवों के सुनकर, संसार-भोग छोड़े।
सो करुणानिधि तुमको, जग रोज हाथ जोड़े॥
हे नेमिनाथ तुम सम, हम अपना व्याह रचें।
यह अर्घ्य चढ़ा हम भी, तुम सम गिरनार चढ़ें॥२२॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

जय किया कमठ का मठ, उपसर्ग सहन करके।
सो अंदर बाहर के, रिपु झुके नमन करके॥
दो वही वज्र पौरुष, जो पारस मणि कर दे।
हम अर्घ्य चढ़ायें तू, कुछ ध्यान इधर कर दे॥२३॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

जो पर से सुलझ गये, वे बाजी मार गये।
जो निज में उलझ गये, वे भव से पार गये॥

वे महावीर हो तुम, प्रभु पूज्य वीतरागी।
यह अर्घ्य चढ़ा तुमसे, जिन संपत्ती माँगी॥२४॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री महावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

पूर्णार्घ्य

प्रभु हाथ पकड़ लो तुम, है जगत भीड़ भारी।
हम खो न कहीं जायें, ये तेरी जबाबदारी॥
यह चौबीसों प्रभु से, नित रही प्रार्थना है।
हम अर्घ्य बनें तुम सम, बस यही भावना है॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं.....।

अर्घ्यावली—३

(विष्णु)

हाथ हमारे सिर पर रखकर, कहो तथास्तु हो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥

महापद्म पहले तीर्थंकर, आगामी कल में।
भाविकाल में यों होंगे ज्यों, पद्म खिले जल में॥
शुद्धातम का पद्म खिलायें, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥१॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री महापद्म जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

नाम आयु से जो सुर बनते, उन्हें कौन पूजें।
उन देवों के देव बनें जो, उन्हें विश्व पूजें॥
चिच्चेतन सुरदेव बनें हम, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥२॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री सुरदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

तन भी सुंदर मन भी सुंदर, सुंदर सूरत तो।
शुद्ध बुद्ध खलु चिच्चदेव की, सुंदर मूरत हो॥

सुपार्श्व प्रभु सम हम बन जायें, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥३॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

पूज्य बनेंगे स्वयं स्वयंप्रभ, प्रभुता को पाने।
अनन्तशक्ति सम्पन्न बनेंगे, अखण्डता पाने॥
अतुल पराक्रमधारी हम हों, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥४॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री स्वयंप्रभनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

परमातम प्रभु जिनके अपने, रोम-रोम में हैं।
भूतनाथ सर्वात्मभूत वो, जिनवर अपने हैं॥
रोम-रोम में प्रभु वस जायें, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥५॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री सर्वात्मभूतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

देव तथा देवाधिदेव के, पुत्र नहीं होते।
देवपुत्र देवाधिदेव बन, देव पूज्य होते॥
देवपुत्र सम पुत्र बनें हम, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥६॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री देवपुत्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

संत बनो या संत समागम, कर कुल शुद्ध बने।
जिन कुल के यदि पुत्र बने तो, आतम शुद्ध बने॥
जिनकुल के कुलपुत्र बनें हम, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥७॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री कुलपुत्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

मोक्ष प्राप्ति को अतिशय ऊँचे, उठते ही जाना।
कर्म बन्ध हर लोक शिखर पर, जाकर वस जाना॥

निज उपलब्धि हो उदंक प्रभु, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥८॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री उदंकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

जिनके अधर मधुर सुंदर हों, सरस्वती सुत हों।
प्रोष्ठिल प्रभु सम विद्यागुरुवर, जग में पूजित हों॥
अनुपम सुंदर चेतन पायें, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥९॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री प्रोष्ठिलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

विजय दूसरों पर करते तो, जग-विजयी बनते।
आत्म शत्रुओं के विजयी को, जयकीर्ति कहते॥
जयकीर्तिसम कीर्ति पायें, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥१०॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री जयकीर्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

हमको सुव्रत सुव्रत प्रभु दें, यही भावना है।
अपने सब व्रत सुव्रत हों बस, यही प्रार्थना है॥
हम भी मुनिसुव्रत बन जायें, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥११॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

जैसे गहरे किसी कूप का, मीठा जल होवे।
ऐसे अर प्रभु निज में डूबे, तो विधि मल धोवें॥
अप्तम जैसे हम मल धोवें, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥१२॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री अरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

पाप छोड़ निष्पाप बनेंगे, ऐसा चिंतन हो।
पुण्यवान निष्पापनाथ सम, तो निज आतम हो॥

पाप-पुण्य से रहित बनें हम, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥१३॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री निष्पापनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

आतम को कसकर दु ख दे जो, वह कषाय होती।
निष्कषाय प्रभु जैसे बनकर, क्या आतम रोती?
निष्कषाय हों बन्ध हटें सब, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥१४॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री निष्कषायनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

अतुलनीय अध्यात्म संपदा, कौन पार पावे।
विपुलनाथ सम जो प्रकटाये, वही पार पावे॥
विपुल लक्ष्मी निज धन हम पायें, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥१५॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री विपुलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

भक्त और भगवान् का रिश्ता, कीच कमल जैसा।
आतम परमातम का नाता, मोक्ष महल जैसा॥
निर्मल प्रभु से नाता अब हो, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥१६॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री निर्मलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

देख-देख तस्वीर आपकी, हम तस्वीर हुये।
ऐसे हैं प्रभु चित्रगुप्त जी, चेतन तीर्थ छुये॥
चित्तमुक्त हों चित्रगुप्त-सम, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥१७॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री चित्रगुप्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

जीवनभर जो किये साधना, शंखनाद जैसे।
और अंत में किये समाधि, हुये गुप्त ऐसे॥

हम भी बनें समाधिगुप्त-सम, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥१८॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री समाधिगुप्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

खुद ही छैनी खुद ही पत्थर, खुद हि हथौड़े हो।
अपनी मूरत स्वयं बनाकर, बनें स्वयंभू हो॥
अपनी मूरत स्वयं बनायें, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥१९॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर तीर्थंकर श्री स्वयंभूनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

कर्मों के अनुरूप सभी के, खुद परिणाम हुये।
अनिवर्तक प्रभु कर्म नशा के, आतमरूप छुये॥
प्रभु सम आतमराम छुयें हम, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥२०॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री अनिवर्तकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

'ज' से 'य' मिल बने शब्द जय, जय का क्या आशय।
'ज' से जन्म नशे 'य' से यम, जय-जिनेन्द्र की जय॥
जीत हार बिन बनें सफल हम, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥२१॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री जयनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

अपनी आतम दर्पण जैसी, जिसमें सब झलके।
वही विमलप्रभु पायेंगे सा, वन्दन पल-पल के॥
हम अर्हन्त दशा वह पायें, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥२२॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

कर पुरुषार्थ अहिंसा रूपी, जीवों को पालें।
देवपूज्य प्रभु देवपाल हैं, उनके गुण गालें॥

देवपाल-सम आज्ञा पालें, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥२३॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री देवपाल जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

अनन्त गुण पर्याय द्रव्य में, आतम मुखिया हो।
प्राप्त अनन्त ज्ञान दर्शन हो, तो फिर सुखिया हो॥
हम दुखिया हों अनन्त सुखिया, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥२४॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(पूर्णार्घ्य)

नर-तन से पापों का नर्तन, करके नरक गये।
फिर भव-भव में नर्तन करके, अनगिन कष्ट सहे॥
रोते-रोते सोते-सोते, काल अनन्त गया।
नर-तन सार्थक कर ना पाये, घर परिवार मिला॥

जिसको हम परिवार समझते, वही रुलाते हैं।
जिसको हम संतान समझते, वही जलाते हैं॥
सुख में अपने साथ रहें सब, दुख में मुख मोड़ें।
अपने-अपने खुद को कहकर, दिल अपना तोड़ें॥

धोखों अपनों सपनों को हम, अपना ना मानें।
हमें न मानो हम तो तुमको, अपना ही मानें॥
आप हमें भी प्रभु अपना लें, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं....।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

जम्बूद्वीप में भरत के, तीन काल के ईश।
जयमाला के पूर्व हम, जिन्हें झुकायें शीश॥

(सवैया)

कालचक्र का धर्मचक्र का, नित्य निरंतर हुआ प्रसार।
इसलिए तो ढाई द्वीप में, तीर्थंकरों का हुआ विहार॥
जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में, तीन काल में प्रभु चौबीस।
भले सामने मिले नहीं पर, मिलता रहता है आशीष॥१॥

जिनमें भूतकाल के जिनवर, पा ही चुके मोक्ष का धाम।
जिन चरणों में भक्तों का, बार बार बार प्रणाम॥
जो निर्वाणनाथ से लेकर शांतनाथ तक जिनवर है।
वृषभनाथ से महावीर तक वर्तमान के प्रभुवर हैं॥२॥

महापद्म से अनंतवीर्य तक, भविकाल में तीर्थंकर।
हुए बहत्तर तीन काल के, भक्तों के प्राणों के घर॥
चिदानंद चैतन्य धाम हैं, मोक्षमार्ग के नायक हैं।
निश्चय व्यवहारी उपदेशक, निज ध्याता सब ज्ञायक हैं॥३॥

तीन काल के सारे जिनवर, कृपा कीजिए भक्तों पर।
कब देखोगे कब से बैठे, भक्त आपकी चौखट पर॥
जब तक आप न देखोगे प्रभु, तब तक मुक्ति न देखेगी।
आप जरा सा करा इशारा, मुक्ति तो घुटने टेकेगी॥४॥

(सोरठा)

प्रभु सर्वोच्च महान, है द्रव्यों वा तत्त्वों में।
चित्त चैतन्य मुकाम, किया नमोस्तु सो भक्त ने॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें तीस चौबीसियाँ, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दें, हम पूजत भगवान॥

(शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुखों को मेंट दो, चौबीसी जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

(हरिगीतिका)

तीर्थंकरों के चक्र से जो, तीस चौबीसी भजे।
वो दूर दुःख दारिद्र करने, पुण्य धन अर्जन करे॥
पा गुरु कृपा 'सुव्रत' धरे, अध्यात्म की विद्या चखे।
आशीष दो कि विधान करके, हम नमोस्तु कर सके॥

(इत्याशीर्वादः)

२. जम्बूद्वीप संबंधी ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक पूजन

स्थापना

(दोहा)

दुनियाँ में सर्वोच्च है, तीर्थंकर के ठाठ।
जिनको नमोस्तु कर करें, भक्ति अर्चना पाठ॥

(वीर-आल्हा)

जम्बूद्वीप के ऐरावत के, तीन काल के प्रभु चौबीस।
विश्वशान्ति की धार बहायें, कहलाते शुद्धातम आधीश॥
घोर करें अध्यात्म साधना, चिदानंद का दे आशीष।
मन मंदिर में आन विराजो, भक्त पुकारे हो नत शीश॥

(दोहा)

विश्वशान्ति की धार से, धोकर कर्म कठोर।
आत्मशान्ति हम पा सकें, हो नमोस्तु चहुँ ओर॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक तीर्थंकर अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ...। अत्र मम् सन्निहितो...। (पुष्पांजलिं...)

(चौपाई)

जन्म जरा मृत्यु हमें सताते, स्वस्थ न चेतन को कर पाते।
स्वस्थ चेतना हमें दिला दो, चौबीसी की धार बहा दो॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक तीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

पर भावों से अपनी आतम, तपे जले पाये दुख आतम।
चेतन प्रभु की छाया पाने, चंदन लाये भक्त चढ़ाने॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक तीर्थंकरेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनं...।

पाप पुण्य जग के सब अक्षय, मिले आप सम हमको भी जय।
बिखरा चेतन महल सजाने, पुण्य मिले सब पुंज चढ़ाने॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपाद प्राप्तये अक्षतान्...।

खुद सहके पीड़ा शूलों सी, राह जगत को दी फूलों सी।
ब्रह्मचर्य निज का प्रगटाने, भक्त चहकते पुष्प चढ़ाने॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक तीर्थंकरेभ्यो कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं...।

भूख प्यास के दुख जो जीते, बिन भोजन के वर्षों बीते।
जिन वचनामृत कब चख पाए, अतः आज नैवेद्य चढ़ाये॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक तीर्थंकरेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

जिनवर ने जिसको अपनाया, उसे मुक्ति ने गले लगाया।
मिले मुक्ति का दर्शन हमको, करें समर्पित दीपक तुमको॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक तीर्थंकरेभ्यो मोहान्कार विनाशनाय दीपं...।

धीरे-धीरे कर्म पीसते, लेकिन जिनवर कर्म पीसते।
हम भी कर्म पीसना चाहें, अतः धूप खे निज महकाये॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

फल की इच्छा सब जन करते, निस्पृह भाव जिनेश्वर धरते।
अतः मोक्ष फल जिनवर पाये, फल अर्पित कर हम वह चाहें॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

धन त्यागा फिर अर्घ्य बनाया, अर्हन्तों के चरण चढ़ाया।
पद अरहंत पाये निज वस्तु, अतः करें हम आज नमोस्तु॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

परसों में वर्षों गये, कल-कल में बहुकाल।
अतः सँभाले आज हम, हो नमोस्तु जयमाला॥

(सवैया)

जम्बूद्वीप के ऐरावत की, तीनों चौबीसी के नाम।
जप कर जिसने गुण गाये, उसके बनते सारे काम॥
फिर भक्तों ने पूजन करके, यथाशक्ति गाया गुणगाान।
काम बने या नहीं बने पर, टूट ना पाये यह श्रद्धान॥१॥

भूतकाल के पंचरूप से, पूज्य वीर प्रभु तीर्थंकर।
वर्तमान के बालचंद से, वीरसेन तक श्री जिनवर॥
आगामी सिद्धार्थनाथ से, अग्निदत्त तक क्षेमंकर।
तीनकाल के प्रभु बहत्तर, भक्तों के हैं मुक्ति घर॥२॥

जम्बूद्वीप के ऐरावत के, ये प्यारे से तीर्थंकर।
दूर भले ही हम से हैं सो, कर न सके दर्शन पल भर॥
इससे पूजन पाठ रचाकर, गुण गाने को हृदय हुआ।
फिर अरहंत सिद्ध बनने को, आत्म भाव का उदय हुआ॥३॥

प्रभु से केवल यही प्रार्थना, हममें अपनी गंध भरो।
दीप बने हम ज्योति बनो तुम, राग-द्वेष कुछ मंद करो॥
जीवन की वीणा में केवल, प्रभु झंकार तुम्हारी हो।
'सुव्रत' आतम से परमातम, मूरत मात्र तुम्हारी हो॥४॥

(सोरठा)

दूर करो हर आह, राह मिले यह चाह हो।
होना नहीं तवाह, श्री जिन धर्म प्रवाह हो॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें तीस चौबीसियाँ, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दें, हम पूजत भगवान॥

(शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुखों को मेंट दो, चौबीसी जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

अर्घ्यावली–४

पंचरूप जी पूज्य जिनेश्वर नाथ हैं।
पंचमगति में शोभित सुन्दर आप हैं॥
पंच परावर्तन की पीड़ा हम हरें।
अतः आपको रोज नमोस्तु हम करें॥१॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री पंचरूप नाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

लेन देन भूधर विषधर से क्या हमें।
जिनधर नाथ पूज के बनना जिन हमें॥
भोग लालसा भाव विकारी हम हरें।
अतः आपको रोज नमोस्तु हम करें॥२॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री जिनधरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

परम पूज्य सांप्रतिक नाथ जिन देव हैं।
जिन अनुचर बनते देवों के देव हैं॥
अनुचर बनने कष्ट चराचर हम हरें।
अतः आपको रोज नमोस्तु हम करें॥३॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री सांप्रतिकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

अंदर बाहर की उर्जा जो पा सकें।
उर्जयन्त जिन नाथ उन्हीं को भा सकें॥
अन्दर बाहर की कमजोरी हम हरें।
अतः आपको रोज नमोस्तु हम करें॥४॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री उर्जयन्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

लोग आँधियों और व्याधियों से दुखी।
आधिक्षायिकनाथ उन्हें हर हैं सुखी॥
आधि व्याधि और उपाधि हम हरें।
अतः आपको रोज नमोस्तु हम करें॥५॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री आधिक्षायिकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

दुनियाँ का अभिनन्दन हमको भान दे।
अभिनन्दन प्रभु का अभिनन्दन, ज्ञान दे॥
अपना पर का आक्रन्दन अब हम हरें।
अतः आपको रोज नमोस्तु हम करें॥६॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पुद्गल के रत्नों में दुनियाँ हैं फसीं।
रत्नसेन प्रभु की कुन्दन सी निज बसी॥
पुद्गल रत्नों की आसक्ति, हम हरें।
अतः आपको रोज नमोस्तु हम करें॥७॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री रत्नसेननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

राम नाम की रटना कब से हो रही।
रामेश्वर जिन जाप पाप को धो रही॥
रामेश्वर जिन भाव विरोधी हम हरें।
अतः आपको रोज नमोस्तु हम करें॥८॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री रामेश्वरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

काम कामिनी की आकुलता हैं यहाँ।
अनंग उज्झितनाथ विजेता सम कहाँ॥
आकुलता व्याकुलता कामी हम हरें।
अतः आपको रोज नमोस्तु हम करें॥९॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री अनंगोझितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

यहाँ वहाँ जगवासी व्याकुल दौड़ते।
निज में थिर विन्यास नाथ सब छोड़ते॥
दौड़ भाग दुनियादारी की हम हरें।
अतः आपको रोज नमोस्तु हम करें॥१०॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री विन्यासनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

शेष न जिनको जग में कुछ भी कर्म हैं।
वे प्रभु अशेष नाथ हमारे धर्म हैं॥
छेह भोग जग विषय कर्म सब हम हरें।
अतः आपको रोज नमोस्तु हम करें॥११॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री अशेषनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

विधान यूँ संविधान जो मोड़ दे।
निज नाता सुविधिनाथ से जोड़ ले॥
विधान के उपसर्ग विघ्न सब, हम हरें।
अतः आपको रोज नमोस्तु हम करें॥१२॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री सुविधिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

बदले की इच्छा से प्राणी दान दें।
जिनवर सुदत्त नाथ दान कल्याण दें॥
मूर्च्छा तृष्णा लोभ परिग्रह हम हरें।
अतः आपको रोज नमोस्तु हम करें॥१३॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री प्रदत्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

बालकवत् है रूप साधु चारित्र है।
तभी पूज्य श्री कुमारनाथ प्रभु मित्र हैं॥
बाल ज्ञान तप बाल मरण को हम करें।
अतः आपको रोज नमोस्तु हम करें॥१४॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री कुमारनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

कर्म शैल के कारण निज में मैल हैं।
श्री सर्वशैल नाथ मोक्ष की गैल हैं॥
निज दर्शन हो कर्म शैल सो हम हरें।
अतः आपको रोज नमोस्तु हम करें॥१५॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री सर्वशैलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

आत्म निरंजन अंजन भंजन में फसें।
पूज्य प्रभंजन नाथ चेतना में बसें॥
बनें निरंजन अंजन भंजन हम हरें।
अतः आपको रोज नमोस्तु हम करें॥१६॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री प्रभंजननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

अहो भाग्य सौभाग्य भाग्य भी जो दिये।
उन्हीं पूज्य सौभाग्य नाथ को हम जियें॥
मिले भाग्य दुर्भाग्य लेख को हम हरें।
अतः आपको रोज नमोस्तु हम करें॥१७॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री सौभाग्यनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

इन्दु बिन्दु की जगत सिन्धु में धार हैं।
तट पाने व्रत बिन्दु नाथ पतवार हैं॥
व्रत नैया से भव की भवरें हम हरें।
अतः आपको रोज नमोस्तु हम करें॥१८॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री व्रतविंदुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जग ने जग के सिद्ध कार्य सब कर लिए।
किन्तु सिद्धकर नाथ सिद्ध निज को किये॥
आत्म प्रशंसा जगत् सिद्धि को हम हरें।
अतः आपको रोज नमोस्तु हम करें॥१९॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री सिद्धकरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

षट् कायों में जग जीवन उलझा लिया।
इनको ज्ञानशरीर नाथ ने तज दिया॥
ज्ञानशरीरी बनने तन मल हम हरें।
अतः आपको रोज नमोस्तु हम करें॥२०॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री ज्ञानशरीरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

कामधेनु या कल्पवृक्ष में क्या रखा?
पूज्य कल्पद्रुमनाथ हमारे हैं सखा।
अशोक तरू से शोक कष्ट अब हम हरें।
अतः आपको रोज नमोस्तु हम करें॥२१॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री कल्पद्रुमनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

कर्मों के फल भोग रहे संसार हैं।
तीर्थ फलेश नाथ जी भव पार हैं॥
सभी शुभाशुभ कर्म फलों को हम हरें।
अतः आपको रोज नमोस्तु हम करें॥२२॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री तीर्थफलेशनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

दिन में सूर्य, रात में तारे चांद हैं।
भक्त ज्योति अपने तो दिनकर नाथ हैं॥
ज्ञान तत्त्व से रोशनी निज को हम करें।
अतः आपको रोज नमोस्तु हम करें॥२३॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री दिनकरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

बाह्य विजेता मंगल अपना घातते।
किन्तु वीरप्रभ नाथ विजेता आत्म के॥
अंतर बाहर भाव अमंगल हम हरें।
अतः आपको रोज नमोस्तु हम करें॥२४॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री वीरप्रभनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

समय अगर प्रतिकूल आपका हो चुका।
हो संसार विरोधी जिससे मन दुखा॥
उससे दुखी न होकर जप लें आपको।
अर्घ्य चढ़ाए हम तुमको, तुम आत्म दो॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्योः अर्घ्यं...।.

अर्घ्यावली–५

(हाकलिका १४ मात्रिक)

बाल चन्द्र का मुखड़ा, बालचन्द्र प्रभु का टुकड़ा।
निज टुकड़ा कर लो हमको, सादर नमोस्तु है तुमको॥१॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमान तीर्थंकर श्री बालचन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

कुव्रत अव्रत दशा हरें, सुव्रत सबकी व्यथा हरें।
सुव्रत सुव्रत दो हमको, सादर नमोस्तु है तुमको॥२॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमान तीर्थंकर श्री सुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जगत् अग्नि सुख दुख देती, ध्यान अग्नि सा क्या देती।
अग्नि सेन वह दो हमको, सादर नमोस्तु है तुमको॥३॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमान तीर्थंकर श्री अग्निसेननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

नंदि बैल सा क्यों बनना, नंदिसेन प्रभु ज्यों बनना॥
दो अर्हंत दशा हमको, सादर नमोस्तु है तुमको॥४॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमान तीर्थंकर श्री नंदिसेननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जग सब दें पर दुख भी दें, प्रभु श्रीदत्त सदा सुख दें।
वह प्रभु दान करो हमको, सादर नमोस्तु है तुमको॥५॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमान तीर्थंकर श्री दत्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

कुछ ना कुछ सब धार रहे, पर प्रभु व्रत धर सार रहे।
तत्त्व सार प्रभु दो हमको, सादर नमोस्तु है तुमको॥६॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमान तीर्थंकर श्री व्रतधरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

नभ का चंदा सुन्दर है, पर निज का निज अंदर है।
सोमचन्द्र वह दो हमको, सादर नमोस्तु है तुमको॥७॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमान तीर्थंकर श्री सोमचन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

प्रभु धृतदीर्घनाथ प्यारे, सबसे बड़ा धैर्य धारे।
आत्म धैर्य प्रभु दो हमको, सादर नमोस्तु है तुमको॥८॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमान तीर्थंकर श्री धृतदीर्घनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पल्योपम सागर से क्या ?, शतायुष्य प्रभु से जो पा।
मिले आयु प्रभु सम हमको, सादर नमोस्तु है तुमको॥९॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमान तीर्थंकर श्री शतायुष्यनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जगत वास पटकें दुख में, विवसितनाथ रहें निज में।
निज निवास प्रभु दो हमको, सादर नमोस्तु है तुमको॥१०॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमान तीर्थंकर श्री विवसितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्रेयोनाथ विघ्न हर्त्ता, विश्व शान्ति मंगल कर्त्ता।
मिले शान्ति मंगल कर्त्ता, सादर नमोस्तु है तुमको॥११॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमान तीर्थंकर श्री श्रेयोनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हरे मैल जल बाहर के, विश्रुतजल प्रभु अंतर के।
निज उज्ज्वल दो हमको, सादर नमोस्तु है तुमको॥१२॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमान तीर्थंकर श्री विश्रुतजलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

लगे सिंह से सबको भय, सिंहसेन से हुई विजय॥
मिले मुक्ति भय से हमको, सादर नमोस्तु है तुमको॥१३॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमान तीर्थंकर श्री सिंहसेननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

तत्त्व भूल के कारण हम, कर न सके हैं पाप शमन॥
प्रभु उपषान्त करो हमको, सादर नमोस्तु है तुमको॥१४॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमान तीर्थंकर श्री उपशांतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

दिखें विश्व के सब शासन, किन्तु गुप्त निज का शासन।
मिलें गुप्त शासन हमको, सादर नमोस्तु है तुमको॥१५॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमान तीर्थंकर श्री गुप्तशासननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

अनन्त पाप भरा जग में, अनन्त वीर्य भरा निज में।
अनन्तवीर्य मिलें हमको, सादर नमोस्तु है तुमको॥१६॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमान तीर्थंकर श्री अनन्तवीर्यनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

बाहर सब सुन्दर चाहें, किन्तु आत्म ना चमकायें।
मिलें पार्श्व सुन्दर हमको, सादर नमोस्तु है तुमको॥१७॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमान तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हरो भ्रान्ति जन वाणी की, मिले शान्ति जिनवाणी की।
दो अभिधान नाथ हमको, सादर नमोस्तु है तुमको॥१८॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमान तीर्थंकर श्री अभिधाननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

आत्म तत्त्व की हवा चले, परम पूज्य गुरुदेव भले।
गुरु सम बनना हमको, सादर नमोस्तु हो तुमको॥१९॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमान तीर्थंकर श्री मरूदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जड़ तत्त्वों में सब उलझे, श्रीधर प्रभु इनसे सुलझे।
श्रीधरनाथ मिलें हमको, सादर नमोस्तु है तुमको॥२०॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमान तीर्थंकर श्री श्रीधरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

तरह तरह के कंठ यहाँ, शाम कंठ सम कौन यहाँ।
निज संगीत मिले हमको, सादर नमोस्तु है तुमको॥२१।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमान तीर्थंकर श्री शामकंठनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जिनकी चमक अग्नि सम हो, प्रकटा दें जो आतम को।
मिलें अग्नि प्रभ जिन हमको, सादर नमोस्तु है तुमको॥२२॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमान तीर्थंकर श्री अग्निप्रभनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पंच तत्त्व को अग्नि नहीं, मिलें आत्म को अग्नि सही।
अग्निदत्त प्रभु दो हमको, सादर नमोस्तु है तुमको॥२३॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमान तीर्थंकर श्री अग्निदत्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जगत विजेता बलवीरा, वीरसेन प्रभु निज हीरा।
आत्मवीर बनना हमको, सादर नमोस्तु है तुमको॥२४॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमान तीर्थंकर श्री वीरसेननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

(पूर्णार्घ्य)

राग रहित निज मैत्री को, अर्घ समर्पित मूर्ति को।
निज रूपी बनना हमको, सादर नमोस्तु है तुमको॥२५॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।.

अर्घ्यावली—६

(चौपाई)

श्री सिद्धार्थ नाथ जी अपने, पूर्ण करें भक्तों के सपने।
तुम सम सिद्ध अर्थ कर पायें, सो नमोस्तु कर शीश झुकाएँ॥१॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री सिद्धार्थनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

विमलनाथ ऐरावत वाले,भविष्य में प्रभु बनने वाले।
अपने जैसा हमें बनायें, सो नमोस्तु कर शीश झुकाएँ॥२॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जोश होश अब शोष कहीं हैं, अतः हुए जयघोष नहीं हैं।
यही प्रभु जयघोष बताएँ, सो नमोस्तु कर शीश झुकाएँ॥३॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री जयघोषनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कौन नन्दि को जग में पूजे, लेकिन नंदिसेन जग पूजे।
निजानंदि प्रभु सम बन जायें, सो नमोस्तु कर शीश झुकाएँ॥४॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री नंदिसेननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

स्वर्गों से सुन्दर प्रभु आतम, सपनों से प्यारे परमातम।
वही स्वर्ग मंगल कहलायें, सो नमोस्तु कर शीश झुकाएँ॥५॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री स्वर्गमंगलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कर्म वज्र सम हर पायेंगें, वज्राधारी कहलायेंगे।
वहीं वज्र पौरुष हम पायें, सो नमोस्तु कर शीश झुकाएँ॥६॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री वज्राधारीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जग निर्वाह सिखा भटकाता, यह निर्माण हमें न भाता।
प्रभु निर्वाण हमें अपनायें, सो नमोस्तु कर शीश झुकाएँ॥७॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री निर्वाणनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

शरण कर्मध्वज की ना चाहें, चरण धर्म ध्वज प्रभु के चाहें॥
मानो प्रभु हम तुम्हें मनायें, सो नमोस्तु कर शीश झुकाएँ॥८॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री धर्मध्वजनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सिद्ध हस्त हमको ना बनना, सिद्धसेन प्रभु जैसा बनना।
भक्त सिद्ध शुद्धात्म ध्यायें, सो नमोस्तु कर शीश झुकाएँ॥९॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री सिद्धसेननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

महा महा इस जग में क्या है?, शुद्धातम सा कौन यहाँ है।
महासेन प्रभु वह दिलवायें, सो नमोस्तु कर शीश झुकाएँ॥१०॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री महासेननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

परम पूज्य रविमित्रनाथ जी, दर्शन दें चारित्र साथ भी।
आत्म मित्रता हमें दिलायें, सो नमोस्तु कर शीश झुकाएँ॥११॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री रविमित्रनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

भव संसार असत्य सेन हैं, किन्तु आप प्रभु सत्यसेन हैं।
हमें सत्य की खोज करायें, सो नमोस्तु कर शीश झुकाएँ॥१२॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री सत्यसेननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चन्द दिनों के जग के मेले,चन्द्रनाथ सो तजें झमेले।
हम चैतन्य आप सम ध्यायें,सो नमोस्तु कर शीश झुकाएँ॥१३॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री चंद्रनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

बच्चे चाहें गगन चन्द्र को, भक्त चाहते महीचन्द्र को।
इच्छा पूरण आप करायें, सो नमोस्तु कर शीश झुकाएँ॥१४॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री महीचन्द्रनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

अंजन से शरीर सज जाते, किन्तु श्रुतांजन आत्म सजाते।
प्रभु श्रुतांजन हम सब ध्यायें, सो नमोस्तु कर शीश झुकाएँ॥१५॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री श्रुतांजननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

देवों के जो देव कहाते, देवसेन जिननाथ सुहाते।
अपने सम निज देव दिलायें, सो नमोस्तु कर शीश झुकाएँ॥१६॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री देवसेननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सुव्रत जैसा कौन यहाँ है?, सुव्रत बिन कल्याण कहाँ हैं?
हम सुव्रत धर सुव्रत पायें, सो नमोस्तु कर शीश झुकाएँ॥१७॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री सुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

बने दिगम्बर निज रस पीते, सकल विषय इन्द्री के जीते।
तुम्हें जिनेन्द्र नाथ हम ध्यायें, सो नमोस्तु कर शीश झुकाएँ॥१८॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री जिनेन्द्रनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

इस दुनिया में सबसे सुन्दर, अपने जिन आतम का मन्दिर।
यों सुपार्श्व प्रभु सम बन जायें, सो नमोस्तु कर शीश झुकाएँ॥१९॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जगत कला कौशल भ्रम भर दे, धर्म कला चेतन का घर दे।
वही सुकौशल नाथ दिलायें, सो नमोस्तु कर शीश झुकाएँ॥२०॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री सुकौशलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

अनन्त भव तो अनन्त दुख दें, अनन्त नाथ हमें निज सुख दें।
अनन्त सुख कुन्दन सा पायें, सो नमोस्तु कर शीश झुकाएँ॥२१॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तन मैले का मैला रहता, पर चैतन्य अकेला रहता।
वही विमल प्रभु सम हम पायें, सो नमोस्तु कर शीश झुकाएँ॥२२॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

यह संसार कुण्ड विष का है, ऐसा चिन्तन ही जिसका है।
वह अमृत प्रभु सम रस पायें, सो नमोस्तु कर शीश झुकाएँ॥२३॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री अमृतसेननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

अग्नि तत्त्व का अन्त जहाँ हो, धर्म तत्त्व का अन्त वहाँ हो।
अग्निदत्त प्रभु वही दिलाएँ, सो नमोस्तु कर शीश झुकाएँ॥२४॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री अग्निदत्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

सब तीर्थों के पुण्य जहाँ हैं, हम आकर के धन्य वहाँ हैं।
उन सम तीर्थंकर पद पायें, सो नमोस्तु कर शीश झुकाएँ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्योः अर्घ्यं...।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

जम्बूद्वीप त्रय काल के, ऐरावत के नाथ।
जिनकी गुण गण मालिका, हम कहते नत माथ॥

(ज्ञानोदय)

तीन काल के जम्बूद्वीप के, ऐरावत के तीर्थंकर।
कर्म भूत के भूत भगाकर, मोक्ष पधारे सब तजकर॥
जिनके दर्शन भले मिले ना, लेकिन नाम अकेले ही।
मंगल मय हों मंगलकर्त्ता, अपने हरें झमेले भी॥१॥

मोक्ष प्राप्त करने के पहले, ये सब तीर्थंकर प्यारे।
ऐसा क्या कर दिया इन्होंने, जिसमें हों बारे बारे॥
मात्र समय का सदुपयोग कर, आतम का उत्थान किया।
समय रूप आतम प्रकटाकर, अपना महा प्रयाण किया॥२॥

किन्तु जिन्होंने इन्तजार कर, सही समय चाहा पाना।
सही समय तो मिला न उनको, अंत रहा बस पछताना॥
क्योंकि समय रेत सा फिसले, या नदिया सा बह जाए।
गोली बोली सा ना लौटे, पक्षी जैसा उड़ जाये॥३॥

अतः बात है समय समय की, समय मात्र देता सबको।
किन्तु समय कुछ भी ना करता, करना पड़ता है हमको॥
ये सिद्धान्त कहे जैनागम, काल लब्धि की भाषा में।
अतः समय मत खोओ प्यारे, समयसार परिभाषा में॥४॥

भूतकाल का जन्म मोह है, भाविकाल का लोभ रहा।
किन्तु आज में जीना भैया, शुद्धात्म का योग रहा॥
अच्छा समय समझ सभी अच्छी, पुण्यवान ही पाते हैं।
अगर समय पर समझ नहीं तो, पापी रुदन मचाते हैं॥५॥

जिनने जीवन में बोला कल, कितने टल गये कल उनके।
जो जन कहते रहते परसों, बीत गये बरसों उनके॥
आज कहें जो राज करें वो, महाराज जिनराज बने।
आतम का साम्राज्य प्राप्त कर, मुक्ति वधू सरताज बने॥६॥

अतः भूत के भगवन् भजके, रोना धोना छोड़ो तो।
और भविष्य के भगवान जप के, प्रभू से नाता जोड़ो तो॥
तब ही आज भक्त पर भगवन्, अपना समय लुटायेंगे।
'सुव्रत' को अपनी दौलत दें, अर्हत् सिद्ध बनायेंगे॥७॥

(सोरठा)

होगा महा भविष्य, भूत भूत का छोड़िये।
बनकर सांचे शिष्य, निज से नाता जोड़िये॥

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्योः जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें तीस चौबीसियाँ, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दें, हम पूजत भगवान॥

(शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुखों को मेंट दो, चौबीसी जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

(हरीगीतिका)

तीर्थंकरों के चक्र में जो, तीस चौबीसी भजें।
वो दूर दुख दारिद्र करने, पुण्य धन अर्जन करें॥
पा गुरु कृपा 'सुव्रत' धरें, अध्यात्म की विद्या चखें।
आशीष दो कि विधान करके हम नमोस्तु कर सकें॥

(इत्याशीर्वाद)

पूर्व धातकी खण्ड संबंधी भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चौबीसी पूजन स्थापना

(दोहा)

सिद्धों की श्रेणी जिन्हें, खुली मोक्ष के धाम।
त्रय चौबीसी को करें बारम्बार प्रणाम॥

(ज्ञानोदय)

पूर्व धातकी महा खण्ड में, भरत क्षेत्र सर्वोत्तम है।
पूज्य वहाँ त्रय चौबीसी है, मोक्ष रूप परमोत्तम है॥
उनकी पूजा करने हमने, मन पंछी को उड़ा दिया।
तन की दूरी होने पर भी, श्रद्धा ने सिर झुका दिया॥

(दोहा)

मिले जिनातम संपदा, अतः करें आह्वान।
आओ मन के आँगने, तीर्थंकर भगवान॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकी संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकराः अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ...। अत्र मम् सन्निहितो...।(पुष्पांजलिं...)

(बसन्ततिलका)

जो जन्म मृत्यु भव के दुख को नशाते।
चैतन्य धाम निज का निज को दिलाते॥
सो नीर से हम हरें दुख जन्म मृत्यु।
जिन अर्चना हम करें करके नमोस्तु॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकी संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं...।

संसार ताप तप के जलता जलाता।
अध्यात्म छांव हमको न कभी दिलाता॥
हो ताप का हरण चंदन सा बना तू।
जिन अर्चना हम करें करके नमोस्तु॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकी संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्...।

पीछे सदा जगत तो हमको ढकेले।
कोई न साथ रहते गुरु न चेले॥
हैं भेंट अक्षत मिले बस आत्म वस्तु।
जिन अर्चना हम करें करके नमोस्तु॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकी संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान्...।

आसक्त हैं भ्रमर पुष्प समूह पै ज्यों।
हों भक्त भी परम देव समूह पै त्यों॥
तो आत्म के रमण की मिल जाए वस्तु।
जिन अर्चना हम करें करके नमोस्तु॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकी संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

भोगे न भोग निज के पर के ही भोगे।
तो भक्त स्वस्थ निज में किस भाँति होंगे॥
सो ब्रह्म के रमण का रसपान दे तू।
जिन अर्चना हम करें करके नमोस्तु॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकी संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम्...।

संसार में जड़ दिखे दिखता न आतम।
हो आत्म का दरश सो भजते जिनातम॥
ये आरती हम करें जिनदीप दे तू।
जिन अर्चना हम करें करके नमोस्तु॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकी संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपम्...।

होते न दग्ध फलते नित फूलते हैं।
ये कर्म केवल हमें नित लूटते हैं॥
शुद्धात्म की शरण को को अब राह दे तू।
जिन अर्चना हम करें करके नमोस्तु॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकी संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म विनाशनाय धूपं...।

काटें वही फसल जो हम बीज बोते।
संसार की फसल से कब मुक्त होते॥
सो मोक्ष की फसल के अब बीज दे तू।
जिन अर्चना हम करें करके नमोस्तु॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकी संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

जो अर्चना नमन वन्दन अर्थ में है।
जो ज्ञान ध्यान तप तीरथ क्षेत्र में हैं॥
जो आत्म शान्ति निज में वो शान्ति दे तू।
जिन अर्चना हम करें करके नमोस्तु॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकी संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

पूर्व धातकी भरत के, तीन काल के ईश।
जिनशासन की शान को, आज नवायें शीश॥

(सवैया)

जय जय श्री तीर्थंकर जिनवर, जिनशासन की होते शान।
धर्मचक्र के परम प्रभावक, भक्तों के प्यारे भगवान॥
परम्परा यह रही अनाहत, अनादि काल से आयी चैन।
अनंतकाल यह जायेगी, जिन आगम से जाने जैन॥१॥

जिसमें ढाई द्वीप में होते, तीन काल के प्रभु तीर्थेश।
पूर्व धातकी खण्ड भरत में, कहलाते हैं जो धर्मेश॥
भूतकाल के रत्न प्रभु से, परमपूज्य त्रिजेतृक नाथ।
वर्तमान के युगादिदेव से, अन्तिम हैं श्री नायक नाथ॥२॥

आगामी सिद्धार्थ नाथ से, शाश्वतनाथ रहे परमार्थ।
तीन काल के नाथ बहत्तर, भक्त पूजते हरने स्वार्थ॥
नाथ आपने स्वार्थ हरण कर, आत्म सुन्दरी से कर ब्याह।
निज चैतन्य भोग को भोगो, जिसकी हम भक्तों को चाहा॥३॥

स्वार्थ भरी इस दुनिया में हम, तेरा मेरा खेल करें।
तीर्थंकर सम होंगे यदि हम, तेरा मेरा त्याग करें॥
ऐसे भाव सँजोकर हम भी, शीघ्र मोक्ष को जायेंगे।
अतः आज हम भाव भक्ति से, पूजन पाठ रचायेंगे॥४॥

जब तक स्वार्थ रहेगा तब तक, जुड़ा रहा जग आतम में।
स्वार्थ गया परमार्थ सजा ज्यों, भक्त रमेगा आतम में॥
अरिहन्तों से यही प्रार्थना, दो परमार्थ स्वार्थ हरके।
'सुव्रत' भी तुम सम बन जायें, तुम्हें नमोस्तु कर करके॥५॥

(सोरठा)

पायें हम परमार्थ, अतः रचायी अर्चना।
तजें आप सम स्वार्थ, मात्र यही है प्रार्थना॥

(दोहा)

करें तीस चौबीसियाँ, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दें, हम पूजत भगवान॥

(शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुखों को मेंट दो, चौबीसों जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

अर्घ्यावली–७

हीरा मोती जड़ रत्नों को त्याग चुके हैं।
वही वीतरागी मुद्रा को धार चुके हैं॥
पूज्य रत्नप्रभ नाथ वही हैं आतम ज्योति।
पल पल जिन्हें नमोस्तु करके शान्ति होती॥१॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री रत्नप्रभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

माँ बाबुल जग बंधन जिनको रोक सके ना।
सागर पर्वत नभ तारे भी बाँध सके ना॥
वही पूज्य हैं अमितनाथ जी आतम मूर्ति।
पल पल जिन्हें नमोस्तु करके शान्ति होती॥२॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री अमितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पुद्गल का संसार जिन्होंने शमित किया है।
चेतन का विस्तार जिन्होंने उदित किया है॥
हम भी संभव प्रभ सम पायें समकित ज्योति।
पल पल जिन्हें नमोस्तु करके शान्ति होती॥३॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तरह तरह के कलंक निज को करते गंदा।
श्री अकलंकनाथ ने पायी निज की गंगा॥
हम भी उन सम पायें निज के उज्ज्वल मोती।
पल पल जिन्हें नमोस्तु करके शान्ति होती॥४॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री अकलंकनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कोई घर के कोई जग के स्वामी होते।
लेकिन निज के स्वामी जग में दुर्लभ होते॥
हम भी चन्द्र स्वामी सम पायें निज की ज्योति।
पल पल जिन्हें नमोस्तु करके शान्ति होती॥५॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री चंद्रस्वामिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

संसारी शुभ लाभ अकेला चाह रहे हैं।
शुभ व्यय के अर्पण में लापरवाह रहे हैं॥
किन्तु शुभंकर नाथ कराये द्वय की दोस्ती।
पल पल जिन्हें नमोस्तु करके शान्ति होती॥६॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री शुंभकरनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पंच तत्त्व के मकड़जाल में जग उलझा है।
सात तत्त्व में आत्म तत्त्व से जग सुलझा है॥
परम पूज्य श्री तत्त्वनाथ जी शान्ति होती।
पल पल जिन्हें नमोस्तु करके शान्ति होती॥७॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री तत्त्वनाथनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

अपनी अपनी वस्तु सब ही माने सुन्दर।
पर इस जग में सबसे सुन्दर पूर्ण दिगम्बर॥
जिसके मुखिया सुन्दर स्वामी चेतन मोती।
पल पल जिन्हें नमोस्तु करके शान्ति होती॥८॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री सुन्दरस्वामिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सबसे ऊँचा पर्वत जिससे उच्च गगन है।
इन सबसे तो उच्च दिगम्बर संत श्रमण है॥
किन्तु पुरन्धर नाथ सभी से ऊँची मूर्ति।
पल पल जिन्हें नमोस्तु करके शान्ति होती॥९॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री पुरंधरनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

स्वामी के भी स्वामी स्वामी देव हमारे।
रत्नत्रय की नैया देकर जगत उबारे॥
हमें बना लो दास दिला दो सम्यक ज्योति।
पल पल जिन्हें नमोस्तु करके शान्ति होती॥१०॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री स्वामिदेवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

संसारी जीवों में सबसे देव उच्च हैं।
देवों के भी देव हमारे देवदत्त हैं॥
जिनकी पूजा चारों गति का चक्कर खोती।
पल पल जिन्हें नमोस्तु करके शान्ति होती॥११॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री देवदत्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

इन्द्रों के भी इन्द्र अर्चना जिनकी करते।
हिंसक प्राणी भी चरणों में माथा धरते॥
वो हैं वासवदत्त नाथ दें जिनगुण मोती।
पल पल जिन्हें नमोस्तु करके शान्ति होती॥१२॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री वासवदत्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

क्या विघ्नों के भय से जीवन जिया न जाये।
श्रेयोपथ पर चलकर निज रस पिया न जाये॥
श्रेयोनाथ विघ्न हर्त्ता दो निज रस घुट्टी।
पल पल जिन्हें नमोस्तु करके शान्ति होती॥१३॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री श्रेयोनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

एक अकेला आतम जिसमें सब कुछ झलका।
विश्व रूप जड़ वैभव जिसका मित्र न पलका॥
विश्व रूप प्रभु साथ रहें ये इच्छा होती।
पल पल जिन्हें नमोस्तु करके शान्ति होती॥१४॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री विश्वरूपनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जब तक आगम आग रहेगी इस काया में।
तब तक भागम भाग रहेगी जग माया में॥
तपस्तेज प्रभु की अर्चन भव यात्रा खोती।
पल पल जिन्हें नमोस्तु करके शान्ति होती॥१५॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री तपस्तेजोनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जड़ की लक्ष्मी का हर कोई ज्ञान दिलाते।
निज का श्री पति बोध देव प्रभु भान कराते॥
हम भी प्रभु सम निज धन पायें दो वह पोथी।
पल पल जिन्हें नमोस्तु करके शान्ति होती॥१६॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री श्रीपतिबोधदेवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

परम पूज्य सिद्धार्थ नाथ प्रभु तीरथ साँचे।
जिन दर्शन से भक्त मोर तो खुश हो नाँचे॥
कृपा मिले तो भव्य जीव की सिद्धि होती।
पल पल जिन्हें नमोस्तु करके शान्ति होती॥१७॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री सिद्धार्थदेवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

संयम बिन इस विदित विश्व का काम चले ना।
कुछ भी कर लो फिर भी मुक्ति धाम मिले ना॥
अतः अर्चना संयम प्रभु की संयम देती।
पल पल जिन्हें नमोस्तु करके शान्ति होती॥१८॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री संयमनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तन मैले का मैला है कितना भी धोलो।
चित्त शुद्धि को विमलनाथ की जय जय बोलो॥
कृपा करो प्रभु हम भी पायें निर्मल ज्योति।
पल पल जिन्हें नमोस्तु करके शान्ति होती॥१९॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

देवों के भी इन्द्र जिन्हें सिर टेक रहे हैं।
करें दया वो हम पर यों हम सोच रहे हैं॥
हे देवेन्द्र नाथ दो हमको सद्गुण मोती।
पल पल जिन्हें नमोस्तु करके शान्ति होती॥२०॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री देवेन्द्रनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्रेष्ठों में जो श्रेष्ठ ज्येष्ठ हैं ज्येष्ठों से भी।
पूज्यों में भी पूज्य इष्ट हैं इष्टों से भी॥
परम पूज्य वो प्रवरनाथ जी धर्म की ज्योति।
पल पल जिन्हें नमोस्तु करके शान्ति होती॥२१॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री मेघनंदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सब तत्त्वों के सब द्रव्यों के सार यहीं हैं।
विश्वसेन प्रभु के जैसा दरबार नहीं हैं॥
उपकारी दरबारी को दो निज सम ज्योति।
पल पल जिन्हें नमोस्तु करके शान्ति होती॥२२॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री विश्वसेननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जीवन में या पूजन में जल बहुत जरूरी।
किन्तु ज्ञान के जल बिन यात्रा कभी न पूरी॥
मेघनंदि प्रभु वही ज्ञान के दे दो मोती।
पल पल जिन्हें नमोस्तु करके शान्ति होती॥२३॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री मेघनंदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

द्रव्य भाव नो कर्म जिनहोंने मार भगाये।
वही त्रिजेतृकनाथ दयालु नाथ कहाये॥
धर्मालु श्रद्धालु को दो, ध्यान की ज्योति।
पल पल जिन्हें नमोस्तु करके शान्ति होती॥२४॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री त्रिजेतृकनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

भूत बहुत सुन्दर भविष्य भी, होगा।
अगर सँभाला आज पूर्ण हर, सपना होगा॥
अतः आज हम पायें तुम सम, अखण्ड ज्योति।
पल पल जिन्हें नमोस्तु करके शान्ति होती॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्योः पूर्णार्घ्यं...।

अर्घ्यावली–८

(जोगीरासा)

धर्म कर्म कब से इस जग में, पता नहीं चल पाये।
लेकिन लुप्त धर्म की ज्योति, जो आकर जलवाये॥
तो हैं युगादिदेव हमारे, निज रसिया उपकारी।
मन वच तन से तुम्हें नमोस्तु, ऋद्धि सिद्धि दातारी॥१॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री युगादिदेवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।.

सिद्धान्तों का सार न जाने, ये संसारी प्राणी।
अतः सुनाते दिव्य देशना, निज पर की कल्याणी॥
ऐसे श्री सिद्धान्त नाथ जी, आतम के अधिकारी।
मन वच तन से तुम्हें नमोस्तु, ऋद्धि सिद्धि दातारी॥२॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री सिद्धान्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

सब जीवों में मनुष्य उत्तम, ऐसा सब जन बोलें।
अगर समझ ले यह मनुष्य तो, यहाँ वहाँ क्यों डोलें॥
ईश न वो प्रभु महेश बनता, निज चैतन्य विहारी।
मन वच तन से तुम्हें नमोस्तु, ऋद्धि सिद्धि दातारी॥३॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री महेशनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

स्वार्थ सिद्धि संसार चाहता, आत्म सिद्धि हम चाहें।
अतः व्यर्थ ना अर्थ निकालें, दूर करें सब आहें॥
सो हमने परमार्थ नाथ की, निज में राह निहारी।
मन वच तन से तुम्हें नमोस्तु, ऋद्धि सिद्धि दातारी॥४॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री परमार्थनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पर भावों को धर धर आतम, अधोगमन कर जाता।
निज भावों को सम्यक् धरकर, उर्ध्वगमन कर पाता॥

अतः समुद्धर नाथ दिलायें, आत्म भाव हितकारी।
मन वच तन से तुम्हें नमोस्तु, ऋद्धि सिद्धि दातारी॥५॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री समुद्धरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

भूधर जैसे व्रत संयम में, दृढ़ संकल्प धरें जो।
वह बनकर भूधर स्वामी सा, काया कल्प करे वो॥
हम भी भूधरनाथ आप सम, हों उपसर्ग निवारी।
मन वच तन से तुम्हें नमोस्तु, ऋद्धि सिद्धि दातारी॥६॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री भूधरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

काया की उद्योत बढ़ाने, फँसते जग माया में।
फिर भी काया चमक न पाये, पहुँचे दुख छाया में॥
हमें करो उद्योतनाथ जी, निज सम ब्रह्म विहारी।
मन वच तन से तुम्हें नमोस्तु, ऋद्धि सिद्धि दातारी॥७॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री उद्योतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जटिल कुटिल लोगों से दुनियाँ, होगी कभी न खाली।
सरल बनो तो जग छूटेगा, होगी नित्य दिवाली॥
हे आर्जव प्रभु! निज सम हमको, करो सरल अविकारी।
मन वच तन से तुम्हें नमोस्तु, ऋद्धि सिद्धि दातारी॥८॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री आर्जवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

सात तरह के भय से दुनियाँ, डाँवाडोल हो जीती।
अभयनाथ की भक्त मण्डली, सारे भय को जीती॥
नाथ! आप सम अभय बनें हम, निर्भय दृढ़ आचारी।
मन वच तन से तुम्हें नमोस्तु, ऋद्धि सिद्धि दातारी॥९॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री अभयनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

उपसर्गों के आँधी तूफाँ, कितने भी आ जायें।
लेकिन मुक्ति वधू के प्रेमी, तनिक नहीं घबरायें॥

हम प्रभु अप्रकंपनाथ जैसी, पायें मोक्ष सवारी।
मन वच तन से तुम्हें नमोस्तु, ऋद्धि सिद्धि दातारी॥१०॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री अप्रकंपनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

सरोंवरों की सुन्दरतायें, कमलों से बढ़ जायें।
पद्म प्रभु से भक्त कमल भी, सुन्दर रूप रचायें॥
हे प्रभु निज सम हमें बना लो, आतम के शृंगारी।
मन वच तन से तुम्हें नमोस्तु, ऋद्धि सिद्धि दातारी॥११॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री पद्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

कीचड़ में तो भले रहें पर, कमल सूर्य को ताके।
सो निर्लिप्त रहें कीचड़ से, मुक्ति तभी तो झांके॥
पद्मनंदि प्रभु को हम ताकें, बन के चरण पुजारी।
मन वच तन से तुम्हें नमोस्तु, ऋद्धि सिद्धि दातारी॥१२॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री पद्मनंदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जिसको जो अच्छा लगता है, वो वह पाना चाहें।
जिसको जो हितकर होता है, वो प्रभु देना चाहें॥
हमें प्रियंकर प्रभु दो अच्छा, जो निज को सुखकारी।
मन वच तन से तुम्हें नमोस्तु, ऋद्धि सिद्धि दातारी॥१३॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री प्रियंकरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

बार बार संसार प्राप्त कर, चक्र न मिटने पाता।
किन्तु मोक्ष तो एक बार में, सारे चक्र मिटाता॥
सुकृतनाथ हमें अपना के, हर लो मारामारी।
मन वच तन से तुम्हें नमोस्तु, ऋद्धि सिद्धि दातारी॥१४॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री सुकृतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

सुन्दर हों या नहीं रहे पर, भद्र शीघ्र बन जायें।
भद्रनाथ से यही प्रार्थना, सांचे भक्त लगायें॥

आतम सबसे सुन्दर जग में, दो कल्याणककारी।
मन वच तन से तुम्हें नमोस्तु, ऋद्धि सिद्धि दातारी॥१५॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री भद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

गगन चन्द्र से जड़ रत्नों की, अमृत वर्षा होती।
लेकिन श्री मुनिचन्द्रनाथ तो, बरसाते जिन मोती॥
जिन मोती पाने हम सबने, झोली आज पसारी।
मन वच तन से तुम्हें नमोस्तु, ऋद्धि सिद्धि दातारी॥१६॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री मुनिचन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पंच अंक के इस दुनियाँ में, खेल बड़े अलबेले।
इन्हें जीतते पंचमुष्टि प्रभु, और दिगम्बर चेले॥
पंचमुष्टि केशलोंच के हम, बनें उत्तराधिकारी।
मन वच तन से तुम्हें नमोस्तु, ऋद्धि सिद्धि दातारी॥१७॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री पंचमुष्टिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जगत भीड़ से यदि बचना तो, जिनशासन अपना लो।
फिर निज आतम त्रिमुष्टि प्रभु सम, जग के शीश बसा लो॥
हमें छुपा लो निज छाया में, भीड़ जगत में भारी।
मन वच तन से तुम्हें नमोस्तु, ऋद्धि सिद्धि दातारी॥१८॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री त्रिमुष्टिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

गंगा जल जो लेता देता, वो गांगिक तन धोते।
पर गांगिक प्रभु जिन गंगा से, चेतन उज्ज्वल होते॥
पियें पिलायें खूब नहायें, दो चेतन उजयारी।
मन वच तन से तुम्हें नमोस्तु, ऋद्धि सिद्धि दातारी॥१९॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री गांगिकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जिन गणेश जी गणपति गणधर, गणनायक गण देवा।
इनके प्रभु गणनाथ आपकी, हमें मिले बस सेवा॥

बदलें में कुछ देना हो तो, दे दो शरण तुम्हारी।
मन वच तन से तुम्हें नमोस्तु, ऋद्धि सिद्धि दातारी॥२०॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री गणनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

ज्ञानादिक अनन्त गुण निज के, हर प्रदेश में होते।
प्रकट किये होते तो हम भी, अनन्त भव क्यों रोते॥
हम सर्वांगदेव सम बनने, माँगे कृपा तुम्हारी।
मन वच तन से तुम्हें नमोस्तु, ऋद्धि सिद्धि दातारी॥२१॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री सर्वांगदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

देव इन्द्र अहमिन्द्र सभी तो, जिनके चरण पखारें।
ऐसे प्रभु ब्रह्मेन्द्र नाथ जी, लोकालोक निहारें॥
प्रभु सा ब्रह्म रमण हो अपना, इच्छा यही हमारी।
मन वच तन से तुम्हें नमोस्तु, ऋद्धि सिद्धि दातारी॥२२॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री ब्रह्मेन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

नरेन्द्र इन्द्र अहमिन्द्र सभी पद, जिन की भक्ति दिलाती।
और कहें क्या जिन्हें देखकर, मुक्ति वधू शर्माती॥
ऐसे इन्द्रदत्त प्रभु हमको, दो जिन दीक्षा प्यारी।
मन वच तन से तुम्हें नमोस्तु, ऋद्धि सिद्धि दातारी॥२३॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री इन्द्रदत्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

खलनायक नायक लायक भी, नायक प्रभु को पाके।
बनें मूलनायक विधिनायक, पूजन पाठ रचा के॥
भक्ति रचा हम फर्ज निभाते, अब तो तेरी बारी।
मन वच तन से तुम्हें नमोस्तु, ऋद्धि सिद्धि दातारी॥२४॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री नायकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

परिग्रह से विचार दूषित हों, विचार से संस्कार हों।
संस्कार से आचार दूषित, आचारों से विवेक हों॥
दूषण सत्यानाश करे सो, सुन लो बात हमारी।
मन वच तन से तुम्हें नमोस्तु, ऋद्धि सिद्धि दातारी॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्योः पूर्णार्घ्यं...।

अर्घ्यावली—९

(विष्णु छन्द)

सकल प्रयोजन सिद्ध किये जो, जगत मार्ग छोड़ें।
आत्म प्रयोजन प्राप्त हुआ तो, भगत हाथ जोड़ें॥
ऐसे भी सिद्धार्थ नाथ जी, हमें सिद्ध कर दें।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आप कृपा कर दें॥१॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री सिद्धार्थनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

दर्शन ज्ञान चरित ये तीनों, जब मिथ्या होते।
तो संसार भ्रमण करवाते, जिससे सब रोते॥
सो सम्यक् गुण नाथ हमें भी, सम्यक् गुण दे दें।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आप कृपा कर दें॥२॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री सम्यग्गुणनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जगत जीतना बहुत सरल है, मनजय सरल नहीं।
मन जय बनते आत्म विजेता, अपना महल यहीं॥
श्री श्री जिनेन्द्र देवनाथ जी, मन जय को बल दें।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आप कृपा कर दें॥३॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री जिनेन्द्रदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पुण्य पाप पर गुणों सहित ये, जग सम्पन्न रहें।
निज गुण से सम्पन्न हुए वो, प्रभु सम्पन्न रहें॥

श्री सम्पन्ननाथ जी हमको, अपना वैभव दें।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आप कृपा कर दें॥४॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री संपन्ननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जिसने तन पर राज किया, वो राज न कर पाया।
करें दिलों पर राज वही तो, राग न कर पाया॥
वो बनते प्रभु सर्वस्वामी जी, हमें मुक्ति दे दे।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आप कृपा कर दें॥५॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री सर्वस्वामिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

नाथ अनाथों के मुनिजन हैं, मुनियों के गणधर।
गणधर के मुनिनाथ जिनेश्वर, निज में आत्मेश्वर॥
ऐसे प्रभु मुनिनाथ हमें भी, अपनी छाया दें।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आप कृपा कर दें॥६॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री मुनिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

शिष्य बने जो शिष्ट बने तो, हो भविष्य उज्ज्वल।
वो ही बनते विशिष्ट जिनवर, आज नहीं तो कल॥
प्रभु विशिष्ट आशीष शिष्य को, हे स्वामी दे दें।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आप कृपा कर दें॥७॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री विशिष्टदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

अमर नाम के अमर देव भी, जग में मर जाते।
किन्तु आत्म को प्राप्त करें जो, कभी न मर पाते॥
अमरतत्त्व दे अमरनाथ प्रभु, हमें अमर कर दें।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आप कृपा कर दें॥८॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री अमरनाथनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

विश्व शान्ति तो बाहर खोजे, लेकिन मिली नहीं।
अतः तजो ब्रह्माणु काण्ड तो, पाओ शान्ति यही॥

शान्ति प्रदाता ब्रह्मशान्ति प्रभु, ब्रह्म शान्ति कर दें।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आप कृपा कर दें॥९॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री ब्रह्मशान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

सर्व पर्व में बड़ा पर्व है, कृपा पिता माँ की।
गुरु कृपा फिर चरण, फिर शरण आतमा की॥
दिवस दशहरा रात दीवाली, पर्वनाथ दे दें।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आप कृपा कर दें॥१०॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री पर्वनाथनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

कामुक जन को इस दुनियाँ में, कौन पूजता है।
किन्तु अकामुक प्रभु को पा जग, पूर्ण पूजता है॥
बनें अकामुक प्रभु जैसे, हम काम विजय कर लें।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आप कृपा कर दें॥११॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री अकामुकदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

आर्त ध्यान से रौद्र ध्यान से, ये संसार चले।
धर्मध्यान से शुक्ल ध्यान से, भव संताप टले॥
ध्याननाथ निज सम हम सबको, आत्म ध्यान फल दें।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आप कृपा कर दें॥१२॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री ध्याननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

भले अल्प ही जीवन हो पर, हों संकल्प भले।
तो श्री कल्पनाथ प्रभु जैसे, कायाकल्प मिले॥
काया कल्प करें हम तुम सम, यही भक्ति फल दें।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आप कृपा कर दें॥१३॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री श्रीकल्पनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

संवर करके करें स्वयंवर, मुक्ति वधू वरने।
इससे हम भी आ धमके हैं, जिन पूजन करने॥

जिन पूजन जड़ क्रिया रही ये, संवर भ्रम हर दें।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आप कृपा कर दें॥१४॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री संवरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

तन के रोग स्वस्थ करने को, शुद्ध करो भोजन।
चेतन रोग स्वस्थ करने को, प्रभु का करो भजन॥
स्वस्थ नाथ सम स्वस्थ बनें हम, आत्म स्वस्थ कर दें।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आप कृपा कर दें॥१५॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री स्वास्थ्यनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जिसे मिले आनन्द जहाँ पर, वहीं वहीं जाए।
हमें मिले आनन्द यहाँ पर, अतः यहाँ आए॥
निजानन्द आनन्द नाथ सम, पाने भक्ति करें।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आप कृपा कर दें॥१६॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री आनन्दनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

रवि किरणों से सब प्रसन्न पर, उल्लू को दुख हो।
लेकिन रविप्रभ जिनवर पाकर, भक्तों को सुख हो॥
उल्लू जैसा अंध हरण कर, ज्ञानोदय कर दें।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आप कृपा कर दें॥१७॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री रविप्रभनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

प्रभु का मुखड़ा चाँद का टुकड़ा, सब कहते ऐसा।
लेकिन चांद आपका टुकड़ा, हम कहते ऐसा॥
चन्द्रप्रभ अपने सम हमको, आतम चंदा दें।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आप कृपा कर दें॥१८॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

निजानन्द आनन्द नन्द जो, चिदानन्द चाहें।
वो प्रभु सुनन्द नाथ देव की चुन लेते राहें॥

सुखानन्द स्वानन्द प्राप्ति को विषयानन्द तजें।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आप कृपा कर दें॥१९॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री सुनन्दनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

मिलें कर्ण जिन वचन सुनें, तो सार्थक हो जाते।
प्रवचन सुन के शिव पथ,चुन के शुद्धातम ध्याते॥
प्रभु जी सुकर्णनाथ देव सम सार्थक कर्ण करें।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आप कृपा कर दें॥२०॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री सुकर्णदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

कुकर्म करके जगत दुखी हों, फिर क्यों नहीं तजें।
अगर करें सुकर्म दुनिया तो, अरहंत रूप सजें॥
सुकर्म प्रभु सम कर्म करे फिर सभी कर्म तज दें।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आप कृपा कर दें॥२१॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री सुकर्मदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हम न किसी के कुछ न हमारा यही मन्त्र साचें।
अहंकार ममकार त्याग के आत्म पंथ नाचें॥
इसी पंथ से अममदेव सम हम विभाव तज दें।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आप कृपा कर दें॥२२॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री अममदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

किया आज तक जो हमने वो साँचा धर्म नहीं।
मुख्य गौण कर गौण मुख्य कर नाँशे कर्म नहीं॥
पार्श्वनाथ सम आत्म समझ ले, कर्म गौण कर दें।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आप कृपा कर दें॥२३॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पुण्य पाप भी मोह मोक्ष भी शाश्वत सदा रहें।
लेकिन शाश्वत आत्म पाने शाश्वत नाथ कहें॥

पाप पुण्य फिर मोह मिटे फिर शाश्वत सिद्ध बने।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आप कृपा कर दें॥ २४॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री शाश्वतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

जब तक मोक्ष मिले न तब तक, हम अच्छा कर लें।
कोई बुरा कहे या अच्छा, पथ सच्चा चल लें॥
चौबीसों प्रभु ऐसा साहस, बस हम में भर दें।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आप कृपा कर दें॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्योः पूर्णार्घ्यं...।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

कल से आके आज में, चलना कल की ओर।
सो गुण गाके आज हम, होते भाव विभोर॥

(ज्ञानोदय)

जिन का हार परिवार जगत है, वे तो उन्हें संभाल रहे।
ईंट और चूने पत्थर से, रँग रोगन कर ढाल रहे॥
जिस में अल्प समय ही रहना, उसका इतना ध्यान रखें।
पालन पोषण करें उसी का, उसका ही गुणगान करें॥१॥

फिर भी उससे दुख दुख पाते, सुख का जिसमें लेश नहीं।
उसका योजन फिर संयोजन, उत्तम यह संदेश नहीं॥
किन्तु आपने आत्म भँवर को, पाने का समभाव किया।
जिससे तीर्थंकर बनने का, आगामी निज भाव किया॥२॥

रोज सुबह से रोज शाम तक, सब दुनियाँ में श्रम करते।
रोज रात को चूर चूर हो, सारा भार वहन करते॥
फिर भी चौरासी का चक्कर, अब तब तो ना टल पाया।
तन घट में आतम का मंदिर, आज तलक ना बन पाया॥३॥

किन्तु आपका दर्शन पूजन, करके ऐसा सोचा हैं।
तीर्थंकर बन मोक्ष प्राप्ति का, सबसे सुन्दर मौका हैं॥
तीर्थंकर की प्रतिमाओं को, अतः हमें अब ध्याना है।
अब तक जो न कार्य किया वह, करके भाग्य जगाना हैं॥४॥

भाग्य हमारा निश्चित ही अब, जागेगा यह पक्का हैं।
क्योंकि आपका नाम भक्त ने, थाम लिया जो सच्चा हैं॥
सुबह हमारी शाम हमारी, नाम आपका ले होती।
फिर 'सुव्रत' के आात्मतत्त्व की, झट न जलेगी क्या ज्योति।।५॥

(सोरठा)

उज्ज्वल बने भविष्य, अगर व्यवस्थित आज हो।
तीर्थंकर के शिष्य, बनकर निज साम्राज्य हो॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्योः जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें तीस चौबीसियाँ, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दें, हम पूजत भगवान॥

(शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुखों को मेंट दो, चौबीसी जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

(हरीगीतिका)

तीर्थंकरों के चक्र में जो, तीस चौबीसी भजें।
वो दूर दुख दारिद्र करने, पुण्य धन अर्जन करें॥
पा गुरु कृपा 'सुव्रत' धरें, अध्यात्म की विद्या चखें।
आशीष दो कि विधान करके हम नमोस्तु कर सकें॥

(इत्याशीर्वाद)

पूजन-४

पूर्व धातकी संबंधी ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चौबीसी पूजन

स्थापना

(दोहा)

पूर्व धातकी खण्ड में, ऐरावत के नाथ।
तीर्थंकर त्रयकाल के, जिन्हें झुकायें माथ॥

(तूणक)

जो रहें यहाँ जिनेश, तीन काल के प्रभो।
सो नमोस्तु को सदैव, भक्त हैं झुके विभो॥
अर्चना रचाई है उन्हीं की द्रव्य भाव से।
वन्दना करें बड़े दुलार लाड़ चाव से॥
आइये प्रवेश कीजिए दु नेत्र द्वार से।
आत्म में विराजिए बुला रहे पुकार के॥
भक्त के प्रदेश सिद्ध जीव से विशुद्ध हों।
भक्त आपके जिनेश आपसे प्रसिद्ध हों॥

(दोहा)

त्रयकालिक प्रभु आइये, भक्त हृदय में रोज।
भक्ति अर्चना कर करें हम आतम की खोज॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकराः अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ...। अत्र मम् मम् सन्निहितो...। (पुष्पांजलिं...)

जन्म मृत्यु के कलंक ने किया कुरूप है।
जन्म मृत्यु तो मिटी न मिट रहा स्वरूप है॥
ये कलंक धो सकें कृपा का नीर दीजिए।
हो नमोस्तु आपको जरा तो ध्यान दीजिए॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्योः जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं...।

ज्ञान तो बढ़ा लिया नहीं निजात्म ज्ञान है।
ओह ! ये विभाव ताप आग के समान है॥

आग राग ताप नाश आत्म छाँव कीजिए।
हो नमोस्तु आपको जरा तो ध्यान दीजिए॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्योः संसार ताप विनाशनाय चन्दनं...।

जीव को दुखी करे विभाव की परिक्रमा।
भक्त को सुखी करे जिनेन्द्र की परिक्रमा॥
ये घुमाव रोक सिद्धि में विराम दीजिए।
हो नमोस्तु आपको जरा तो ध्यान दीजिए॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्योः अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान्... ।

शूल के अभाव में अमूल्य फूल हो नहीं।
सूर्य के प्रभाव से अमूल्य फूल हो सही॥
फूल तत्त्व का खिले सहस्र रश्मि दीजिए।
हो नमोस्तु आपको जरा तो ध्यान दीजिए॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्योः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं... ।

खान पान का सुधार खानदान तार दे।
खानपान का बिगाड़ खानदान मार दे॥
आत्म खानदान हेतु खानपान दीजिए।
हो नमोस्तु आपको जरा तो ध्यान दीजिए॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्योः क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं... ।

लोक तो प्रकाश मात्र रात में ही चाहता।
किन्तु भक्त तत्त्व का प्रकाश नित्य चाहता॥
आत्म तत्त्व दर्श हो प्रकाश ज्ञान दीजिए।
हो नमोस्तु आपको जरा तो ध्यान दीजिए॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्योः मोहान्धकार विनाशनाय दीपं... ।

केवली जिनेन्द्र की कथा व्यथा विनाशती।
कर्म की कठोर मार शीघ्र दूर भागती॥
दूर ना करो हमें करीब शीघ्र कीजिए।
हो नमोस्तु आपको जरा तो ध्यान दीजिए॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्योः अष्ट कर्म दहनाय धूपं... ।

बीज हैं बबूल के न आम उग पाएंगे।
भाव मोह के न मोक्ष धाम को दिलाएंगे॥
मोक्ष हेतु भक्त का सुधार आप कीजिए।
हो नमोस्तु आपको जरा तो ध्यान दीजिए॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्योः मोक्ष फल प्राप्तये फलं... ।

भाव जो करे वही स्वरूप प्राप्त हो उसे।
शुद्ध प्राप्ति के लिए जिनेश को मना सखे॥
छिन्न भिन्न आत्म तत्त्व को अनर्घ कीजिए।
हो नमोस्तु आपको जरा तो ध्यान दीजिए॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्योः अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं... ।

जयमाला

(दोहा)

नवदेवों के रूप जो, रत्नत्रय के धाम।
त्रयकालिक अरिहन्त को, बारम्बार प्रणाम॥

(ज्ञानोदय)

पूर्व धातकी ऐरावत की, तीन काल की चौबीसी।
जिनका शासन चले वहाँ पर, धर्म रूप जो है नीकी॥
भूतकाल के वज्र स्वामी से, श्री हरि चन्द्रनाथ तक है।
वर्तमान के प्रथम अपश्चिम, अंतिम नाथ विरोचन॥१॥

भावि काल के प्रवर वीर से, अंतिम नाश विरोषक हैं।
द्रव्य भाव नो कर्म नशाते, रत्नत्रय के पोषक हैं॥

पूज्य बहत्तर नाथ बिना तो, कोई भव से तर न सके।
कितना भी पुरुषार्थ साध ले, शुद्ध चेतना कर न सके॥२॥

इतना तो हम जानें समझें, दुर्लभ मानव जीवन में।
क्या खोना क्या पाना हमको, पुण्य रूप नवजीवन में॥
बिना आचरण ज्ञान अकेला, भार रहा हर जीवन में।
ज्ञान क्रिया का उचित संतुलन, उत्सव है नर जीवन में॥३॥

अतः सभी से यही प्रार्थना, धन्य बना दो नर जीवन।
भूतकाल से भाविकाल के करे कर्म का निष्कासन॥
सो जग का बूढ़ापन छूटे, खिले स्वयं का नव यौवन।
अतः भक्त की सुनो प्रार्थना, प्यारे चौबीसों भगवन॥४॥

ब्रह्मचर्य का बर्तन दे दो, अचौर्य की रस्सी दे दो।
कुआँ सत्य जल अपरिग्रह का भूमि अहिंसा की दे दो॥
'सुव्रत' विषय वासना जीते अपराधों पर अंकुश हो।
झूठ मिटे हो फलित सादगी विश्व प्रेम के श्रीफल हो॥५॥

(सोरठा)

मुँह मांगा वरदान, भुक्ति मुक्ति सब प्राप्त हों।
चौबीसों भगवान, जैसे हम भी आप्त हों॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्योः जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

अर्घ्यावली—१०

(सखी)

श्री वज्रस्वामी अरिहंता, तुम वज्र कर्म के हन्ता।
दो आत्म वज्र सम हमको, हम करें नमोस्तु तुमको॥१॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री वज्रस्वामिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हैं उदतप्रभु निज रसिया, सुख मोक्ष महल के वसिया।
दो मोक्ष महल प्रभु हमको हम करें नमोस्तु तुमको॥२॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री उदत्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

प्रभु सूर्य स्वामी जिन ज्योति, जो आत्म अंध को धोती।
दो ज्ञान सूर्य सम हमको, हम करें नमोस्तु तुमको॥३॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री सूर्यस्वामिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हैं चार लोग बस उत्तम, उनके प्रभु हैं पुरुषोत्तम।
दो उत्तम आतम हमको, हम करें नमोस्तु तुमको॥४॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री पुरूषोत्तमनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हम चार शरण बस पायें, सो शरण स्वामी को धायें।
दो आत्म शरण प्रभु हमको, हम करें नमोस्तु तुमको॥५॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री शरणस्वामिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

अवबोधनाथ सुख दाता, चिन्मय चित्रूपी ध्याता।
चैतन्य बोध दो हमको, हम करें नमोस्तु तुमको॥६॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री अवबोधनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

विक्रम प्रभु रच के श्रेणी, पायें सिद्धों की श्रेणी।
दो आत्म पराक्रम हमको, हम करें नमोस्तु तुमको॥७॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री विक्रमनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

निर्घंटिक प्रभु हैं सांचे, हम दर्शन करके नाचे।
निज घट दो निजसम हमको, हम करें नमोस्तु तुमको॥८॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री निर्घंटिकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हरियों के इन्द्र रहे जो, जिनदेव हरीन्द्र रहे वो।
जय विषय करा दें हमको, हम करें नमोस्तु तुमको॥९॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री हरीन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पर का जो इत्र न चाहें, परित्रेरित नाथ कहायें।
दो आत्म चित्र प्रभु हमको, हम करें नमोस्तु तुमको॥१०॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री परित्रेरितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

निर्वाण सूरि अरिहन्ता, पा बैठे आत्म अनन्ता।
निर्वाण दिला दो हमको, हम करें नमोस्तु तुमको॥११॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री निर्वाणसूरिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

तुम धर्म हेतु प्रभु वीरा, संसार सेतु के तीरा।
चैतन्य हेतु दो हमको, हम करें नमोस्तु तुमको॥१२॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री धर्महेतुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

तुम बहिरमुखी के त्यागी, हो अन्तरंग के रागी।
प्रभु मिले चतुर्मुख हमको, हम करें नमोस्तु तुमको॥१३॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री चतुर्मुखनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

सुकृतेन्द्र नाथ पुण्यातम, सब त्याग बने सिद्धातम।
अरिहन्त रूप दो हमको, हम करें नमोस्तु तुमको॥१४॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री सुकृतेंद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हैं श्रुताम्बुनाथ सिन्धु सम, हमको लगते सिद्धों सम।
दो सिद्ध रूप प्रभु हमको, हम करें नमोस्तु तुमको॥१५॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्रुताम्बुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हैं सूर्य चाँद तो दागी, विमलार्क नाथ बेदागी।
बेदाग आत्म दो हमको, हम करें नमोस्तु तुमको॥१६॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री विमलार्कनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हैं दिव्य देवप्रभ देवा, सब करें आपकी सेवा।
प्रभु दिव्य बना दो हमको, हम करें नमोस्तु तुमको॥१७॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री देवप्रभनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

धरणेंद्रनाथ धर्मात्मा बन बैठे, शुद्ध जिनात्मा।
प्रभु शुद्ध बना दो हमको, हम करें नमोस्तु तुमको॥१८॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री धरणेन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हैं सुतीर्थ नाथ भव तीरा, चैतन्य चमकते हीरा।
चित् तीर्थ बना दो हमको, हम करें नमोस्तु तुमको॥१९॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री सुतीर्थनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

प्रभु उदयानन्द निराले, हैं निजानन्द के प्याले।
निज भाग्योदय दो हमको, हम करें नमोस्तु तुमको॥२०॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री उदयानन्दनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

सवार्थदेव का सुमरण, भक्तों का करता सु-मरण।
वह समाधि मरण दो हमको, हम करें नमोस्तु तुमको॥२१॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री सर्वार्थदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

प्रभु धार्मिक नाथ धरम दें, आतम को मोक्ष महल दें।
द्वय मोक्ष मार्ग दो हमको, हम करें नमोस्तु तुमको॥२२॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री धार्मिकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

सब स्वामी तो पर के हैं, पर क्षेत्र स्वामी निज के हैं।
निज क्षेत्र दिला दो हमको, हम करें नमोस्तु तुमको॥२३॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री क्षेत्रस्वामिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हरिचन्द्र नाथ हर घट में, या मिलते हैं निज घट में।
दो चरण धूल अब हमको, हम करें नमोस्तु तुमको॥२४॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री हरिचन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

मान जग बहुत बुरा है, पर प्रभु का रूप खरा है।
वह ध्याता का निखरा हैं, जो पाने भक्त खड़ा है॥
जो चौबीसों प्रभु पाके, निज में निज की झलका के।
वह निज स्वरूप दो हमको, हम करें नमोस्तु तुमको॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्योः पूर्णार्घ्य...।

अर्घ्यावली–११

(सुविद्या)

सूर्य पूर्व का सदैव पूजता, पश्चिम का क्या काम।
अतः अपश्चिम नाथ आपको, बारम्बार प्रणाम॥
ज्ञानोदय का सूर्योदय हो, दिशा दिखा दो नाथ।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, सिर पर रख दो नाथ॥१॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री अपश्चिमनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

कर्मों के काँटों में आतम, उलझ रही है रोज।
पुष्पदन्त प्रभु ने सुलझा के, कर ली अपनी खोज॥
चिदानन्द की गंध खिलाने, खिले भक्ति के फूल।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, दो चरणों की धूल॥२॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री पुष्पदन्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

अर्हदेव का अर्हत् शासन, सबसे उच्च महान।
करे शुभंकर तत्त्व गर्जना, तो भागे अज्ञान॥
भक्तों के प्रदेश प्रदेश पर, कर लो स्वामी राज।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, दो निज का साम्राज्य॥३॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री अर्हदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

शुद्ध मित्र से शुद्ध चित्र हो, हरे वित्त से चित्त।
तभी बनाया चरित्रनाथ, ने मुक्ति वधू का चित्र॥

आँखें बंद करें या खोलें, झलके प्रभु का चित्र।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, हमें बना लो मित्र॥४॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री चरित्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

सारे द्वंद्व हमारे हरकर, करो मोह को मंद।
द्रव्य भाव नोकर्म हटाकर, आतम करो अबंध॥
सिद्धानन्द मिले सिद्धों को, हमको सिद्धानन्द।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, खिले भक्ति के छन्द॥५॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री सिद्धानन्दनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

अच्छा कर निन्दा मिलती तो, डरने की क्या बात।
सूर्योदय से उल्लू जैसे, निश्चित ही दुख पात॥
निदंक निकट भलें हों पर हम, नंगद प्रभु के पास।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, अपना मिले निवास॥६॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री नंगदनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पद्म भले ही खिलें कूप में, किन्तु न उस मय होय।
कर्म भरे चैतन्य रूप में, किन्तु न चिन्मय होय॥
अतः हमें प्रभू पद्मकूप सम, मिले भेद विज्ञान।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, दो अपनी पहचान॥७॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री पद्मकूपनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पापोदय तो कोई न चाहें, किन्तु न छोड़ें पाप।
पुण्योदय तो सब चाहें पर, करें पुण्य ना जाप॥
यह सिद्धान्त यदि पलटें तो, उदयनाभि हों प्राप्त।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, हो विधि उदय समाप्त॥८॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री उदयनाभिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

परम पूज्य रुकमेंदु नाथजी, रोके आस्रव द्वार।
समवसरण में हुए विराजित, हो रही जय जयकार॥

हम भी रोके पाप कर्म सब, पायें चेतन धाम।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, पाने निज निवास॥९॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री रुकमेन्दुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

आप कृपालु बड़े दयालु, हम श्रद्धालु लोग।
जिन धर्मालु बने आप सम, करें शुद्ध उपयोग॥
हटे कर्मफल कर्म चेतना, ज्ञान चेतना पाएँ।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, कृपा आपकी पाएँ॥१०॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री कृपालुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

लाल गुलाबी होठों से तो, जिन की काया धन्य।
तथा अनन्त गुणों से शोभित, प्रोष्ठिल प्रभु चैतन्य॥
हटे कुरूपी भाव आप सम, हम हों सुन्दर लाल।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, कर दो मालामाल॥११॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री प्रौष्ठिलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

चक्री नर के इन्द्र सुरों के, सबके मुनि हैं नाथ।
पर दोनों के देव आप हो, सिद्धों के भी नाथ॥
सो सिद्धेश्वर नाथ कहाँ हो, सिद्धों के भी नाथ।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, बनो हमारे नाथ॥१२॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री सिद्धेश्वरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

विष से विषधर से भी ज्यादा, जहरीला संसार।
किन्तु इसमें अमृत जैसा, मिलता प्रभु का प्यार॥
जो देते अमृतेन्दुनाथ जी, निजानुभूति का स्वाद।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, दे दो आशीर्वाद॥१३॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री अमृतेन्दुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जब तक चेतन जड़ में उलझें, तब तक रहें अनाथ।
जैसे ही जड़ से सुलझे तो, बनता स्वामी नाथ॥

जड़ चेतन की उलझन सुलझन, करें आप सम दूर।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, करिये कृपा जरूर॥१४॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री स्वामिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

एक लिंग मुनि का है दूजा, महिलाओं का होय।
फिर उत्कृष्ट श्रावकों का है, चौथा कभी न होय॥
भुवनलिंग प्रभु इनके दाता, हमको करो अलिंग।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, हर लो सभी कुलिंग॥१५॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री भुवनलिंगनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

कहीं वृषभ कहीं अश्वरथ, कहीं सिंहरथ होय।
कहीं होय गजरथ मानवरथ, जो मिथ्यामल धोएँ॥
किन्तु सर्वरथ प्रभु विद्यारथ देकर, पास बुलाएँ।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, निज की सैर कराएँ॥१६॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री सर्वरथनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

मेघनन्द की मेघनाद सम, तत्त्व गर्जना देख।
मन मयूर आनन्द मनाये, सादर घुटने टेक॥
निजानन्द स्वानन्द धार की, बरसाओ फौहार।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, निज सम दो त्यौहार॥१७॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री मेघनन्दनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

नंदिकेश प्रभु केशलोंच कर, पाये पद निर्ग्रन्थ।
आत्मध्यान में लीन हुए तो, बन बैठे अर्हंत॥
तभी दिखा चैतन्य धाम का, उत्सव चारों ओर।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आप थाम लो डोर॥१८॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री नन्दिकेशनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हरी सब्जियाँ फल खाओ, पर भूलो न हरि नाम।
जीव सब जियें यह ध्याओ तो, बन जाओ हरिनाथ॥

हरी छोड़ हरिनाथ भजें हम, हो सबका कल्याण।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, करने महा प्रयाण॥१९॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री हरिनाथनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

मिले अधिष्ठाता मत मठ के, किन्तु धर्म का कौन।
इसको कहें अधिष्ठनाथ जी, बाकी सब हैं मौन॥
अधिष्ठान अब पर का छूटे, मिले मोक्ष का स्थान।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, बनने को भगवान॥२०॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री अधिष्ठनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

नैतिक धार्मिक सामाजिक का, होता क्या उद्देश्य।
शान्तिक बनकर आत्मिक बनना, हरना सभी क्लेश॥
शान्तिक देवनाथ बस ऐसा, पूरा हो उद्देश्य।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु,दे दो सिद्धों का देश॥२१॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री शान्तिकदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

नन्दी स्वामी नाथ हमारे, परमानन्दी होंय।
पर में जो आनन्द खोजते, उनके कभी न होंय॥
नाथ हमारे तुम हो जाओ, हम भी तेरे होंय।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, तत्त्व भेद सब खोंए॥२२॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री नन्दीस्वामिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

कुन्दन जैसी उनकी आतम, पारसमणि सम देह।
इसलिए तो कुंदपार्श्व प्रभु, हमको लगें विदेह॥
पारसमणि सम मिलो हमें तुम, हम भी कुंदन होय।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, फिर तो कभी न रोंय॥२३॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री कुन्दपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जिसे हुआ संसार विरोचन, वही विरोचन नाथ।
रोशन हो यदि भक्तों पर तो, हो शोधन की बात॥

हम पर रोशन हो जाओ प्रभु, हो चेतन का शोध।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, ले लो अपनी गोद॥२४॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री विरोचननाथ अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

तुमने हमको प्यार दिया जो, उसका कुछ ना मोल।
इस जीवन में तुमसे बढ़कर, कुछ भी ना अनमोल॥
इतना प्यार दिया तो हमको, देते रहना साथ।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, सुनते रहना बात॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक श्री चतुर्विंशंति तीर्थंकरेभ्योः पूर्णार्घ्यं...।

अर्घ्यावली–१२

परम पूज्य श्री प्रवर वीर जी, नाथ हैं।
चिदानन्द की वाह! वाह!, क्या बात है॥
कर्म शत्रु पर जय पाने को, साथ दो।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आपको॥१॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री प्रवरवीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं.

विश्व विजेता भी तो आखिर, मर गए।
अमर विजयप्रभ नाथ स्वयं को, कर गये॥
आत्म विजेता बनने हमको, धैर्य दो।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आपको॥२॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री विजयप्रभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं..

जगपद देते आपद जिनसे, क्षोभ हो।
सत्पद नाथ हमें दे निज के, मोक्ष को॥
अतः आपके शुद्ध पदों का, लाभ हो।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आपको॥३॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री सत्पदनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

महा मृगेन्द्रनाथजी हमको, भा गए।
अतः उन्हीं के तत्त्व तीर्थ पर, आ गए॥
शुद्धातम का नीर पिलाने, पात्र दो।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आपको॥४॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री मृगेन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

चिन्तामणि से चिंतित वस्तु, प्राप्त हो।
पर चिन्तामणि प्रभु से चक्र, समाप्त हो॥
पाये प्रभु तो चिन्ता की क्या, बात है।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आपको॥५॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री चिन्तामणिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जो अशोक तरुतल स्थित वो, आप्त हैं।
रोग शोक जो हरते अपने, आप हैं॥
हे! अशोक प्रभु शोकाकुल को, थाम लो।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आपको॥६॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री अशोकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जय मृगेन्द्र प्रभु पूजित आप, जिनेन्द्र हो।
फिर भी आप स्वयं में राजित मग्न हो॥
हमें दीजिए वही मिला जो आपको।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आपको॥७॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री मृगेन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

बिन उपवासिक नाथ न केवलज्ञान हो।
केवलज्ञान बिना क्या निज निर्वाण हो॥
करने को उपवास अतः बल आप दो।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आपको॥८॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री उपवासिकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

मिले पद्म के साथ चन्द्र तो, क्या मिले।
पद्मचन्द्र सम आत्म चन्द्र अपना खिले॥
पद्म खिलायें अतः नशायें, पाप को।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आपको॥९॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री पद्मचन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

भटक भटक दिन रात अंध के गाँव में।
आ पहुँचें प्रभु बोधकेंदु की, छाँव में॥
बने आप सम ज्ञान किरण का बोध दो।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आपको॥१०॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री बोधकेंदुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

चिन्ता में ठण्डे होकर हम, जम गए।
चिन्ता ठण्डी चिन्ताहिम प्रभु, कर गए॥
चिंता चिता मिटे चेतन का, बाग दो।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आपको॥११॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री चिन्ताहिमनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जो जन रहें उदास उन्हें क्या प्राप्त हो।
उत्साही लोगों के मंजिल, पास हो॥
सो उत्साहिकनाथ ध्यान, उत्साह दो।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आपको॥१२॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री उत्साहिकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जिसने नाम अपाशिव स्वामी, का जपा।
उस पर कोई हो सकता है ना खफा॥
खफा न होना अतः करें हम जाप को।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आपको॥१३॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री अपाशिवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

तरह तरह के जल से तन तो, शुद्ध हो।
किन्तु देवजल प्रभु से चेतन, शुद्ध हो॥
करने चेतन शुद्ध ज्ञान जब, आप दो।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आपको॥१४॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री देवजलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

नारी तजकर भज कर नारिकनाथ को।
मुक्ति वधू मिल जाती सच्चे, भक्त को॥
सच्चे भक्त बनें हम ऐसी, जाप दो।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आपको॥१५॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री नारिकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

अनघनाथ को अरघ चढ़ा के अघ टले।
तभी आपके पथ पर चलकर, शिव मिले॥
जिन पथ पर चलने को साहस, आप दो।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आपको॥१६॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री अनघनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

नागों के भी इन्द्र जिन्हें, सिर टेकते।
जिनके आगे संकट घुटने टेकते॥
सो नागेन्द्रनाथ जी अपनी, छाँव दो।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आपको॥१७॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री नागेन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

नील रत्न को जग धरता है शीश पै।
पर नीलोत्पलनाथ उसी के शीश पै॥
नीलकमल सम चरण कमल अब, आप दो।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आपको॥१८॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री नीलोत्पलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

प्रलय काल की प्रचण्डता से जग हिले।
लेकिन अप्रकंपनाथ जी कब हिले॥
अतः हमें भी अपने सम तुम थाम लो।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आपको॥१९॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री अप्रकंपनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जो शोभित हैं उच्च शिखर पर, लोक के।
जिन्हें पुरोहित ज्ञानी पूजें, धोक दे॥
हम भी पूजें अतः पुरोहित, नाथ को।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आपको॥२०॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री पुरोहितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

छिन्न भिन्न जो किये कर्म के, जाल को।
जिनके पूजक होते माला माल हो॥
जाल हरण को पूजें भिंदकनाथ को।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आपको॥२१॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री भिंदकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पारस पत्थर लोहे को कंचन करें।
पर पारस प्रभु भक्तों को पारस करें॥
पारस बनने पूजें पारसनाथ को।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आपको॥२२॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री पारसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

मौन तोड़ निर्वाचनाथ जी बोलिए।
भक्तों की सुन पीड़ा अखियाँ, खोलिए॥
ज्ञान नयन को खुलवाने को ज्ञान दो।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आपको॥२३॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री निर्वाचनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

क्रोध त्याग आक्रोश त्याग, के आइये।
तभी विशोषिक प्रभु के दर्शन पाइये॥
जिन दर्शन दो निज दर्शन हो भक्त को।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आपको॥२४॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री विशोषिकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

अर्घ अंत में मिट्टी में मिल जाएगा।
किन्तु समर्पित होकर मुक्ति दिलाएगा॥
अतः समर्पित अर्घ नाथ चौबीस को।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, आपको॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

पूर्व धातकी खण्ड के, त्रयकालिक चौबीस।
ऐरावत के नाथ के, गुण गायें नत शीश॥

(ज्ञानोदय)

काल दोष से पुण्य कमी से, मिल पाते अर्हन्त नहीं।
कर्मोदय से पापोदय से, दिख पाते भगवन्त नहीं॥
किन्तु कृपा गुरुवर की पाकर, नाम पूजना सीख लिया।
बिम्बों की पहचान सीख ली, आगम पढ़ना सीख लिया॥१॥

क्या क्या सीखा कह न सकें हम, लेकिन क्या क्या बाकी है।
पर यह सीखा कि प्रभु जी ने, लाज हमारी सखी है॥
नाम मिले हैं बिम्ब मिले हैं, रत्नत्रय की राह मिली।
गुण गाने का पंथ मिला है, निज चैतन्य पनाह मिली॥२॥

जिन शासन में जिन प्रतिमाएँ, नमोस्तु के लायक मानी।
नाम पूज कर नाम कमा लो, ऐसा कहते मुनि ज्ञानी॥

पूर्व धातकीखण्ड न देखा, ना ऐरावत देखा है।
वहाँ विराजित कुछ ना देखा, फिर भी बस सिर टेका है॥३॥

हम चौरासी लाख योनियाँ, भूतकाल में धार चुके।
राग द्वेष की पर्यायों से, निज को बहुत बिगाड़ चुके॥
पर भावों की प्रबल आंधियाँ, भूतकाल से उड़ा रहीं।
जो निज में जिन की मुद्रा को, भूतकाल से छुपा रहीं॥४॥

लेकिन तीन काल के प्रभु को, जब हम भक्तों ने पूजा।
राग द्वेष सा मंद हुआ है, कर्मभूत का मुख सूजा॥
अब तो केवल यही प्रार्थना, कर्म काल को छोड़ सके।
शुद्ध आत्म पर्याय प्राप्तकर, निज को निज से जोड़ सकें॥

(सोरठा)

दो इतना प्रभु पुण्य, पुण्य पाप को जान लें।
आत्म तत्त्व हो धन्य, मात्र स्व-पर पहचान लें॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें तीस चौबीसियाँ, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दें, हम पूजत भगवान॥

(शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुखों को मेंट दो, चौबीसी जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

(हरीगीतिका)

तीर्थंकरों के चक्र में जो, तीस चौबीसी भजें।
वो दूर दुख दारिद्र करने, पुण्य धन अर्जन करें॥
पा गुरु कृपा 'सुव्रत' धरें, अध्यात्म की विद्या चखें।
आशीष दो कि विधान करके हम नमोस्तु कर सकें॥

इत्याशीर्वाद

पूजा-५

पश्चिम धातकी खण्ड संबंधी भरत क्षेत्रस्थ त्रिकाल चौबीसी पूजन

स्थापना

(दोहा)

आगामी नक्षत्र में, लेकर धार्मिक जन्म।
ऐरावत भू भव्य को, जिनको करना धन्य॥
उनको नमोस्तु कर हरें, दर्शन पूजन जाप।
तत्त्व सिद्धि हो आप सम, इसलिए करें स्थाप॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकराः अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ...। अत्र मम् सन्निहितो...। (पुष्पांजलिं...)

(भुजंगप्रयात्)

पुनः जन्म होना पुनः मृत्यु होना, बिना धर्म के तो पड़े खूब रोना।
न रोना पड़े भक्त को दो सहारा, करें हम नमोस्तु लिये नीर धारा॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेयो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

हुए पाप दिन रात क्या क्या बताएँ, अतः आपकी रोज पूजा रचाएँ।
मिले शांति संसार का त्याग क्रन्दन, करें हम नमोस्तु चढ़ा चारु चंदन॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेयः संसार ताप विनाशनाय चंदनं...।

यहाँ कौन रागी यहाँ, कौन साँचा, सभी ने विकल्पों भरा पत्र वाँचा।
न भूलें न भटकें हमें दो सहारा, करें हम नमोस्तु, लिये पुंज प्यारा॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेयो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

नहीं फूल बनना नहीं शूल बनना, हमें तो तुम्हारी चरण धूल बनना।
चरण धूल में हम पियें, ब्रह्म प्याला, करें हम नमोस्तु लिए पुष्प माला॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेयः कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं...।

नहीं भोग पिछले कभी याद आयें, तुम्हारी तरह आत्म के भोग पायें।
सभी स्वाद छोड़ें बनें आत्म भोगी,करें हम नमोस्तु क्षुधा नाश होगी॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेयो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

सभी सूर्य सा ओज वा तेज चाहें, नहीं सूर्य सी साधना त्याग चाहें।
करें आरती तो खिलें आत्म मोती, करें हम नमोस्तु लिये दीप ज्योति॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेयो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

यहाँ भोग आसाक्तियाँ लोग चाहें, कहो फिर कहाँ से मिलें मोक्ष राहें॥
बहारें खिलें कर्म ग्रंथी नशायें, करें हम नमोस्तु सुगंधी चढ़ायें॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेयो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

करो साधना आप तो हो प्रशंसा, बने आप से हम यही मात्र मंशा।
यही फल मिले चाहते भक्त बच्चे, करें हम नमोस्तु लिये फल के गुच्छे॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेयो मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

यहाँ देह से भिन्न डेरा नहीं हैं, कि ज्ञाता व दृष्टा बसेरा सही है।
अरूपी स्वरूपी सचेतन सजायें, करें हम नमोस्तु लिये अर्घ गायें॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेयो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

भक्ति करें निःशब्द तो, दान करे निःशेष।
अतः करें जयमालिका, हो अर्हत् सिद्धेश॥

(ज्ञानोदय)

जय हो जय हो भूतकाल के,वर्तमान के जय हो जय हो।
जय हो जय हो भाविकाल के, तीन काल के जय हो जय हो॥
तीर्थंकर ये हुए बहत्तर, पश्चिम खण्ड धातकी के।
भरत क्षेत्र के जिन तीर्थंकर, धर्मदूत हैं मुक्ति के॥१॥

भूतकाल के वृषभनाथ से, अन्तिम शिवस्वामी जिनवर।
वर्तमान के विश्व चन्द्र से, अन्तिम एकार्जित जिनवर॥
भाविकाल के रक्तकेश से, अन्तिम श्री सत्विक जिनवर।
इन सब ही अर्हन्त जिनों के, दर्शन मिलें नहीं पलभर॥२॥

सो आकुल व्याकुल हम होकर, नाम बिम्ब को खोज रहे।
भक्ति अर्चना के साधन से, तीर्थंकर को पूज रहे॥
सर्व शक्तिमय सर्व गुणी हो, स्वातम निधि सम्पन्न रहे।
शक्ति प्रदाता शिवसुख दाता, निज रस लीन प्रसन्न रहे॥३॥

ऐसी शक्ति नहीं हैं हममें, दर्शन या सान्निध्य मिले।
अतः भक्ति से पुण्य बढ़ाकर, आतम सिद्ध प्रसिद्ध मिले॥
सबसे पहले व्रती जनों का, प्यारा सा परिवार मिले।
फिर मुनि आर्यायों का हमको, साथ संग परिवार मिले॥४।

फिर कीचड़ में कमल सरीखा, तीर्थंकर परिवार मिले।
फिर चैतन्य विलासी वैभव सिद्धों का परिवार मिले॥
किन्तु अभी हम दुष्कर्मों से पीड़ित होकर कष्ट सहें।
अगर आप ही नहीं सुनो तो, किससे अपनी व्यथा कहें॥५॥

अर्हन्तों सिद्धों के जब तक, लाभ न हों परिवारों का।
तब तक ऐसी कृपा करो, प्रभु ध्यान रखें घर वालों का॥
जिससे धर्म बीज के अंकुर, करे अंकुरित हम सब को।
यह परिवार व्यवस्थित होगा, जो दे प्रभु परिवारों को॥६॥

अब तक जो परिवार मिला वह, पल्योपम या सागर का।
यात्रा रुकी ना तीर मिला है, अब तक तो भवसागर का,॥
ठहरे तो कई बार परन्तु, निज में ठहर नहीं पाए।
'सुव्रत' अब बस निज में, ठहरें बस यह आश लिए आये॥७॥

(सोरठा)

पाने आतम मुकाम, तीर्थंकर फिर सिद्ध का।
अतः किया गुणगान, वीतराग विज्ञान का॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेयो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

करें तीस चौबीसियाँ, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दें, हम पूजत भगवान॥

(शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुखों को मेंट दो, चौबीसी जिनराय॥
(पुष्पांजलिं...)

अर्घ्यावली–१३

धर्म वृषभ प्रभु धार बने जिनवर अरहंता।
बहे धर्म की धार पिएं नर नारी संता॥
प्रभु चरणों का पान करें हम अर्घ चढ़ाके।
करते हैं गुणगान नमोस्तु कर शीश झुका के॥१॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री धर्मवृषभनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

बना सभी को मित्र बने प्रिय मित्रनाथ जी।
चिदानन्द का इत्र महकता दिवस रात ही॥
मुक्ति वधू का चित्र झलकता अर्घ चढ़ा के।
करते हैं गुणगान नमोस्तु कर शीश झुका के॥२॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री मित्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

घूम घूम संसार मिली नहीं शान्ति हमको।
अतः शान्ति का द्वार खोजकर भजें शान्ति को॥
शान्तिनाथ सी शान्ति मिले अब अर्घ चढ़ाके।
करते हैं गुणगान नमोस्तु कर शीश झुका के॥३॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

बुद्धिमान भी दास हुए हैं पुण्यवान के।
सुमतिनाथ भगवान बने हैं पुण्य फलों से॥
पुण्य उन्हीं सा प्राप्त करे हम अर्घ चढ़ाके।
करते हैं गुणगान नमोस्तु कर शीश झुका के॥४॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

आदिनाथ का नाम जिन्होंने थाम लिया है।
चित् चैतन्य मुकाम उन्होंने प्राप्त किया है॥
चेतन में विश्राम करें हम अर्घ चढ़ाके।
करते हैं गुणगान नमोस्तु कर शीश झुका के॥५॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

करे प्रार्थना रोज यही अतिव्यक्तनाथ से।
दुनियाँ के हर लोग नहीं हों दुखी कर्म से॥
प्रभु सा चेतन भोग करे अर्घ चढ़ाके।
करते हैं गुणगान नमोस्तु कर शीश झुका के॥६॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री अतिव्यक्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

दो ही कला महान कलाओं में कहलायें।
प्रथम जीविका ज्ञान दूसरी मोक्ष दिलाए॥
कलासेन की कला मिले अब अर्घ चढ़ाके।
करते हैं गुणगान नमोस्तु कर शीश झुका के॥७॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री कलासेननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हुए जगत जित लोग मिले फिर भी मिट्टी में।
किन्तु कर्म जितनाथ गए निज की मुक्ति में॥
कर्म शत्रु पर विजय करें हम अर्घ चढ़ाके।
करते हैं गुणगान नमोस्तु कर शीश झुका के॥८॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री जितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

शुद्ध बुद्ध चैतन्य हमें भी मिले आप सी।
भजकर प्रबुद्धनाथ मिटे सब व्यथा पाप की॥
हम अरहंत सिद्ध बनें यह अर्घ चढ़ाके।
करते हैं गुणगान नमोस्तु कर शीश झुका के॥९॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री प्रबुद्धनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पहुँच गए जो मोक्ष छोड़ कर दुनियाँ सारी।
वो हैं प्रवजित नाथ तिन्हें है धोक हमारी॥
हम छोड़ें संसार आपको अर्घ चढ़ाके।
करते हैं गुणगान नमोस्तु कर शीश झुका के॥१०॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री प्रवजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

धर्म बिना संसार सदा ही हमें रुलाते।
भज लो सुधर्मनाथ हमें जो पार लगाते॥
तुम्हें सौंपते नाव भक्त हम अर्घ चढ़ाके।
करते हैं गुणगान नमोस्तु कर शीश झुका के॥११॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री सुधर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

आँधी या तूफान बुझा ना जिसको पाए।
तमोदीप भगवान चेतना को चमकाए॥
जले आत्म का दीप, दीपमय अर्घ चढ़ाके।
करते हैं गुणगान नमोस्तु कर शीश झुका के॥१२॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री तमोदीपनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

परम पूज्य व्रजनाथ घूम जग काला पीला।
पा बैठे अध्यात्म स्वयं का रंग रंगीला॥
कहाँ भक्त अब जाएं तुम्हें यह अर्घ चढ़ाके।
करते हैं गुणगान नमोस्तु कर शीश झुका के॥१३॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री वज्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

बुद्ध बने बिन कौन शुद्ध हों बुद्धनाथ सम।
शुद्ध बने बिन कौन मोक्ष में पहुँचे आतम॥
शुद्ध बुद्ध चैतन्य करें हम अर्घ चढ़ाके।
करते हैं गुणगान नमोस्तु कर शीश झुका के॥१४॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री बुद्धनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जिनवर प्रबन्धदेव बन्ध कर्मों के तोड़े।
करके आतम ध्यान मुक्ति से नाता जोड़े॥
भक्त बनें भगवान तुम्हें अर्घ चढ़ाके।
करते हैं गुणगान नमोस्तु कर शीश झुका के॥१५॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री प्रबन्धदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

स्वामी अजितनाथ बसाये नगर निराला।
शुद्धातम का रोज जहाँ पर रहे उजाला॥
मिले सफलता राह तुम्हें यह अर्घ चढ़ाके।
करते हैं गुणगान नमोस्तु कर शीश झुका के॥१६॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

प्रमुखनाथ भगवान नहीं मुख जग का देखे।
मुक्ति वधू के साथ रमण नित करो मजे से॥
मिले मुक्ति का गाँव तुम्हें यह अर्घ चढ़ाके।
करते हैं गुणगान नमोस्तु कर शीश झुका के॥१७॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री प्रमुखनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री पल्योपम नाथ ह्रदय में पल पल झूलें।
रख दो सिर पर हाथ अतः ना तुमको भूलें॥
छूलें आत्म सरोज तुम्हें यह अर्घ चढ़ाके।
करते हैं गुणगान नमोस्तु कर शीश झुका के॥१८॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री पल्योपमनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

विश्व शान्ति की धार हृदय में जब लहराई।
बनकर अकोपनाथ क्षमा रिम झिम वर्षाई॥
धुले क्षमा से कोप तुम्हें यह अर्घ चढ़ाके।
करते हैं गुणगान नमोस्तु कर शीश झुका के॥१९॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री अकोपनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पर में तिष्ठित जीव सदा भ्रमते ही रहते।
पर से निष्ठित नाथ स्वयं आतम में रमते॥
पाते ब्रह्मानन्द तुम्हें यह अर्घ चढ़ाके।
करते हैं गुणगान नमोस्तु कर शीश झुका के॥२०॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री ब्रह्मनन्दनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जिन शासन की नाव मिले जल्दी से हमको।
सो मृग नाभिनाथ मनाते हैं हम तुमको॥
होती नैया पार तुम्हें यह अर्घ चढ़ाके।
करते हैं गुणगान नमोस्तु कर शीश झुका के॥२१॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री नाभिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

देवों के भी इन्द्र रहें जिनके चरणों में।
श्री देवेन्द्रनाथ रखो हमको शरणों में॥
चरण शरण हो प्राप्त तुम्हें यह अर्घ चढ़ाके।
करते हैं गुणगान नमोस्तु कर शीश झुका के॥२२॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री देवेन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

त्यागे सभी विकार तजें सब पद संसारी।
बनकर पदस्थनाथ बने आतम अधिकारी॥
मिले मोक्ष साम्राज्य तुम्हें यह अर्घ चढ़ाके।
करते हैं गुणगान नमोस्तु कर शीश झुका के॥२३॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री पदस्थनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

बनकर पर के नाथ सदा अनाथ ही रहते।
जो बनते शिवनाथ वही तो हमको जमते॥
बनें आप सम भक्त तुम्हें यह अर्घ चढ़ाके।
करते हैं गुणगान नमोस्तु कर शीश झुका के॥२४॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री शिवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

ऊँची उड़े पतंग भक्त की थामो डोरी।
मुक्ति वधू के संग करे हम लीला थोड़ी॥
मिले मुक्ति का साथ तुम्हें पूर्णार्घ्य चढ़ाके।
करते हैं गुणगान नमोस्तु कर शीश झुका के॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेयो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

अर्घ्यावली—१४

(चौपाई)

विश्व चन्द्र जी नाथ निराले, विश्व शान्ति जो करने वाले।
विश्व तत्त्व अब हम सब पाएँ, सो नमोस्तु कर अर्घ चढ़ायें॥१॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री विश्वचन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

कपिलनाथ जी कुन्दन जैसे, सदा महकते चन्दन जैसे।
कपिल मतों की गंध मिटाएँ, सो नमोस्तु कर अर्घ चढ़ायें॥२॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री कपिलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

वृषभदेव कमलासन वासी, भक्त दिलों के हैं अधिवासी।
तुम्हें मना कर नसाएँ, सो नमोस्तु कर अर्घ चढ़ायें॥३॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री वृषभदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री प्रियतेजो नाथ हमारे, वीतरागता के उजयारे।
वीतरागता हम पा जाएँ, सो नमोस्तु कर अर्घ चढ़ायें॥४॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री प्रियतेजोनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जग विस्तार कषायों का है, प्रशमनाथ से शमन हुआ है।
राख कषायों को कर पाएँ, सो नमोस्तु कर अर्घ चढ़ायें॥५॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री प्रशमनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

विष पी कर तो मरती दुनिया, हो विषमाँगनाथ से सुखिया।
विष भक्षण का दर्द मिटाएँ, सो नमोस्तु कर अर्घ चढ़ायें॥६॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री विषमांगनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

बन चारित्रनाथ के चेले मिलते हैं, सिद्धों के मेले।
सिद्धों का मेला हम पाएँ, सो नमोस्तु कर अर्घ चढ़ायें॥७॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री चारित्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जग पूजें आदित्य प्रभाएँ, पर प्रभु प्रभादित्य न पाएँ।
प्रभादित्य प्रभु हम पा जाएँ, सो नमोस्तु कर अर्घ चढ़ायें॥८॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री प्रभादित्यनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

मंजु केश प्रभु द्वेष हटाए, केशलोंच का पथ दिखलाएँ।
हम निर्ग्रन्थ अवस्था पाएँ, सो नमोस्तु कर अर्घ चढ़ायें॥९॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री मंजुकेशनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

अनन्त काल तो भव में उलझे, फिर भी बीतवास प्रभु सुलझे।
हमें राग से प्रभु सुलझाएँ, सो नमोस्तु कर अर्घ चढ़ायें॥१०॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री बीतवासनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

सिद्ध चक्र जो पाने वाले, वही सुराधिप नाथ निराले।
अर्हत् चक्र हमें दिलवाएँ, सो नमोस्तु कर अर्घ चढ़ायें॥११॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री सुराधिपनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हिंसा तांडव से जग रोता, दयानाथ प्रभु का ना होता।
दयानाथ के हम हो जाएँ, सो नमोस्तु कर अर्घ चढ़ायें॥१२॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री दयानाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

इन्द्र हजारों नयना करते, सहस्त्र भुज स्वामी को लखते।
हम श्रद्धा से दर्शन पाएँ, सो नमोस्तु कर अर्घ चढ़ायें॥१३॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री सहस्त्रभुजनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री जिन सिंहनाथ जी, प्यारे हम सबके हैं तारण हारे।
हमको अपने पास बुलाएँ, सो नमोस्तु कर अर्घ चढ़ायें॥१४॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री सिंहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जग कोलाहल हमें सताए, रैवत प्रभु से दूर कराये।
मौन धार कर प्रभु पद पाएँ, सो नमोस्तु कर अर्घ चढ़ायें॥१५॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री रैवतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

बाहु स्वामी सबको भाएँ, मोक्ष बज्र पौरुष कर पायें।
बज्र पुरुष हम भी बन जाएँ, सो नमोस्तु कर अर्घ चढ़ायें॥१६॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री बाहुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

इन्द्र करें माली बन सेवा, ऐसे मालि नाथ जिन देवा।
मिको अपना दास बनाएँ, सो नमोस्तु कर अर्घ चढ़ायें॥१७॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री मालिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जिनवर अयोग देव नाथ जी, सुनो हमारी एक बात ही।
हमें मोक्ष की सैर कराएँ, सो नमोस्तु कर अर्घ चढ़ायें॥१८॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री अयोगदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

आप अयोगि प्रभु कहलाते, योगी ध्यानी तुमको ध्याते।
सच्चे योगी हमें बनाएँ, सो नमोस्तु कर अर्घ चढ़ायें॥१९॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री अयोगिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

तमाम काम जगत को करना, काम तमाम भगत को करना।
अतः काम रिपु प्रभु को ध्यायें,सो नमोस्तु कर अर्घ चढ़ायें॥२०॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री रिपुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

तजें तजें आरम्भ कामना, करें करें प्रारम्भ साधना।
पथ आरम्भ नाथ बतलाएँ, सो नमोस्तु कर अर्घ चढ़ायें॥२१॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री आरंभनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

नेमिनाथ जी परम विरागी, मुक्ति वधू के हैं अनुरागी।
धर्म धार से हमें नहाएँ, सो नमोस्तु कर अर्घ चढ़ायें॥२२॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

गर्भवास की पीड़ा जानी, अतः गर्भ दुःख तजते ज्ञानी।
हम प्रभु गर्भ ज्ञाति बन जाएँ, सो नमोस्तु कर अर्घ चढ़ायें॥२३॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री गर्भज्ञातिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जो आत्म को अर्जित करता, जगत समर्पित उसको रहता।
हम एकार्जित प्रभु को पाएँ, सो नमोस्तु कर अर्घ चढ़ायें॥२४॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री एकार्जितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

जिसने भी चौबीसी ध्यायी, मुक्ति वधू वरमाला लाई।
हुआ स्वयंवर मोक्ष महल में, कभी न फसता जग दलदल में॥

(सोरठा)

मुक्ति वधू से ब्याह, नाथ हमारा हो कभी।
अतः चढ़ाये अर्घ, करके नमोस्तु हम आशीष॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेयो पूर्णार्घ्यं...।

अर्घ्यावली–१५

(लय-माता तू दया करके)

हम अर्घ चढ़ायें तो, तुम निज सम हमें करो।
हम करें नमोस्तु तो, तुम सिर पर हाथ रखो॥
हैं बाल रक्त जैसे, पर रक्त दूध जैसा।

संबंध उन्हीं से है, भक्तों का माँ शिशु सा॥
लो हमें गोद अपनी, दो हमें बोध अपना।
हे! रक्तकेश स्वामी, यह पूर्ण करो सपना॥१॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री रक्तकेशनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जो चक्र हस्त चाहें, जो भक्तों को तारें।
जो ध्यान चक्र द्वारा, रिपु कर्म चक्र मारें॥
हम सिद्ध चक्र पायें, वह वरदहस्त देना।
हे! चक्र हस्त स्वामी, यह अर्जी सुन लेना॥
हम अर्घ चढ़ायें तो, तुम निज सम हमें करो।
हम करें नमोस्तु तो, तुम सिर पर हाथ रखो॥२॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री चक्रहस्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जग कार्य जिन्हें करना, संसार उन्हें मिलते।
जग कार्य जिन्हें तजना, कृतनाथ उन्हें मिलते॥
कृतनाथ मिले हमको, वह कार्य हमें करना।
जो मंजिल दे हमको, वह राह हमें चलना॥
हम अर्घ चढ़ायें तो, तुम निज सम हमें करो।
हम करें नमोस्तु तो, तुम सिर पर हाथ रखो॥३॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री कृतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जो परम पिता उन सम, है कौन यहाँ होगा।
हम मस्त रहें जिनमें में, जो होगा सो होगा॥
विश्वास हमें है ये, सब अच्छा ही होगा।
हे! परमेश्वर स्वामी, कब जग तुम सम होगा॥
हम अर्घ चढ़ायें तो, तुम निज सम हमें करो।
हम करें नमोस्तु तो, तुम सिर पर हाथ रखो॥४॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री परमेश्वरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जिनके दर्शन करके जिया पुलक पुलक जाए।
दर्शक जो भी आये, घर लौट नहीं पाए॥
हम मूरत देखें तो, चिन्मूरत हो जायें।
हे! सुमूर्तिनाथ स्वामी, हम तेरे हो जायें॥
हम अर्घ चढ़ायें तो, तुम निज सम हमें करो।
हम करें नमोस्तु तो, तुम सिर पर हाथ रखो॥५॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री सुमूर्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

संसार दबाता है, जब पाप उदय आता।
संसार स्वयं दबता, जब पुण्य उदय आता॥
संसार त्याग कर हम प्रभु चरणों में बैठे।
हे! मुक्तिकांत स्वामी, क्या तुम हमसे रूठे॥
हम अर्घ चढ़ायें तो, तुम निज सम हमें करो।
हम करें नमोस्तु तो, तुम सिर पर हाथ रखो॥६॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री मुक्तिकांत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जो आत्म प्रदेशी हैं, वे गुण तुम प्रगटाये।
हम तजे विदेशी गुण, जिन गुण पाने आये॥
हम बने विदेही सम, यह विनय हमारी है।
हे! निकेशिनाथ स्वामी, क्यों देर तुम्हारी है॥
हम अर्घ चढ़ायें तो, तुम निज सम हमें करो।
हम करें नमोस्तु तो, तुम सिर पर हाथ रखो॥७॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री निकेशिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

विषयों से राग किया, तो दुख ही दुख पाये।
क्यों राग नहीं छोड़ा, यह समझ नहीं पाये॥
अब प्रशस्त राग करने, जिनवर के गुण गा लो।
हे! प्रशस्तनाथ स्वामी, तुम हमको अपना लो॥

हम अर्घ चढ़ायें तो, तुम निज सम हमें करो।
हम करें नमोस्तु तो, तुम सिर पर हाथ रखो॥८॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री प्रशस्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

उपहार उन्हें मिलता, जो हार नहीं मानें।
संसार उन्हें मिलता, जो प्रभु को नहीं जाने॥
हम प्रभु को जान सकें, आहार छोड़ बैठे।
हे! निराहार स्वामी, यह श्रद्धा ना टूटे॥
हम अर्घ चढ़ायें तो, तुम निज सम हमें करो।
हम करें नमोस्तु तो, तुम सिर पर हाथ रखो॥९॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री निराहारनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हम बने विभावी तो, विद्रूप रूप पाये।
निज का अमूर्त आतम, श्रृंगार नहीं पाये॥
श्रृंगार आपका देख, वरमाला मुक्ति लाई।
हे! अमूर्तनाथ स्वामी, बारात हमें भाई॥
हम अर्घ चढ़ायें तो, तुम निज सम हमें करो।
हम करें नमोस्तु तो, तुम सिर पर हाथ रखो॥१०॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री अमूर्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

माँ प्रथम जन्मम देकर, संसार बढ़ाती है।
हो जन्म दूसरा गर, दीक्षा ली जाती है॥
सो दीक्षा का धारी, हर जन्म मरण हरता।
द्विजनाथ करो दीक्षित, यह भक्त विनय करता॥
हम अर्घ चढ़ायें तो, तुम निज सम हमें करो।
हम करें नमोस्तु तो, तुम सिर पर हाथ रखो॥११॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री द्विजनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

विषयों के स्वागत से, दुर्गत संसार हुआ।
दुर्गतियों के दुख से, स्वागत कई बार हुआ॥

अपराध क्षमा कर दो, जैनागम पंथ दे दो।
हे! श्रेयोगत स्वामी, भक्तों को शरण ले लो॥
हम अर्घ चढ़ायें तो, तुम निज सम हमें करो।
हम करें नमोस्तु तो, तुम सिर पर हाथ रखो॥१२॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री श्रेयोगतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

(हाकलिका)

अरुजनाथ अरिहंता हो, भक्तों के भगवन्ता हों।
आतम रूप नियंता हो, मुक्ति वधू के कंता हो॥
हमको भी स्वीकार करो, नाव हमारी पार करो।
अर्घ चढ़ाने आये, भेंट नमोस्तु भी लाये॥१३॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री अरुजनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

देवनाथ स्वामी दाता, सबको देते सुख साता।
भले आपने मुख मोड़ा, हमें विलखता सा छोड़ा॥
पर हम भूल न पायेंगे, मोक्ष खोजते आयेंगे।
अर्घ चढ़ाने आये, भेंट नमोस्तु भी लाये॥१४॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री देवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूज्य दयाधिक नाथ तुम्हीं, तुम सा कोई मिला नहीं।
अतः तुम्हें छोड़ें कैसे, रहें आप बिन अब कैसे।
नाथ हमें अपना लो तुम, अपने पास बुला लो तुम।
अर्घ चढ़ाने आये, भेंट नमोस्तु भी लाये॥१५॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री दयाधिकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पुष्पनाथ जो कहलाते, अंतर आतम महकाते।
पुष्पों से ज्यादा महकें, सूरज से ज्यादा चमकें॥
क्यों तड़फाते भक्तों को, एक पंखुड़ी दो हमको।
अर्घ चढ़ाने आये, भेंट नमोस्तु भी लाये॥१६॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री पुष्पनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जो नरनाथ कहाते हैं, हम भक्तों का निर्वाण करें।
सबका जो कल्याण करें भक्तों के तारण हारे॥
तनिक ध्यान हम पर दे दो, परमानन्द हमें दे दो।
अर्घ चढ़ाने आये, भेंट नमोस्तु भी लाये॥१७॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री नरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री भूतनाथ प्यारे, भक्तों के तारण हारे।
सबको रत्न लुटाते हैं, फिर भी निज को ध्याते हैं॥
एक नजर हम पर कर दो, रत्नत्रय बाला वर दो।
अर्घ चढ़ाने आये, भेंट नमोस्तु भी लाये॥१८॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री भूतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हे! नागेन्द्र नाथ मुखिया, तत्त्व आपके हैं सुखिया।
आप रमण जिसमें करते, भक्त नमन उसको करते॥
परम तत्त्व अब दान करो, थोड़ा तो कल्याण करो।
अर्घ चढ़ाने आये, भेंट नमोस्तु भी लाये॥१९॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री नागेन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूज्य तपोधिक नाथ रहे, तुम बिन भक्त अनाथ रहे।
रख दो हाथ शीश पर तो, फिर डर की क्या बात रहे॥
अब तो तपा नहीं जाता, तुम बिन नहीं रहा जाता।
अर्घ चढ़ाने आये, भेंट नमोस्तु भी लाये॥२०॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री तपोधिकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

आप दशानन स्वामी हो, स्वयं भेद विज्ञानी हो।
सबकी तो तुम जान रहे क्यों न हमारी मान रहे॥
हमको रूप दिगम्बर दो, मुक्ति वधू का मंदिर हो।
अर्घ चढ़ाने आये, भेंट नमोस्तु भी लाये॥२१॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री दशाननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री आरण्यक नाथ महा, तुम जैसा है कौन यहाँ।
भव अरण्य के छोर रहे, भक्तों के चित चोर रहे॥
भव अरण्य में फसें न हम, डोर थाम लो स्वामी तुम।
अर्घ चढ़ाने आये, भेंट नमोस्तु भी लाये॥२२॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री आरण्यकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

दशानीक स्वामी प्यारे, शुद्ध दशा जो स्वीकारे।
दिशा बोध से शोध किया, मोक्ष महल को खोज लिया॥
पूरी खोज हमारी हो, इच्छा अगर तुम्हारी हो।
अर्घ चढ़ाने आये, भेंट नमोस्तु भी लाये॥२३॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री दशानीकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

सात्विक नाथ निराले हो, भक्तों के रखवाले हो।
तजें तामसिकता सारी, अतः राजसिकता हारी॥
धार्मिक हमें बनाओ तुम, निज अध्यातम पिलाओ।
अर्घ चढ़ाने आये, भेंट नमोस्तु भी लाये॥२४॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री सात्विकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

इच्छित ना वरदान मिला, अब तक ना निर्वाण मिला।
बस केवल संसार मिला, अब तक ना प्रभु द्वार मिला॥
सो चौबीसी अर्घों से, ऊँचे पहुँचे स्वर्गों से।
अर्घ चढ़ाने आये, भेंट नमोस्तु भी लाये॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेयो पूर्णार्घ्यं...।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

भव जल तारक धर्म है, तारण तरण जहाज।
तीर्थंकर जिन रूप की, हो जयमाला आज॥

(ज्ञानोदय)

बहुत बहुत हैं लौकिक मंगल, जो दुनियाँ को मान्य रहें।
किन्तु पूज्य चत्तारि मंगलं, रहे अलौकिक धन्य करें॥
प्रथम रहे अर्हन्त उन्हीं में , दूजे सिद्ध साधु तीजे।
चौथा धर्म केवली वर्णित, इनसे तत्त्व शुद्ध कीजे॥१॥

शब्द अर्थ से मुख्य गौण से, द्रव्य भाव मंगल समझो।
आत्म तत्त्व की सिद्धि हेतु फिर, पाप कर्म में मतत उलझो॥
मंगल में जो मंग शब्द है, अनन्त गुण का वाचक वो।
ल लाति से मंगल निज में, अनन्त गुण का दायक हो॥२॥

अथवा मं पापों का वाचक, गल से गलित करा देता।
मंगल शब्द पाप क्षय करके अक्षय सुखी बना देता॥
इतना सब कुछ मंगल करके आतम सिद्ध करा देता।
फिर भी संसारी प्राणी क्यों, मंगल शब्द भुला देता॥३॥

तकनीकी से मंगल गृह पर, मानव निज जीवन खोजे।
लेकिन निज जीवन में मंगल, है या ना यह ना खोजे॥
यदि जीवन में खोजा मंगल, तो आतम मंगलमय हो।
अतः मंगलाचरण करें हम, जिससे पापों का क्षय हो॥४॥

सब मंगल में पहला मंगल, नग्न दिगम्बर जिन मुद्रा।
अतः रचायी वर्तमान की, चौबीसी की जिन पूजा॥
मंगल मंगल बोल बनायें, मंगल मंगल रूप धरें।
मंगल मंगल मार्ग चलें फिर, मंगल आतम रूप करें॥५॥

जब तक मंगल रूप बने ना, जब तक हो उद्धार नहीं।
तब तक करना मंगल मंगल, श्रेष्ठ भावना सार यही॥
तेरा मेरा सब का जग का, कण कण क्षण क्षण मंगल हो।
'सुव्रत' के मंगल से पहले, विश्व शान्ति जग मंगल हो॥६॥

(सोरठा)

करना मंगल आप, भक्त करें जिन अर्चना।
हरो अमंगल पाप, आतमम बने परमातमा॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेयो समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें तीस चौबीसियाँ, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दें, हम पूजत भगवान॥

(शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुखों को मेंट दो, चौबीसी जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

(हरीगीतिका)

तीर्थंकरों के चक्र में जो, तीस चौबीसी भजें।
वो दूर दुख दारिद्र करने, पुण्य धन अर्जन करें॥
पा गुरु कृपा 'सुव्रत' धरें, अध्यात्म की विद्या चखें।
आशीष दो कि विधान करके हम नमोस्तु कर सकें॥

इत्याशीर्वाद

पूजन-६
पश्चिम धातकी खण्ड सम्बन्धि ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रिकाल चौबीसी पूजन
स्थापना

(दोहा)

पश्चिम धातकी खण्ड के, ऐरावत के नाथ।
त्रयकालिक चौबीस को, करें नमोस्तु आज॥

(ज्ञानोदय)

पश्चिम धातकी ऐरावत के, जिन दर्शन को तरस रहे।
आकुल व्याकुल हृदय हमारा, नयना रो रो बरस रहे॥
किन्तु वहाँ हम जा नहिं सकते, इससे आज अर्चना की।
हृदय द्वार से आज विराजो, मन ने प्रार्थना की॥

(दोहा)

चित् चैतन्य मुकाम हैं, चौबीसों भगवान।
जिनको नमोस्तु हम करें जिन पूजन आह्वान॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकराः अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ...। अत्र मम् मम् सन्निहितो...। (पुष्पांजलिं...)

(पंच चामर/तोमर)

जिनेन्द्र का स्वभाव क्या सही नहीं पता मिले।
अतः सदैव चक्र जन्म मृत्यु का यहाँ चले॥
जिनात्म के प्रभाव से निजात्म प्राप्त हो हमें।
अतः चढ़ा सुनीर ये नमोस्तु भेंट हो तुम्हें॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेयो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलम्...।

हमें मिली विभाव की छाँव आपकी मिली।
इसीलिए निजात्म की न ताप वेदना टली॥
जिनात्म के प्रभाव से निजात्म प्राप्त हो हमें।
अतः चढ़ा सुगंध ये नमोस्तु भेंट हो तुम्हें॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेयः संसार ताप विनाशनाय चंदनम्...।

जिनेन्द्र के बिना लगे विभाव ही स्वभाव सा।
तभी जिनेन्द्र भक्त विश्व त्याग के यहाँ बसा॥
जिनात्म के प्रभाव से निजात्म प्राप्त हो हमें।
अतः चढ़ा सुपुंज ये नमोस्तु भेंट है तुम्हें॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेयो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

न भोग भी मरे कभी, न भोगी भी मरे कभी।
कि भोग भोग हम मरे, विराग भी बने नहीं॥
जिनात्म के प्रभाव से निजात्म प्राप्त हो हमें।
अतः चढ़ा सुपुष्प ये नमोस्तु भेंट हो तुम्हें॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेयः कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं...।

विनाश तो सदा चखा विकास को चखा नहीं।
इसीलिए जिनेन्द्र सा निवास भी मिला नहीं॥

जिनात्म के प्रभाव से निजात्म प्राप्त हो हमें।
अतः चढ़ा नैवेद्य ये नमोस्तु भेंट हो तुम्हें॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेयो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

अचित्त ज्योति से सचित्त ज्योति ज्ञान की जलें।
न मान्य हो तो आइए जला के ज्योति देख लें॥
जिनात्म के प्रभाव से निजात्म प्राप्त हो हमें।
अतः चढ़ा सुदीप ये नमोस्तु भेंट हो तुम्हें॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेयो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

जिनेन्द्र को नमोस्तु से यहाँ मिलें प्रसिद्धियाँ।
चरित्र धार के मिलें अनेक ऋद्धि सिद्धियाँ॥
जिनात्म के प्रभाव से निजात्म प्राप्त हो हमें।
अतः चढ़ा सुधूप ये नमोस्तु भेंट हो तुम्हें॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेयो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

जिनेन्द्र भक्त तो बने भविष्य में जिनेन्द्र से।
मिले यही सुभक्ति फल ये चाहते जिनेन्द्र से॥
जिनात्म के प्रभाव से निजात्म प्राप्त हो हमें।
अतः चढ़ा सुफल ये नमोस्तु भेंट हो तुम्हें॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेयो मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

अधीन दीन हीन भक्त जो न तार पाएंगे।
जिनेन्द्र की उपाधि तो कहाँ से आप पाएंगे॥
तभी जिनेन्द्र आप सा बनाइये गुणी हमें।
अतः चढ़ा सुअर्घ ये नमोस्तु भेंट हो तुम्हें॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेयो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

पश्चिम धातकी खण्ड के, ऐरावत के ईश।
भक्त कहें जयमालिका, त्रयकालिक चौबीस॥

(ज्ञानोदय)

जय जिन शासन जय तीर्थंकर, जय नव देव णमोकारा।
जय रत्नत्रय वीतराग जय, भेद ज्ञान जय ओंकारा॥
इसके स्वामी तीर्थंकर प्रभु, तीन काल के होते हैं।
जिनके अर्चक भक्त स्वयं ही, कर्म कालिमा खोते हैं॥१॥

भूतकाल के सुमेरु प्रभु से, प्रभु धर्मेश रहे अंतिम।
वर्तमान के साधित प्रभु से, चित्र हृदय प्रभु हैं अंतिम॥
भाविकाल के रवीन्दु प्रभु से प्रभु वंक्षश रहे अंतिम।
ये त्रयकालिक जिनवर ही तो, जिनशासन की है आतम॥२॥

जैसे तन्मय हृदय बिना तो, निष्फल अंगोपांग रहे।
ऐसे ही तीर्थंकर बिन तो, धर्म कथा विकलांग रहे।
अगर धर्म विकलांग हुआ तो, कैसे मुक्ति दिलायेगा।
धर्म बिना तो हर संसारी, यहीं तड़फ दुख पायेगा॥३॥

अतः भक्त सुख चाहें हम सो, धर्म पंथ स्वीकार करें।
धर्म पंथ तो मौन रहे सो, अरिहन्तों से प्यार करें॥
हमें नहीं अरिहन्त मिलें सो, बिम्बों का सत्कार करें।
यही सहारे श्रेष्ठ रहे जो, भक्तों का उद्धार करें॥४॥

इसी सहारे को लेकर के, हर तीर्थंकर मुक्त हुए।
हो निष्काम बने हैं निर्मल, अनन्त सुख से युक्त हुए॥
कुछ भी काम उन्हें न करना, सहजानन्दी धाम हुए।
पूजन पाठ रचाकर उनकी, हम भक्तों के काम हुए॥५॥

हमें सहारा बस दे देना, जब भी तुम्हें पुकारें हम।
जो बीती सो बीती अब तो, केवल तुम्हें निहारें हम॥

चरणों में बस करें गुजारा, और ना दूजा काम रहे।
आत्म रोशनी अन्तस् की हो, चित् चैतन्य मुकाम रहे॥६॥

निज ने निज को निज साधन से, निज के लिए बुलाएँ।
निज से निज के निज में रह कर, अविनश्वर निज ध्यायें हम॥
निज ध्याकर के निज से प्रकटा, परमामृत आनन्द पिएँ।
सब कुछ निज में कुछ न पर में, 'सुव्रत' यह अध्यात्म जिएँ॥७॥

(सोरठा)

करें अर्चना भक्त , जिन धन से निज धन मिले।
तब ही होंगे मुक्त , शुद्धात्म सौरभ खिले॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेयो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें तीस चौबीसियाँ, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दें, हम पूजत भगवान॥

(शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुखों को मेंट दो, चौबीसी जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

अर्घ्यावली - १६

(जोगीरासा)

पूज्य सुमेरुनाथ हमारे अचल सुमेरु जैसे।
अतः डिगा न पाई दुनिया हम हो भूलें कैसे॥
तत्त्वों के निर्णय में हम भी तुम जैसे बन जाएँ।
सादर हम तो करें नमोस्तु चरणों अर्घ चढ़ायें॥१॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री सुमेरुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जिन कृत नाथ हमारे स्वामी हम जिनके अनुयायी।
जिन्हें देखकर मुक्ति वधू कुछ कुछ है शर्माई॥

नत नयना हों करें स्वयंवर ताली भक्त बजाएं।
सादर हम तो करें नमोस्तु चरणों अर्घ चढ़ायें॥२॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री कृतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

कैटभनाथ सभी को पालें पर कर्मों को मारें।
पापों के राक्षस को पीटें, पुण्यात्मा को तारें॥
हमको भी हो तनिक निहारो, चिदानन्द हम पाएँ।
सादर हम तो करें नमोस्तु चरणों अर्घ चढ़ायें॥३॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री कैटभनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

दुनियाँ एक अगर देती तो सो वापिस ले लेती।
इसी तरह से लाड़ प्यार कर प्राण हमारे लेती॥
फिर भी प्रशस्त दायक स्वामी हमको पार लगाएँ।
सादर हम तो करें नमोस्तु चरणों अर्घ चढ़ायें॥४॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री प्रशस्तदायकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

परम पूज्य निर्मदन नाथ जी करें दमन भोगों का।
खुद उपसर्ग सहन कर करते भला भक्त लोगों का॥
भले भूल जाओ दुनियाँ पर हमको नहीं भुलाएँ।
सादर हम तो करें नमोस्तु चरणों अर्घ चढ़ायें॥५॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री निर्दमननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

कुलकर नाभि हमारे कुल को कर लें अपने जैसे।
हम तो चरणों में बैठे हैं बेटा बैठे जैसे॥
हमें बना लो जिन कुल दीपक हम आतम चमकाएँ।
सादर हम तो करें नमोस्तु चरणों अर्घ चढ़ायें॥६॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री नाभिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

वर्धमान भगवान हमारे उठे बहुत ही ऊँचे।
इतने ऊँचे जा पहुँचे कि आ सकते ना नीचे॥

हम तो ऊँचे उठ नहीं सकते हमको आप उठाएँ।
सादर हम तो करें नमोस्तु चरणों अर्घ चढ़ायें॥७॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री वर्धमान जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

शरद पूर्णिमा का चन्दा तो, शरदामृत बरसाये।
फिर भी वह संसार ताप को, तनिक न हरने पाये॥
अमृतेन्दु स्वामी ज्ञानामृत देकर अमर बनाएँ।
सादर हम तो करें नमोस्तु चरणों अर्घ चढ़ायें॥८॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री अमृतेन्दुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

संख्यानन्द निजांनदी प्रभु निजानन्द के दाता।
सो संख्यात प्रदेशी आतम पुलक पुलक हो गाता॥
निजानन्द की कर दो वर्षा हम पावन हो जाएँ।
सादर हम तो करें नमोस्तु चरणों अर्घ चढ़ायें॥९॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री निजानन्दनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूज्य कल्पकृत नाथ निरम्बर कल्पा कल्प निहारी।
हमको भी तो नाथ निहारो हम हैं चरण पुजारी।
कल्पवृक्ष से क्या लेना अब हम तो तुम्हें मनायें।
सादर हम तो करें नमोस्तु चरणों अर्घ चढ़ायें॥१०॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री कल्पकृतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

परम पूज्य हरिनाथ जिनेश्वर आप स्व-पर हितकारी।
आप स्वयं में स्वयं तिष्ठते लगते अतिशयकारी॥
अतः हमारी पीर हरण कर चिन्ता सभी मिटाएँ।
सादर हम तो करें नमोस्तु चरणों अर्घ चढ़ायें॥११॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री हरिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

बाहूस्वामी नाथ बने हैं, बाहूबल के द्वारा।
बाहूबल से पौरुष करके आतम को श्रृंगारा॥

आतम का शृंगार करें हम, कर्म कलंक मिटाये।
सादर हम तो करें नमोस्तु चरणों अर्घ चढ़ायें॥१२॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री बाहूस्वामी जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

(पद्धड़ी)

परम पूज्य हैं भार्गवनाथ, धर्म धुरन्धर तारक आप।
हमें पार भव से पहुँचाए, करें नमोस्तु अर्घ चढ़ायें॥१३॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री भार्गवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूज्य भद्र स्वामी जिनराज, करें हमारे दिल पर राज।
बनकर भद्र भद्र पद पाएं, करें नमोस्तु अर्घ चढ़ायें॥१४॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री भद्रस्वामी जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

परम पूज्य पविपांणीनाथ, परिणय कर मुक्ति के साथ।
रमों स्वयं में हमें रमाएं, करें नमोस्तु अर्घ चढ़ायें॥१५॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री पविपांणीनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूज्य विपोषित नाथ महान, पोषित कर करते कल्याण।
पुष्ट हमारा तत्त्व बनाएँ, करें नमोस्तु अर्घ चढ़ायें॥१६॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री विपोषितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूज्य ब्रह्मचारी परमेश, ब्रह्म रमण का दें उपदेश।
ब्रह्म तत्त्व में हमें रमाएँ, करें नमोस्तु अर्घ चढ़ायें॥१७॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री ब्रह्मचारीनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूज्य असाक्षिक नाथ दयाल, सबको करते माला माल।
सिद्ध चक्र साक्षात दिलाएँ, करें नमोस्तु अर्घ चढ़ायें॥१८॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री असाक्षिकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

चारित्रेशनाथ चैतन्य, तुम्हें पूजकर हम हो धन्य।
हम भी चिंता चिता मिटाएं, करें नमोस्तु अर्घ चढ़ाएँ॥१९॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री चारित्रेशनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूज्य पारिणामिक धर्मेश, परमेष्ठी तुम बने विशेष।
हमको चरण विशेष दिलाएँ, करें नमोस्तु अर्घ चढ़ायें॥२०॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री पारिणामिकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

शाश्वत नाथ हमारे धाम, जिनका नाम बनाए काम।
सारे काम तमाम कराएँ, करें नमोस्तु अर्घ चढ़ायें॥२१॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री शाश्वतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री निधि नाथ तत्त्व भण्डार, जिन्हें देख आनन्द अपार।
जिन गुण संपत्ती हम पाएँ, करें नमोस्तु अर्घ चढ़ायें॥२२॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री निधिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

कौशिक नाथ हरें अज्ञान, करें प्रकाशक आतम ज्ञान।
कुन्दन सी आतम चमकाएँ, करें नमोस्तु अर्घ चढ़ायें॥२३॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री कौशिकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री धर्मेश नाथ का ध्यान, भक्तों को देते वरदान।
धर्म धुरंधर हम बन जाएँ, करें नमोस्तु अर्घ चढ़ायें॥२४॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री धर्मेशनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

चौबीसी का करके दर्श, हम भक्तों ने पाया हर्ष।
अचल हमारा हो ध्यान, अर्घ अर्चना किया विधान॥
ऐसा जागा अब विश्वास, मोक्ष मिलेगा धर सन्यास।
इसी भाव से हम गुण गाएँ, करें नमोस्तु अर्घ चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

अर्घ्यावली—१७

श्री साधितनाथ जिनेश्वर, तुम साधन साध्य महेश्वर।
तुम मोक्ष साध्य को पाए, हम शरण तिहारी आए॥
कुछ ध्यान दीजिए हम पर, विश्वास करें हम तुम पर।
हम करने नमोस्तु आए, यह अर्घ भेंटने लाए॥१॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री साधितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जिन स्वामी नाथ हमारे, अंतर रिपुओं को मारे।
हम आये द्वार तिहारे, अंतर रिपुओं के मारे॥
प्रभु आप हमें अपनायें, हम इनको मार भगाएँ।
हम करने नमोस्तु आए, यह अर्घ भेंटने लाए॥२॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री स्वामीनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

स्तमितेन्द्र प्रभु हीरा, हैं भव सागर के तीरा।
दो हमको चरण इशारा, हम पायें दर्श तुम्हारा॥
फिर रूप दिगम्बर धरकर, खुश रहें स्वयं में रमकर।
हम करने नमोस्तु आए, यह अर्घ भेंटने लाए॥३॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री स्तमिनेन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

गम और खुशी के आँसू, दो चार निकलते आंसू।
पर बहे आप बिन आंसू, वे बेशुमार हैं आंसू॥
हे! अत्यानन्द महेशा, दो अत्यानन्द हमेशा।
हम करने नमोस्तु आए, यह अर्घ भेंटने लाए॥४॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री अत्यानन्दनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हैं खुशियाँ पुष्प लुटाते, पर खुद शहीद हो जाते।
मरकर भी मर ना पाते, ऐसा यश नाम कमाते॥
प्रभु पुष्पोत्फुल्ल अमर हैं, सो झुकते भक्त भ्रमर हैं।
हम करने नमोस्तु आए, यह अर्घ भेंटने लाए॥५॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री पुष्तोत्फुल्लनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

मिथ्यामत खंडित करके जिन शासन मंडित करते।
कर्मों को दंडित करके प्रभु पंडित पंडित बनते॥
प्रभु पंडितनाथ सुमर लें, झट मृत्यु महोत्सव कर लें।
हम करने नमोस्तु आए, यह अर्घ भेंटने लाए॥६॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री पंडितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जो परिग्रह सिर पर रखते, संसारी उनको कहते।
जो परिग्रह के सिर पर हैं, वो प्रहत देव जिनवर हैं॥
प्रभु हम पर नजर घुमाओ, ग्रह परिग्रह भूत भगाओ।
हम करने नमोस्तु आए, यह अर्घ भेंटने लाए॥७॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री प्रहतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

है मदन पराजित जिनसे, क्या मदद माँग लें उन से।
वे सब के दिल के राजा, हैं मदन सिद्ध जिन राजा॥
बस मदन हमारा हर लो, यह मदद हमारी सिद्ध कर दो।
हम करने नमोस्तु आए, यह अर्घ भेंटने लाए॥८॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री मदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

(इन्द्रवज्रा)

हे पूज्य प्यारे हसदिन्द्र स्वामी, हो आप सिद्धालय के विरामी।
मुक्ति वधू का हम दर्श पाएं, बोलें नमोस्तु कुछ तो चढ़ायें॥९॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री हसदिन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री चन्द्र श्री पार्श्व जिनेन्द्र प्यारे, नैया हमारी कर दो किनारे।
संसार तार हम भी बुलाएं, बोलें नमोस्तु कुछ तो चढ़ायें॥१०॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री चन्द्रपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री अब्ज बोधेश गए कहीं हो, कैसे हमारे दिल में नहीं हो।
क्या चीर के ये दिल भी दिखाएँ, बोलें नमोस्तु कुछ तो चढ़ायें॥११॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री अब्जनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

तीर्थेश जिन बल्लभ नाथ न्यारे, हो चेतना तुम प्राण प्यारे।
स्वामी हमारे बन आप जाएं, बोलें नमोस्तु कुछ तो चढ़ायें॥१२॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री बल्लभनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

धर्मेश सुविभूतिक नाथ साँचे, जो दर्श पाए वह भक्त नाचे।
सो नाचने को शिव में मिलाएँ, बोलें नमोस्तु कुछ तो चढ़ायें॥१३॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री सुविभूतिकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

स्वामी ककुद्भास हमें सम्भालो, दे प्रेम उच्चासन पे बिठा लो।
संसार में क्यों हमको फिराएँ, बोलें नमोस्तु कुछ तो चढ़ायें॥१४॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री ककुद्भासनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

चैतन्य के तीर्थ सुवर्ण देवा, खाते स्वयं हो शिव सौख्य मेवा।
थोड़ा वही स्वाद हमें चखाएँ, बोलें नमोस्तु कुछ तो चढ़ायें॥१५॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री सुवर्णनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

सर्वोच्च हरिवासक नाथ ज्ञानी, हो वीतरागी निज आत्म ध्यानी।
कल्याणकारी प्रभु रूप ध्यायें, बोलें नमोस्तु कुछ तो चढ़ायें॥१६॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री हरिवासकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

(स्रग्वणी)

पूज्य प्रियनाथ स्वामी हमें साथ दो, क्योंकि सांचे तुम्हीं तो यहाँ मित्र हो।
मित्रता को निभाओ हमें मोक्ष दो, हो नमोस्तु तुम्हें अर्घ भी भेंट हो॥१७॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री प्रियनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

धर्म देवा तुम्हीं तो चिदानन्द दो, आपको छोड़ के कौन आनन्द हो।
खेंचते हैं अतः धर्म के धाम को, हो नमोस्तु तुम्हें अर्घ भी भेंट हो॥१८॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री नाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

नाथ प्रियरत हमारे तुम्हीं मोक्ष हो, दो हमें आप ही मोक्ष के तत्त्व को।
भावना ये हमारी यहीं पूर्ण हो, हो नमोस्तु तुम्हें अर्घ भी भेंट हो॥१९॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री प्रियनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

नाथ नन्दी तुम से व्यथा को कहें, आप ही बोलिए और किससे कहें।
छोड़िये ना हमें ज्यों तजें कर्म को, हो नमोस्तु तुम्हें अर्घ भी भेंट हो॥२०॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री नन्दीनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

अश्वानीक स्वामी चले सैन्य लें, क्या पछाड़े बिना कर्म को चैन लें।
सो पुजारी बने क्या बिना चैन हो, हो नमोस्तु तुम्हें अर्घ भी भेंट हो॥२१॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री अश्वानीकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

नाथ हे पर्व स्वामी हमें पर्व दो, प्राप्त जो भी किया आपने सर्व दो।
अन्यथा फिर कहाँ पाओगे भक्त को, हो नमोस्तु तुम्हें अर्घ भी भेंट हो॥२२॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री पर्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूज्य हो पार्श्व स्वामी विजेता तुम्हीं, आपा दूसरा धर्म नेता नहीं।
सो हमें आप भी जैन सरकार दो, हो नमोस्तु तुम्हें अर्घ भी भेंट हो॥२३॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

चित्र हृदय हमारे तुम्हीं नाथ हो, सो चुराते तुम्हीं भक्त के चित्त को।
सो दिखा दो हमें मुक्ति के चित्त को, हो नमोस्तु तुम्हें अर्घ भी भेंट हो॥२४॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री चित्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

सोचते हैं करें बात क्या आप से, खूब मंडित रहे हम यहाँ पाप से।
आपके योग्य हों लाए पूर्णार्घ्य को, हो नमोस्तु तुम्हें अर्घ भी भेंट हो॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

अर्घ्यावली—१८

श्री श्री रविन्दु नाथ हमारे अतिशयकारी हैं।
तभी पूज्य श्री सूर्य चाँद सम गुण के धारी हैं॥
सूर्य चाँद सम आतम चमके ऐसी नजर करो।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु तुम तो कृपा करो॥१॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री रविन्दुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री सौकुमार नाथ जिनेश्वर सदा कुमार रहे।
जो भी आये शरण आपकी उनको तार रहे॥
तुम्हें पुकार रहे हम स्वामी कुछ तो खबर करो।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु तुम तो कृपा करो॥२॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री सौकुमारनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जिनवर पृथ्वीवान नाथ जी दो आधार हमें।
परमेष्ठी में हम शामिल हों दो वह द्वार हमें॥
पृथ्वी जैसा सब सह लें हम समता भाव भरो।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु तुम तो कृपा करो॥३॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री पृथ्वीवाननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री कुलरत्ननाथ जिनवर जी तुम कुल रत्न रहे।
हम भी जिन कुल रत्न बनें सो तुम को मना रहे॥
मान जाईए हे स्वामी जी कुछ तो ध्यान करो।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु तुम तो कृपा करो॥४॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री कुलरत्ननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

धर्मनाथ जी कृपा करें तो सारे कार्य हुए।
ओर कहें क्या इसी राह से धर्माचार्य हुए॥
हम अरहंत सिद्ध बन जायें धर्म प्रदान करो।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु तुम तो कृपा करो॥५॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

सोमनाथ का रत्न खजाना, कुबेर से बढ़कर।
आओ हम भी इसे, लूट ले विनय भक्ति कर कर॥
हे स्वामी जिनगुण सम्पत्ति हमको दान करो।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु तुम तो कृपा करो॥६॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री सोमनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

वरुण नाथ सागर से गहरे नभ से भी ऊँचे।
सूरज से ज्यादा तेजस्वी अमृत से मीठे॥
किन्तु वीतरागी हैं साँचे निज सम हमें करो।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु तुम तो कृपा करो॥७॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री वरुणनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

अभिनन्दन स्वामी का स्वागत करने की इच्छा।
अतः प्रशंसा करके जिनकी पाएँ जिन दीक्षा॥
मुक्ति पाने भिक्षा माँगे इतना योग्य करो।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु तुम तो कृपा करो॥८॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

सर्वनाथ से सर्व मिले तो और कहाँ जाना।
आतम पर्व मनाने हमको सर्व शरण पाना॥
भले सर्व न देना हमको पर कल्याण करो।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु तुम तो कृपा करो॥९॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री सर्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

स्वामी सुदृष्टिनाथ हमारे अंतर्मुखी हुए।
नाथ आपकी दृष्टि बिना तो हम भी दुखी हुए॥
हमको अंतर्सुखी बनाने दृष्टि प्रदान करो।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु तुम तो कृपा करो॥१०॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री सुदृष्टिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

शिष्ट नाथ जब शिष्ट बने तो हमको इष्ट लगे।
कर्म नहीं अवशिष्ट बचे तो आतम मिष्ट लगे॥
शिष्ट शिष्य हम भी बन जाएं हम को श्रेष्ठ करो।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु तुम तो कृपा करो॥११॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री शिष्टनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

स्वामी सुधन्य नाथ धन्य हैं खेद खिन्न हम क्यों।
हम पर प्रसन्न होओ स्वामी रूठे हमसे क्यों॥
धन्य बना दो अनन्य करके इच्छा मान्य करो।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु तुम तो कृपा करो॥१२॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री सुधन्यनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

(सोरठा)

सोमचन्द्र जिननाथ, चारु चन्द्र से चमकते।
हुए कर्म नत माथ, पूजा करके चहकते॥
हम भी आए द्वार, हम पर स्वामी ध्यान दें।
करें नमोस्तु आज, अर्घ चढ़ाये चरण में॥१३॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री सोमचन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जिनवर क्षेमाधीश, मुक्ति रमा के ईश हो।
अतः बने जगदीश, हमको भी आशीष दो॥
ऊँची उड़े पतंग, डोर हमारी थाम लें।
करें नमोस्तु आज, अर्घ चढ़ाये चरण में॥१४॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री क्षेमाधीशनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूज्य संदतिनाथ, किये मरण का मरण हो।
अतः मिली सौगात, मुक्ति वधू का वरण हो॥
अन्त करें संसार, ऐसे हमको चरण दें।
करें नमोस्तु आज, अर्घ चढ़ाये चरण में॥१५॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री संदतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

स्वामी जयन्तदेव, विश्व विजेता आप हो।
हुए पूज्य स्वयमेव, हरो हमारे पाप को॥
पाये निज पर जीत, गीत प्रेम के आप दें।
करें नमोस्तु आज, अर्घ चढ़ाये चरण में॥१६॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री जयन्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूज्य तमो रिपुनाथ, करके मोह विनाश को।
पा के आत्म प्रकाश, पहुँचे मोक्ष निवास को॥
हरो भक्त अज्ञान, सम्यक ज्ञान प्रकाश दें।
करें नमोस्तु आज, अर्घ चढ़ाये चरण में॥१७॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री रिपुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूजित निर्मित देव, पूर्ण किये निर्वाह को।
कर संयम निर्माण, पाये शिव निर्वाण को॥
निर्मित करके राह, हमको अपना धाम दें।
करें नमोस्तु आज, अर्घ चढ़ाये चरण में॥१८॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री निर्मितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

(विद्योदय)

परम पूज्य कृत पार्श्वनाथ जी आतमज्ञानी।
हुए स्वयं में लीन बने जब केवलज्ञानी।
तभी मुक्ति का हार आपकी चाहे वस्तु।
हम तो चरणों अर्घ चढ़ा कर करें नमोस्तु॥१९॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

संसारी शुभ लाभ चाहते, होकर स्वार्थी।
बोधि लाभ हम चाह रहे हैं, बन परमार्थी॥
बोधिलाभ प्रभु रत्नत्रय दें, साँची वस्तु।
हम तो चरणों अर्घ चढ़ा कर, करें नमोस्तु॥२०॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री बोधिलाभनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

परमेष्ठी बहुनन्द नाथजी, परमानन्दी।
रोगी दुखिया पूज्य आपको, हो आनन्दी॥
चिदानन्द प्रभु हमको देने, इच्छा कर तू।
हम तो चरणों अर्घ चढ़ा कर, करें नमोस्तु॥२१॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री बहुनन्दनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

सुन्दर है सुदृष्टि नाथ जी, एक अकेले।
वो भी सुन्दर बन जाते जो इनके चेले॥
हम बन जाये तेरे चेले, यतन बता तू।
हम तो चरणों अर्घ चढ़ा कर, करें नमोस्तु॥२२॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री सुदृष्टिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

कुंकुमनाभ नाथ को जिसने, पूज लिया है।
परम तत्त्व को खोज घटाघट, जान लिया है॥
हम अपने को जान सकें बस, जान लिया है।
हम तो चरणों अर्घ चढ़ा कर, करें नमोस्तु॥२३॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री कुंकुमनाभनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

वीतराग वक्षेशनाथ जी हों अरिहंता।
हमें राग है तुम से सो बन, बैठे संता॥
वक्ष धाम श्री वत्स चिह्न को, प्रकटा दे तू।
हम तो चरणों अर्घ चढ़ा कर, करें नमोस्तु॥२४॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री वक्षेशनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

भक्तों का मन अब तक मंदिर, बन नहीं पाया।
तब ही चौबीसी का दर्शन, मिल नहीं पाया॥
मात्र बनाने मन को मंदिर, आश्रय दे तू।
हम तो चरणों अर्घ चढ़ा कर, करें नमोस्तु॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

चौबीसी की श्रृंखला, जाती है शिव धाम।
उन चैतन्य जिनेश का, हम करते गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

काल चक्र तो चले निरन्तर, प्रकृति चक्र भी चलता है।
जन्म मरण का चक्र निरन्तर, चलता निज को खलता है॥
ऋतु चक्र भी कर्म चक्र भी, अन्तर घट में पलता है।
किन्तु कहीं निज के कोने में, धर्म दीप भी जलता है॥१॥

धर्म चक्र की परम्परा में, चौबीसी होती रहतीं।
तीन काल में कर्म चक्र जो, निज पर का धोती रहतीं॥
जन्म मरण के पाप चक्र को, हरकर सिद्ध चक्र पाती।
उनकी पूजा जाप ध्यान सब, करने भक्तातम आती॥२॥

भक्त आतमायें इस जग में, भव्यपना प्रकटा सकते।
भव्य जीव ही रत्नत्रय ले, मुनि अर्हंत सिद्ध बनते॥
लेकिन प्रभु चौबीसी वाले, तीर्थंकर का पद पाना।
धर्म चक्र से प्रभावना हो, बहुत बहुत दुर्लभ माना॥३॥

पश्चिम खण्ड धातकी वाली, त्रयकालिक ऐरावत की।
चौबीसी से यही प्रार्थना, दे दो राह हमें हित की॥
हम भी तुम जैसे ही जल्दी, चौबीसी में शामिल हों।
कर्म चक्र को धर्म चक्र से, रोकें निज में झिलमिल हों॥४॥

फूल आपसे जब मांगा तो, दिया आपने गुलदस्ता।
बूँद आपसे जब माँगी तो, दिया समुन्दर अमृत सा॥
ज्यों तुम से तुमको मांगा तो, आप हमारे साथ हुए।
'सुव्रत' का कुछ शेष नहीं सो, मंगल पूजन पाठ हुए॥५॥

(सोरठा)

रहें सदा मुस्काए, हँसी खुशी सब कुछ सहें।
त्रय चौबीसी ध्यायें, आतम परमातम कहें॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातकीखण्ड संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें तीस चौबीसियाँ, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दें, हम पूजत भगवान॥

(शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुखों को मेंट दो, चौबीसी जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

(हरीगीतिका)

तीर्थंकरों के चक्र में जो, तीस चौबीसी भजें।
वो दूर दुख दारिद्र करने, पुण्य धन अर्जन करें॥
पा गुरु कृपा 'सुव्रत' धरें, अध्यात्म की विद्या चखें।
आशीष दो कि विधान करके हम नमोस्तु कर सकें॥

(इत्याशीर्वाद)

पूजन-७

पूर्व पुष्करार्ध द्वीप सम्बन्धी भरत क्षेत्रस्थ त्रिकाल चौबीसी पूजन

स्थापना

(दोहा)

प्रभु चेतन के रत्न हैं, भक्त धरा की धूल।
धर्म रोशनी प्राप्त कर, खिले भक्ति के फूल॥

(ज्ञानोदय)

पुष्करार्ध के पूर्व द्वीप के, भरत क्षेत्र के तीर्थंकर।
तीन काल की जिन चौबीसी, भजें भक्त मंदिर आ कर॥
जब कण कण मंगल होगा तो, भक्त मिलेंगे भगवन् से।
तब तक पूजन पाठ रचा लो, अर्जन और विसर्जन से॥

(दोहा)

चलो खोज लें आतमा, परमातम के स्थान।
अतः रचायें अर्चना, कर नमोस्तु आह्वान॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकराः अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ...। अत्र मम् मम् सन्निहितो...। (पुष्पांजलिं...)

(लय-पाँचों मेरु असी)

जल धारा दे आया ध्यान, हमको भी बनना भगवान।
अतः गुणगान, जन्म मृत्यु के हरें निशान॥
तीन काल के प्रभु भगवान, दो सम्यक क्षायिक श्रद्धान।
मिटें अज्ञान, तुम्हें नमोस्तु कर हो कल्याण॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु जलं...।

चन्दन से वन्दन की गंध, राग द्वेष सब करती मंद।
मिटें सब द्वंद्व, पाप ताप के रहें न छन्द।
चौबीसों जिनवर भगवान, करो निराकुल आप समान।
मिटें अज्ञान, तुम्हें नमोस्तु कर हो कल्याण॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनं...।

खेद खिन्न कभी प्रसन्न, हर्ष विषाद में ना चैतन्य।
बना दो धन्य, भक्त आपके हम हैं अनन्य॥
चौबीसों जिनवर भगवान, हमें बना दो सिद्ध समान।
मिटें अज्ञान, तुम्हें नमोस्तु कर हो कल्याण॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

पुष्प खिले महके मुरझायें, माटी में मिलकर घबरायें।
न निज को पाएं, जिससे पूजन पाठ रचायें॥
चौबीसों जिनवर भगवान, दो कमलासन उच्च महान।
मिटें अज्ञान, तुम्हें नमोस्तु कर हो कल्याण॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं...।

भूख मौत से बड़ी कहाए, सुबह शाम दिन रात सताए।
ये कौन मिटाये, बस जिनशासन एक उपाय॥

चौबीसों जिनवर भगवान, दो जिनशासन का रसपान।
मिटें अज्ञान, तुम्हें नमोस्तु कर हो कल्याण॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

जो आकर के प्रभु के समीप, करे आरती लेकर दीप।
बने जय दीप, तो चैतन्य हुए जिनदीप॥
चौबीसों जिनवर भगवान, करो मोह मिथ्या अवसान।
मिटें अज्ञान, तुम्हें नमोस्तु कर हो कल्याण॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

कहे कर्म से जिन सिद्धान्त, हमें न समझो तुम एकान्त।
सुनो रे! क्लान्त, अनेकान्त से कर दें ध्वान्त॥
चौबीसों जिनवर भगवान, सह लें भक्त कर्म सिद्धान्त।
मिटें अज्ञान, तुम्हें नमोस्तु कर हो कल्याण॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपं...।

हमें भक्ति के फल की आश, पूरी होगी है विश्वास।
मिले संन्यास, तीर्थंकर के बनकर दास॥
चौबीसों जिनवर भगवान, दो तीर्थंकर जैसा ज्ञान।
मिटें अज्ञान, तुम्हें नमोस्तु कर हो कल्याण॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

भक्तों के क्या होगा योग्य, ये तो जाने भगवन् लोग।
मिला संयोग, हो ना पाये कभी वियोग॥
चौबीसों जिनवर भगवान, दो अर्हंत सिद्ध सी शान।
मिटें अज्ञान, तुम्हें नमोस्तु कर हो कल्याण॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

पुष्करार्ध के पूर्व के, भरतेश्वर जिनराज।
जिनकी जयमाला कहें, करके नमोस्तु आज॥

(ज्ञानोदय)

श्रद्धा ने जब ललकारा तो, निष्ठा के स्वर गुंजित हों।
भव का मिले किनारा हमको, भक्तों के स्वर प्रस्फुट हों॥
भक्त और भगवन् के नाते, दीप ज्योति के जैसे हों।
सदैव जलते ही जायेंगे, दुख संकट अब कैसे हों॥१॥

जिनके चरणों की रज पाकर, माटी चंदन हो जाती।
फिर चेतन की बात कहें क्या, चेतन कुन्दन हो जाती॥
चेतन को कुन्दन सी करने, जाप जपो तीर्थंकर की।
माला फेरो जिनशासन की, राह मिले निज मन्दिर की॥२॥

अतीत के दमनेन्द्र नाथ से, विकासनाथ रहे अन्तिम।
वर्तमान के जगन्नाथ से, रहे ध्यान जय प्रभु अन्तिम॥
भाविकाल के बसन्तध्वज से, पूज्य त्रिकर्मा प्रभु अन्तिम।
तीन काल के ईश बहत्तर, स्वपर प्रकाशी शुद्धात्म॥३॥

त्रय चौबीसी जिनशासन से मोक्ष सुन्दरी पाती है।
भक्त मंडली इन्हें पूजकर, निज को धन्य बनाती है॥
भक्त अनाहत इस धारा से तीर्थंकर पद पाते हैं।
समोवशरण का वैभव पाकर, शुद्धातम को ध्याते हैं॥४॥

और अंत में पूर्ण शुद्ध,हो सिद्ध अवस्था पाते है।
और मोक्ष पाकर वो हमको सचमुच बहुत रुलाते हैं॥
हम उन बिन ना रह पाते, सो उनको पाने अकुलाते।
जिनको पाने ज्ञान ध्यान का मोक्ष मार्ग हम अपनाते॥५॥

क्योंकि जहाँ तीर्थंकर होगे वहीं हो धरम वहीं।
वहाँ रहेगें हम तो कैसे, जहाँ आपके कदम नहीं॥

अतः प्रार्थना यह 'सुव्रत' की जो गुजरी सो गुजर गई।
हम तुम साथ मोक्ष में होवें पूरी कर तो गुजर यही॥६॥

(सोरठा)

पाये जिनवर रूप, हम भी तुम सम नग्न हो।
बने सुखी चिद्रूप, अतः आपको नमन हो॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

अर्घ्यावली—१९

(हरीगीतिका)

दमनेन्द्र नाथ जिनेश जी की, साधना विख्यात है।
क्या हम कहे मुक्ति वधू, वरमाला ले नत माथ॥
झकझोर डालें कर्म को हम बस यही विश्वास दो।
सो अर्चना में अर्घ अर्पित हो नमोस्तु आप को॥१॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री दमनेन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री मूर्तस्वामी नाथ करके स्वप्न को साकार ही।
संसार के उस पार पहुँचे कौन पाये पार भी॥
हों भक्त के भगवान बस में, स्वप्न यह साकार हो।
सो अर्चना में अर्घ अर्पित हो नमोस्तु आप को॥२॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री मूर्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जो हैं विराग जिनेश प्यारे वीतरागी पूज्य हैं।
अर्हन्त की पाकर विभूति बन गए शिव दूत हैं॥
पूजकर ऐसे जिनेश्वर सिद्ध कर लो साध्य को।
सो अर्चना में अर्घ अर्पित हो नमोस्तु आप को॥३॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री जिनेशनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

स्वामी प्रलम्ब जिनेन्द्र अपने आप में जब रत हुए।
उपसर्ग संकट कर्म सारे शीघ्र नत मस्तक हुए॥

तो भक्त कैसे ना झुकें जब लक्ष्य सांचे आप हो।
सो अर्चना में अर्घ अर्पित हो नमोस्तु आप को॥४॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री प्रलम्बनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हो आप ही पृथ्वीपति प्रभु तो कहाँ अब घूमना।
ले अष्ट द्रव्यों का साहरा आपको बस पूजना॥
हो पूज्य की पूजा तभी तो पूज्य पदवी प्राप्त हो।
सो अर्चना में अर्घ अर्पित हो नमोस्तु आप को॥५॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री पृथ्वीपनिाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

चारित्र निधि की सन्निधि हो बस यही अरदास की।
ले लो परीक्षा हर तरह से भक्त होगा पास ही॥
चारित्र की निधि धार की फिर तोड़ दे हर पास को।
सो अर्चना में अर्घ अर्पित हो नमोस्तु आप को॥६॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री चारित्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

परमेश अपाजित तुम्हारी साधना की सैन्य ने।
ब्रह्मास्त्र से जय प्राप्त की सो पूज्य जैनाजैन से॥
हम भी करें अंतर रिपु जय आप अपनी सैन्य दो।
सो अर्चना में अर्घ अर्पित हो नमोस्तु आप को॥७॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री अपराजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हे सुबोधक नाथ हमको बोध हमको दीजिए।
संसार में अब हम न भटकें गोद अपनी लीजिए॥
सो शोध आतम का करें हम दूर कर दो क्रोध को।
सो अर्चना में अर्घ अर्पित हो नमोस्तु आप को॥८॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री सुबोधकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

(हाकलिका)

हे! बुद्धीश नाथ स्वामी, तुम तो हो अंतरयामी।
हुए चराचर के ज्ञानी, मोक्ष महल के विश्रामी॥
कमी हमारी माफ करो, बुद्धि हमारी साफ करो।
अर्घ चढ़ायें चरणों में, करें नमोस्तु चरणों में॥९॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री बुद्धीशनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री वैतालिक नाथ तुम्हीं जगत ताल जब नहीं जमी।
तो संगीत सुना निज का सो आसन डोला शिव का॥
सुर निकलें शुद्धातम के, हम चरणों में आ धमके।
अर्घ चढ़ायें चरणों में, करें नमोस्तु चरणों में॥१०॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री वैतालिकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

स्वामी त्रिमुष्टि नाथ रहे, जग उनकी क्या बात कहें।
तीन लोक में उन सा कौन, उपमाएं सब होती मौन॥
पंच मुष्टि सौभाग्य मिले, सिंहासन पर कमल खिले।
अर्घ चढ़ायें चरणों में, करें नमोस्तु चरणों में॥११॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री त्रिमुष्टिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री मुनिबोध नाथ रसिया, संत जनों के मन बसिया।
फिर भक्तों का क्या कहना, प्रभु के द्वार पड़े रहना॥
आज ना कल तो तारोगे, हमको पार उतारोगे।
अर्घ चढ़ायें चरणों में, करें नमोस्तु चरणों में॥१२॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री मुनिबोधनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूज्य तीर्थ स्वामी जिनवर, साँचे तुम्हीं तीर्थ ईश्वर।
जितने नभ में ना तारे, उतने तो तुमने तारे॥
देर लगा दी क्यों हमको, खबर नहीं है क्या तुमको।
अर्घ चढ़ायें चरणों में, करें नमोस्तु चरणों में॥१३॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री तीर्थनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

कोई विषयों को चाहें, विष पी कोई भरें आहें।
पर जो धर्म बुद्धि पाता, धर्मधीश प्रभु बन जाता॥
हम बस धर्म बुद्धि चाहें, अतः निहारें प्रभु राहें।
अर्घ चढ़ायें चरणों में, करें नमोस्तु चरणों में॥१४॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री धर्मधीशनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री धरणेश नाथ प्यारे, भू नभ जिनको सत्कारें।
फिर भी प्रभु निज में रमते, अतः खूब हमको जमको॥
हमें जमा लो चरणन में, सो रम जाएं आतम में।
अर्घ चढ़ायें चरणों में, करें नमोस्तु चरणों में॥१५॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री धरणेशनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

प्रभव देव का भव टूटा, मुक्ति वधू ने यश लूटा।
भाग्य भक्त जन का फूटा, साथ आपका ज्यों छूटा॥
आप हमारी बिगड़ी को, शीघ्र बना लो जोड़ी को।
अर्घ चढ़ायें चरणों में, करें नमोस्तु चरणों में॥१६॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री प्रभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

(धत्तानन्द)

हे! देव अनादि, आतम स्वादी, आधि व्याधि दूर करें।
हम अर्घ चढ़ायें शान्ति पायें, अतः नमोस्तु खूब करें॥१७॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री देवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हे! प्रभु अनादि, कर्म अनादि, तुम सम हम भी दूर करें।
हम अर्घ चढ़ायें, शान्ति पायें, अतः नमोस्तु खूब करें॥१८॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री प्रभुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

प्रभु सर्व तीर्थ हो, धर्म तीर्थ हो, निज पर का उद्धार करें।
हम अर्घ चढ़ायें, शान्ति पायें, अतः नमोस्तु खूब करें॥१९॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री सर्वतीर्थनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हे! निरूपम देवा, दो निज मेवा, हम भी आतम स्वाद चखें।
हम अर्घ चढ़ायें, शान्ति पायें, अतः नमोस्तु खूब करें॥२०॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री निरूपमनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

कौमारिक स्वामी, आत्म विरामी, क्रीड़ा मुक्ति संग करें।
हम अर्घ चढ़ायें, शान्ति पायें, अतः नमोस्तु खूब करें॥२१॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री कौमारिकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

विहार गृह नाथा, तुम तो नाता, अपना अपने साथ रखें।
हम अर्घ चढ़ायें, शान्ति पायें, अतः नमोस्तु खूब करें॥२२॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री गृहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

धरणीश्वर ईशा, दो आशीषा, लोक शीश हम प्राप्त करें।
हम अर्घ चढ़ायें, शान्ति पायें, अतः नमोस्तु खूब करें॥२३॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री धरणीश्वरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

प्रभु विकास देवा, तेरी सेवा, निज अभिलाषी लोग करें।
हम अर्घ चढ़ायें, शान्ति पायें, अतः नमोस्तु खूब करें॥२४॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री विकासनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

यह हृदय हमारा, धाम तुम्हारा, मंदिर जैसा बन जाए।
प्रभु चरण रखो तो, तनिक लखो तो, तीरथ जैसा बन जाए॥
यह अरज हमारी, देर तुम्हारी, अब हम ना बर्दास्त करें।
हम अर्घ चढ़ायें शान्ति पायें, अतः नमोस्तु, खूब करें॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

अर्घ्यावली—२०

(त्रिभंगी)

प्रभु जगन्नाथ हैं, सदा साथ हैं, अतः माथ हैं सदा झुकें।
जो कमलासीना, नभ आसीना, जिन बिन जीना, किसे रुचें॥
दें सात सुभंगी, भंग अभंगी, ब्रह्मानन्दी, सीख हमें।
सो नाच बजा के, अर्घ चढ़ा के, करें नमोस्तु, शीघ्र तुम्हें॥१॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री जगन्नाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हे प्रभास देवा, तुमरी सेवा, देते मेवा आतम के।
बस इसी चाव से, दूर गांव से, भक्त भाव से, आ धमके॥
प्रभु साथ न छूटे, आश न टूटे, भक्त न रूठे, चरणन में।
सो नाच बजा के, अर्घ चढ़ा के, करें नमोस्तु, शीघ्र तुम्हें॥२॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री प्रभासदेव जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

स्वर स्वामी नाथा, पाने साता, तुमने नाता तोड़ दिये।
सो तुमसे नाता, धर्मी भ्राता, गाकर गाथा जोड़ लिये॥
तुम लखो जड़ाजड़, जानो कण कण, भक्ति के स्वर, मात्र मिलें।
सो नाच बजा के, अर्घ चढ़ा के, करें नमोस्तु, शीघ्र तुम्हें॥३॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री स्वरस्वामीनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

भरतेश जिनेश्वर, आप महेश्वर, हो सर्वेश्वर, निज पर के।
फिर भी निज रागी, हो वैरागी, सर्वस त्यागी, पर घर के॥
पर हम ना भूलें, चरणा छूलें, महकें फूलें, पाय तुम्हें।
सो नाच बजा के, अर्घ चढ़ा के, करें नमोस्तु, शीघ्र तुम्हें॥४॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री भरतेशनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

दीर्घानन स्वामी, मोक्ष विरामी, जग कल्याणी, वरदानी।
कर्मों को काटो, सब को बाँटो, हमको डाँटो क्यों स्वामी॥
अब दो शिवपुर जी ऐसी अर्जी, पूरी मर्जी आप करे।

सो नाच बजा के, अर्घ चढ़ा के, करें नमोस्तु, शीघ्र तुम्हें॥५॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री दीर्घाननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

विख्यात कीर्ति हो, गए मुक्ति को, उसी युक्ति को दो हमको।
हर वस्तु पाई, मुक्ति न पाई, अतः रचाई पूजन को॥
उसका फल पाकर बने मुनीश्वर, फिर बन जिनवर मिलें जहाँ।
सो नाच बजा के, अर्घ चढ़ा के, करें नमोस्तु, शीघ्र तुम्हें॥६॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री विख्यातकीर्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हे! प्रभु अवसानी, केवलज्ञानी, आतमध्यानी बने जहाँ।
सो कर्म काँपते, भक्त नाचते, कथा वाँचते, मिलो जहाँ॥
अब स्वयं खोजने, चरण पूजने, कर्म काटने, नमें तुम्हें।
सो नाच बजा के, अर्घ चढ़ा के, करें नमोस्तु, शीघ्र तुम्हें॥७॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री अवसानीनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हे! प्रबोध जिनवर, मुक्ति स्वयंवर, तुम तो रच कर मौक्ष गए।
क्या मुक्ति वरण कर, निज में रम कर, भक्तों के हार, भूल गए॥
हम याद दिलाने, तुम्हें मनाने, भक्ति रचाने, झुके तुम्हें।
सो नाच बजा के, अर्घ चढ़ा के, करें नमोस्तु, शीघ्र तुम्हें॥८॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री प्रबोधनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

(चौपाई)

तपोनाथ हैं परम तपस्वी चेतन चमकायें तेजस्वी।
भक्त मनस्वी बनने आये करके नमोस्तु अर्घ चढ़ायें॥९॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री तपोनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पावक नाथ ध्यान पावक से कर्म जला के मिले स्वयं से।
हम निज से निज मिलने आये करके नमोस्तु अर्घ चढ़ायें॥१०॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री पावकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

त्रिपुरेश्वर प्रभु परमेष्ठी चरणों में झुकते हर श्रेष्ठी।
हम झुक कर शिव तक उठ जाए, करके नमोस्तु अर्घ चढ़ायें॥११॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री त्रिपुरेश्वरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

सौगात प्रभु का स्वागत करके निज का स्वागत हो पद भजके।
ब्रह्मानन्दी हम बन जाए, करके नमोस्तु अर्घ चढ़ायें॥१२॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री सौगातनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

वासव नाथ निरम्बर ज्ञानी,अतः आप पर मुक्ति रिझानी।
हम भी तुम्हें रिझाने आये, करके नमोस्तु अर्घ चढ़ायें॥१३॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री वासवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

आप मनोहर नाथ सुहाये, चोरी तज, जग चित्त चुराये।
लुटे पिटे हम क्या कर पायें, करके नमोस्तु अर्घ चढ़ायें॥१४॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री मनोहरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री शुभकर्म ईश भगवंता, हो सर्वज्ञ अनन्तानन्ता।
ज्ञान चेतना हम भी पायें, करके नमोस्तु अर्घ चढ़ायें॥१५॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री शुभकर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

करो इष्टसेवित की सेवा, वो बनते देवों के देवा।
भक्त इष्ट बनने ललचायें, करके नमोस्तु अर्घ चढ़ायें॥१६॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री इष्टसेवितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

(उग्गाहा)

विमलेन्द्र नाथ साँचे, मुक्ति जिन्हें अपनाए बिन जाँचे।
हम अर्घ चढ़ा नाँचे, करके नमोस्तु गाथा भी बाँचें॥१७॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री विलेन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री धर्मवास स्वामी, निज रस को बने धर्म अनुरागी।
हम अर्घ अर्पयामी, करके नमोस्तु बनें मुक्ति धामी॥१८॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री धर्मवासनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

प्रसाद नाथ जिनन्दा, जो तुम पाए दो वह आनन्दा।
अर्घ चढ़ाये बन्दा, करें नमोस्तु बने ब्रह्मानन्दा॥१९॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री प्रसादनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

प्रभा मृगांक जिनेशा, निजानन्द में हो लीन हमेशा।
अर्पें अर्घ विशेषा, करते नमोस्तु बनने को परमेशा॥२०॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री प्रभामृगांकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

उज्झितकलंक देवा, देख साधना करता जग सेवा।
यह अर्घ करे सेवा, करके नमोस्तु चखने पद मेवा॥२१॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री उज्झितकलंकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

स्फटिक प्रभु परमेश्वर, बने दिगम्बर धर्मेश्वर जिनवर।
तुमको अर्घ चढ़ाकर, करते नमोस्तु पाने को शिवपुर॥२२॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री स्फटिकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

प्रभु गजेन्द्र जिनराजा, जब कर्मों के बजा दिए बाजा।
अर्घ चढ़ायें राजा, नमोस्तु करके मिलता शिवसाजा॥२३॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री गजेन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूज्य ध्यानजय नाथा, विषय विकारों के विजय प्रदाता।
सोंपें अर्घ विधाता, करके नमोस्तु पायें सुख साता॥२४॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री ध्यानजयनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

चौबीसी शिववासी, तुम तो हो ज्ञानानन्द विलासी।
भक्ति तुम्हारी दासी, करके नमोस्तु दर्शन की प्यासी॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

अर्घ्यावली—२१

(अडिल्ल)

श्री बसंतध्वज नाथ जिनेश्वर आप हो।
धर्म ध्वजा फहरायी हर कर पाप को॥
निज का बसंत पाने हम भी, आ गए।
करें नमोस्तु अर्घ चढ़ा गुण गा रहे॥१॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री बसंतध्वजनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री त्रिजयंत नाथ विज्ञानी, ज्ञान दो।
अपने जैसी विजय प्राप्ति का यान दो॥
निज पर निज जय पाने हम भी आ गए।
करें नमोस्तु अर्घ चढ़ा गुण गा रहे॥२॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री त्रिजयंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री त्रिस्तंभ नाथ निज ध्यानी, ध्यान दो।
द्रव्य भाव नौ कर्म तैरने, थाम लो॥
इनको हर रत्नत्रय पाने, आ गए।
करें नमोस्तु अर्घ चढ़ा गुण गा रहे॥३॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री त्रिस्तंभनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री परब्रह्मनाथ परमातम पा गए।
ब्रह्मानन्दी बनकर निज को ध्या रहे॥
परम ब्रह्म को पाने हम भी आ गए।
करें नमोस्तु अर्घ चढ़ा गुण गा रहे॥४॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री परब्रह्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूज्य अबालिश नाथ बाल पथ तज दिया।
तभी आपको मुक्ति वधू ने भज लिया॥
लाल तुम्हारे बनने हम भी आ गए।
करें नमोस्तु अर्घ चढ़ा गुण गा रहे॥५॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री अबालिशनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूज्य प्रवादी नाथ निराला पथ चुने।
दिव्य देशना तभी आप की, जग सुने॥
ब्रह्म तत्त्व को हम भी गुनने, आ गए।
करें नमोस्तु अर्घ चढ़ा गुण गा रहे॥६॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री प्रवादीनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

भूमानन्द मिले तो क्यों जग घूमना।
निजानन्द इन जैसा पाकर झूमना॥
जिनवर की भू हम भी छूने आ गए।
करें नमोस्तु अर्घ चढ़ा गुण गा रहे॥७॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री भूमानन्दनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

ज्ञान नयन त्रिनयन नाथ जी पा गए।
तभी भ्रमण तज निज में निज तुम छा गए॥
ज्ञान नयन खुलवाने हम भी आ गए।
करें नमोस्तु अर्घ चढ़ा गुण गा रहे॥८॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री त्रिनयननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

वीतराग विद्वान नाथ जी जिनवरम्।
किया ज्ञान उपयोग मिला सो निज धरम॥
बनने निज विद्वान भक्त हम, आ गए।
करें नमोस्तु अर्घ चढ़ा गुण गा रहे॥९॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री विद्वाननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री परमात्म प्रसंग नाथ जी शुद्ध है।
निज के ज्ञाता ही कहलाते बुद्ध हैं॥
स्वयं बुद्ध बनने को हम भी आ गए।
करें नमोस्तु अर्घ चढ़ा गुण गा रहे॥१०॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री प्रसंगनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री भूमीन्द्र नाथ जी तरुवर सौख्य के।
सचमुच हो निर्माता निज के मोक्ष के॥
हे! इन्द्रों के इन्द्र हमें तुम भा गए।
करें नमोस्तु अर्घ चढ़ा गुण गा रहे॥११॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री भूमीन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

ओ स्वामी जी, गो स्वामी जी तुम रहे।
भो स्वामी जी हमारी क्यों न सुन रहे॥
हितोपदेशी को सुनने हम आ गए।
करें नमोस्तु अर्घ चढ़ा गुण गा रहे॥१२॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री गोस्वामी जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

(काव्य रोला)

कल्याण प्रकाशित नाथ, तुमहीं करुणा अवतारी।
करुणा की बरसात, करो हम हैं संसारी॥
हो जाये कल्याण, हमें दो ऐसी वस्तु।
अर्घ चढ़ायें आज, करें हम तुम्हें नमोस्तु॥१३॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री प्रकाशितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जिनवर मंडल नाथ, महात्मा बने महेशा।
नभ मंडल नत माथ, हुए जब बने जिनेशा॥
पिछि कमण्डल हाथ, हमें बस दे देना तू।
अर्घ चढ़ायें आज, करें हम तुम्हें नमोस्तु॥१४॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री मंडलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूज्य महावसु नाथ, झराते वीतरागता।
झर झर झरे पराग, तुम्हीं से धर्म जागता॥
हम भी जागें नाथ, ज्ञान की छींटे दे तू।
अर्घ चढ़ायें आज, करें हम तुम्हें नमोस्तु॥१५॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री महावसुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

उदयवान भगवान, भक्ति की किरण दिखाते।
भक्ति शक्ति दे देना, तत्त्व की राह दिलाते॥
ज्ञानोदयी प्रकाश हमारे उर में भर तू।
अर्घ चढ़ायें आज, करें हम तुम्हें नमोस्तु॥१६॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री उदयवाननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

दिव्य ज्योति तीर्थेश, दिये तुम धर्म ज्योति को।
आत्म ज्योति परमेश, हमारी परम ज्योति हो॥
चिच्च जयोति हम पांए, हमें दे दिव्य ज्योति तू।
अर्घ चढ़ायें आज, करें हम तुम्हें नमोस्तु॥१७॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री दिव्यज्योतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

प्रबोधेश परमेष्ठि, आप परमेष्ठी साँचे।
तीर्थंकर हो श्रेष्ठ, भक्त तुमको पा नाँचे॥
आतम का हो शोध, बोध निज का जिन दे तू।
अर्घ चढ़ायें आज, करें हम तुम्हें नमोस्तु॥१८॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री प्रबोधेशनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री अभयांक जिनेश, महोदय भय के हारी।
अभय दान दो ईश, स्वयं के तुम अधिकारी॥
हमको दो निज गोद, हम भी करें जयोस्तु।
अर्घ चढ़ायें आज, करें हम तुम्हें नमोस्तु॥१९॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री अभयांकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

अमित नाथ जिनराज, असीमित आप रहे हो।
भक्तों के सरताज, कर्म दु:ख पाप हरे हो॥
मुक्ति का साम्राज्य, दिलाने कहो तथास्तु।
अर्घ चढ़ायें आज, करें हम तुम्हें नमोस्तु॥२०॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री अमितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

दिव्य स्फारक नाथ, दिव्य नेत्रों के धारी।
वो हो जाये पार नजर, हो जिधर तुम्हारी॥
नजरें हम पर होंय कहो समृद्धिरस्तु।
अर्घ चढ़ायें आज, करें हम तुम्हें नमोस्तु॥२१॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री स्फारकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

व्रत स्वामी सर्वज्ञ हमें व्रत दान दिला दो।
फँसी भंवर में नाव हमारी पार लगा दो॥
तारण तरण जहाज कहो, कल्याणम् अस्तु।
अर्घ चढ़ायें आज, करें हम तुम्हें नमोस्तु॥२२॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री व्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

स्वामी निधान नाथ, खजाने रहे तत्त्व के।
मुक्ति वधू के नाथ, प्राण हो भक्त जगत के॥
हमें दिलाकर होश, कोश दो पुष्टिरस्तु।
अर्घ चढ़ायें आज, करें हम तुम्हें नमोस्तु॥२३॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री निधाननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूज्य त्रिकर्मानाथ, कर्म तुम सारे छोड़े।
हमें न छोड़ो नाथ, हाथ भक्तों ने जोड़े॥
विनती हो मंजूर, समाधि हो सुखमस्तु।
अर्घ चढ़ायें आज, करें हम तुम्हें नमोस्तु॥२४॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री त्रिकर्मानाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

निज की ना पहचान, अतः हम मन्दिर आये।
पूज तुम्हें भगवान, हृदय में चरण बसाये॥
करें आपका ध्यान मिलें, तुमसी निज वस्तु।
अर्घ चढ़ायें आज करें हम तुमहें नमोस्तु॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं ...।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

तीन काल की अर्चना, चौबीसी के नाम।
जयमाला अब हम करें पहले करें प्रणाम॥

(ज्ञानोदय)

लोकालोक तीन कालों में, जितने द्रव्य पदार्थ रहे।
अस्तिकाय सब और तत्त्व जो, उनमें क्या परमार्थ रहे॥
सारभूत क्या इस दुनिया में, सबका मंगल कैसे हो।
कैसे हो कल्याण विश्व का, आकुल वयाकुल ऐसे हो॥१॥

दुखी जीव सब शीघ्र सुखी हों, भटके मंजिल पायें।
रोगी जल्दी बनें निरोगी, दीन हीन संबल पायें॥
अज्ञानी बन जायें ज्ञानी, पाप व्यसन सब नश जायें।
कष्ट दर्द सबके मिट जायें, आतम परमातम ध्यायें॥२॥

मोह हरें सब मोक्ष चलें सब, धर्म धारकर कर्म हरें।
मंगल मंगल इन भावों से, जो प्राणी निज मनन करें॥
शीघ्र वही वैराग्य धारकर, तीर्थंकर बन जाते हैं।
कर न सके कल्याण विश्व का, किन्तु मोक्ष पा जाते हैं॥३॥

तीन काल में जो चौबीसी, होती है जिनशासन से।
उनकी पूजन पाठ रचायें, भक्तों के अनुशासन से॥
उनसे केवल यही प्रार्थना, चरण शरण में बुलवाओ।
अगर न ऐसा कर पाओ तो, भक्त हृदय में बस जाओ॥४॥

अगर हृदय में बस जाओगे, तो अनन्त सुख हम पायें।
यदि न वसे तो अनन्त दुख भी, हमें आप बिन तड़पायें।
मंजिल दूर सफर है लंबा, अतः कृपा करते रहना।
'सुव्रत' बने न जब तक तुम सम, अपनी छाँव किये रखना॥५॥

(सोरठा)

पायें मोक्ष निवास, आकुल व्याकुल भाव तज।
बढ़े आत्म विश्वास, तीर्थंकर चौबीस भज॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें तीस चौबीसियाँ, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दें, हम पूजत भगवान॥

(शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुखों को मेंट दो, चौबीसी जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

(हरीगीतिका)

तीर्थंकरों के चक्र में जो, तीस चौबीसी भजें।
वो दूर दुख दारिद्र करने, पुण्य धन अर्जन करें॥
पा गुरु कृपा 'सुव्रत' धरें, अध्यात्म की विद्या चखें।
आशीष दो कि विधान करके हम नमोस्तु कर सकें॥

(इत्याशीर्वाद)

पूजन–८

पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधी ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रिकाल चौबीसी पूजन

स्थापना

(दोहा)

पुष्करार्ध के पूर्व के, ऐरावत के ईश।
चौबीसों त्रय काल के, उन्हें नवायें शीश॥

(ज्ञानोदय)

पंचम काल यहाँ पर पाना, कितना दुर्लभ धर्म हुआ।
न प्रत्यक्ष मिले अरिहन्ता, ना परमातम रूप हुआ॥
लेकिन मोक्ष मार्ग तो पाया, नाम बिम्ब भी पायें हम।
सो आतम परमातम पाने, पूजन पाठ रचायें हम॥

(दोहा)

चौबीसी सम चेतना, हो हम सब को प्राप्त।
सो मन मन्दिर में बसो, दूरी करो समाप्त॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरः अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ...। अत्र मम् सन्निहितो...।

(पुष्पांजलिम्)

(स्त्रग्विणी)

जन्म मृत्यु सताते हैं संसार में।
हम चले आए जिससे प्रभु द्वार में॥
अब नमोस्तु करें नीर धारा दिये।
हे प्रभु! हमको अपनी शरण लीजिए॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं...।

जग के संबंध रिश्ते सभी द्वन्द्व हैं।
मात्र आतम जिनातम में आनन्द हैं॥
अब नमोस्तु करें भेंट चन्दन किये है।
हे प्रभु! हमको अपनी शरण लीजिए॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं...।

विश्व में जैन शासन की सांची शरण।
पूजते हम तभी तो तुम्हारे चरण॥
अब नमोस्तु करें पुंज उज्ज्वल लिये।
हे प्रभु! हमको अपनी शरण लीजिए॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

अर्चना आपकी सब हरे वासना।
जो हमें भेंट दे, आत्म की साधना॥
अब नमोस्तु करें पुष्प उत्तम लिये।
हे प्रभु! हमको अपनी शरण लीजिए॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

आतमा का निजानन्द पकवान दो।
सो मानते हम चौबीस भगवान को॥
अब नमोस्तु करें भेंट नैवेद्य लिये।
हे प्रभु! हमको अपनी शरण लीजिए॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधा रोग विनाशाय नैवेद्यं...।

दीप ज्योति जले, पाप का तम टले।
ज्ञान ज्योति जलाने महा पथ मिले॥
अब नमोस्तु करें दीप प्रज्ज्वल लिए।
हे प्रभु! हमको अपनी शरण लीजिए।

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

धूप बाहर जलें कर्म अन्दर जलें।
आपके पंथ पर दौड़ के हम चलें॥
अब नमोस्तु करें धूप सौरभ लिये।
हे प्रभु! हमको अपनी शरण लीजिए॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्ट कर्म विनाशनाय धूपं...।

नीम से नीम हो आम से आम हो।
राग से मोह हो ध्यान से मोक्ष हो॥
अब नमोस्तु करें मोक्ष फल के लिये।
हे प्रभु! हमको अपनी शरण लीजिए॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्ष फल प्राप्तये फलं...।

मीन पानी को अपना समर्पण करे।
और उल्टी दिशा में विजय भी करे॥
अब नमोस्तु करें अनर्घपद के लिए।
हे प्रभु! हमको अपनी शरण लीजिए॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिन: ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

पुष्करार्ध के पूर्व के ऐरावत क्षेत्रस्थ।
त्रयकालिक तीर्थंकरा, पूजि रहते स्वस्थ॥
धर्म चक्र के रूप, वे चिदानन्द चैतन्य।
उनकी गा जयमालिका हम भी होंगे धन्य॥

(ज्ञानोदय)

पाप रूप जो कर्म मलों को धोने के इच्छुक होते।
करके पूजा धर्मामृत को पाने के भिक्षुक होते॥
यह भिक्षा बस जिनशासन के अनुचर ही वे पाते हैं।
नग्न दिगम्बर तीर्थंकर वे शासन तीर्थ चलाते हैं॥१॥

जिनके गुण गाकर के हमको शासन में अवगाह मिले।
पुद्गल तजने पुद्गल वाली पुण्य वर्गणा राह मिले॥
अतीत के कृतिनाथ जिनेश्वर, अन्तिम बिम्बित नाथ रहे।
वर्तमान के शंकर प्रभु से, अन्तिम ब्रह्मजनाथ॥२॥

भाविकाल के नाथ यशोधर, अन्तिम सुप्रदेश नाथ रहे।
पूज्य बहत्तर त्रयकालिक प्रभु, जिनके पद में माथ रहे॥
भक्ति अर्चना जिनकी करके ग्रह परिग्रह का भय भागे।
रोग शोक की पीड़ा ना हो, भक्तों की किस्मत जागे॥३॥

दूर उपद्रव हिंसक के हों, वध बन्धन बाधा छूटें।
और अधिक क्या कहें भक्ति से, कर्मों की कड़ियाँ टूटें॥
तीर्थंकर के पूर्व यही थे, व्यर्थ विभावी बहिरात्म।

किन्तु इन्होंने मन मन्दिर में, ज्यों ही खोजा परमात्म॥४॥

त्यों ही बनकर अन्तर आत्म, शुद्धात्म का मनन किया।
उच्चासन पर हुए विराजित, मुमुक्षुजन ने नमन किया॥
व्यर्थ हमारा भी जीवन है, सार्थक सफल बनाने को।
हम भी करें आप पर श्रद्धा, तुम सम आत्म पाने को॥५॥

दर्शन पूजन भक्ति ध्यान से, लगता जीवन सफल मिला।
जिन शासन जयवन्त देखकर, वज्र कर्म का शिखर हिला॥
हे प्रभु! वह चाबी दो जिससे, मोक्ष महल का खुले किला।
'सुव्रत' वह पाने ललचाये, जो तुमको अध्यात्म मिला॥

(सोरठा)

निजानन्द रसलीन, त्रय चौबीसी नाथ हैं।
उन सम बने प्रवीण, झुक जाते सो माथ हैं॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतर्विंशंति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें तीस चौबीसियाँ, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दें, हम पूजत भगवान॥

(शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुखों को मेंट दो, चौबीसी जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

अर्घ्यावली—२२

(चौपाई)

परम पूज्य कृति नाथ हमारे, आप स्वयं के हुए सहारे।
हम कृत कृत्य प्रभु हो जायें, नमोस्तु हम कर अर्घ्य चढ़ायें॥१॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री कृतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री उपविष्ट नाथ तीर्थंकर, इष्ट भक्त के हो क्षेमंकर।
हम को अपने पास बुलायें, नमोस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ायें॥२॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री उपविष्टनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

देवादित्य नाथ जिन राई, जिन शासन की ध्वज फहराई।
जिन सम ज्ञानादित्य उगायें, नमोस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ायें॥३॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री देवादित्यनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री आस्थानिक नाथ निराले, आस्था सयंम के रख वाले।
हम सम्यकत्व निलय पा जायें, नमोस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ायें॥४॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री आस्थानिकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

स्वामी प्रचन्द्र नाथ चिदातम, चारु चन्द्र सम हो सिद्धात्म।
सुन्दर सी चैतन्य दिलायें, नमोस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ायें॥५॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री प्रचन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

वेषिक प्रभु हो अंतर्यामी, लोकालोक निहारें स्वामी।
तनिक भक्त पर नजर घुमायें, नमोस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ायें॥६॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री वेषिकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

स्वामी त्रिभानु नाथ उजालें, रत्नत्रय रवि देने वाले।
अन्तस् अन्ध दूर करवायें, नमोस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ायें॥७॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री त्रिभानुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

ब्रह्मनाथ सर्वज्ञ हितैषि, तुम अरहंत सिद्ध के वेशी।
अपने देश हमें बुलवायें, नमोस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ायें॥८॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री ब्रह्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

वीतराग वज्रांग नाथ जी, वज्र अंग को लिए साथ ही।
वज्र कपाट मोक्ष खुलवायें, नमोस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ायें॥९॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री वज्रांगनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

प्रभु अविरोधी तुम कहलाते, शत्रु मित्र में फर्क न लाते।
हमको ऐसी कला सिखायें, नमोस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ायें॥१०॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री अविरोधीनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जिनवर अपाप नाथ जिनेश्वर, पुण्य फला कहलाते ईश्वर।
पाप व्यसन सब दूर भगायें, नमोस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ायें॥११॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री अपापनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

लोकोत्तर प्रभु पाए चेतना, लोकोत्तर कर आत्म साधना।
चत्तारी लोगोत्तम पायें, नमोस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ायें॥१२॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री लोकोत्तरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

(लय-नंदीश्वर श्री जिन धाम...अवतार छन्द)

श्री जलधिशेष जिननाथ, भव जल के तीरा।
कुछ हम से कर लो बात, तुम तो हो हीरा॥
सुन श्रद्धा भरी पुकार, तारो नाथ हमें।
ले अर्घ्य करें सत्कार, करके नमोस्तु तुम्हें॥१३॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री जलधिशेषनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

विद्योत नाथ जगदीश, विद्यारथ पाये।
फिर गये लोक के शीश, परमारथ पाये॥
ओ! विद्यारथ दातार, करो सवार हमें।
ले अर्घ्य करें सत्कार, करके नमोस्तु तुम्हें॥१४॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री विद्योतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

सर्वेश सुमेरु नाथ, सागर से गहरे।
सुमेरु से ऊँचे आप, फिर भी निज ठहरे॥
हम डिगे न सहकर मार, दो सकंल्प हमें।
ले अर्घ्य करें सत्कार, करके नमोस्तु तुम्हें॥१५॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री सुमेरुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री पूज्य विभावित नाथ, भाव स्वरूपी हो।
जो करे भाव दिन रात, निज चिद्रूपी हो॥
हों दूर विभाव विकार, दो यों भाव हमें।
ले अर्घ्य करें सत्कार, करके नमोस्तु तुम्हें॥१६॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री विभावितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री वत्सल नाथ महान, निज पर के उपकारी।
रखते हो सबका ध्यान, आतम अधिकारी॥
गौ बछड़े जैसा प्यार, दे दो नाथ हमें।
ले अर्घ्य करें सत्कार, करके नमोस्तु तुम्हें॥१७॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री वत्सलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जयवन्त जिनालय नाथ, हो सबसे सुन्दर।
मंगल शरणोत्तम आप, चेतन के मंदिर॥
हे! मोक्ष महल आधार, दो निज छांव हमें।
ले अर्घ्य करें सत्कार, करके नमोस्तु तुम्हें॥१८॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री जिनालयनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हे! तीरथ तुषार नाथ, भव संसार तजें।
भव्यों को दे सौगात, आतम ब्रह्म भजें॥
दो सार सार सरकार, दो न विसार हमें।
ले अर्घ्य करें सत्कार, करके नमोस्तु तुम्हें॥१९॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री तुषारनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जय पूज्य भुवन स्वामीश, त्रिभुवन के स्वामी।
फिर भी हो आत्माधीश, निज के विश्रामी॥
हम खोजें तेरा द्वार, दो निज पता हमें।
ले अर्घ्य करें सत्कार, करके नमोस्तु तुम्हें॥२०॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री भुवननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री सुकाय प्रभु के अंग अंग निरख तो लो।
जिससे झलके आनन्द, थोड़ा चख तो लो॥
करने सुन्दर श्रृंगार, दे दो शान्ति हमें।
ले अर्घ्य करें सत्कार, करके नमोस्तु तुम्हें॥२१॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री सुकायनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

देवाधिदेव जिनराज, निज के रसिया हो।
हर दिल पा तेरा राज, शिव के वसिया हो॥
हमको भी करो दुलार, अपना समझ हमें।
ले अर्घ्य करें सत्कार, करके नमोस्तु तुम्हें॥२२॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री जिनराजनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

अर्हन्त अकारिम नाथ, आगम आप्त तुम्हीं।
संसार शोक आघात, किये समाप्त तुम्हीं॥
हो समवसरण साकार, दो वह दृष्टि हमें।
ले अर्घ्य करें सत्कार, करके नमोस्तु तुम्हें॥२३॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री अकारिमनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

बिंबित प्रभु की तस्वीर, निज तासीर कहे।
कर दर्श हुए तस्वीर, प्रभु तकदीर रहे॥
है बिम्ब अर्चना सार, दो जिन बिम्ब हमें।
ले अर्घ्य करें सत्कार, करके नमोस्तु तुम्हें॥२४॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री बिंबितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

गुरु करें कृपा आशीष, तो प्रभु कृपा करें।
सो कृपा करें चौबीस, तब ही मुक्ति वरें॥
निज शिष्य हमें स्वीकार, दो निज दर्श हमें।
ले अर्घ्य करें सत्कार, करके नमोस्तु तुम्हें॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतर्विंशंति तीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

अर्घ्यावली–२३

(लय-माता तू दया करके)

हो शंकर नाथ तुम्हीं, पापों का शमन किये।
सुख शान्ति जगत को दे, निज में तुम रमण किये॥
सो मुक्ति वधू आयी, झट नत नयना होकर।
हम अर्पित अर्घ्य करें, चरणों में नमोस्तु कर॥१॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री शंकरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हे अक्षवास स्वामी, तुम मोक्ष कक्ष पाये।
अध्यक्ष बनें निज के, सो समक्ष हम आये॥
हम अक्ष विजेता हों, जैनी दीक्षा लेकर।
हम अर्पित अर्घ्य करें चरणों में नमोस्तु कर॥२॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री अक्षवासनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री नग्न नाथ जिनवर, तुमने सब कुछ छोड़ा।
जब बने दिगम्बर तो, जग पूजन को दौड़ा॥
संकल्प विकल्प हरें, जिन रूप दिगम्बर धर।
हम अर्पित अर्घ्य करें, चरणों में नमोस्तु कर॥३॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री नग्ननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

नग्नाधिपति प्रभु की, सब करें चरण सेवा।
क्यों हम से दूर हुए, अध्यात्मिक रसिक देवा॥
प्रभु चिंता दूर करो, निज की निधियाँ देकर।
हम अर्पित अर्घ्य करें, चरणों में नमोस्तु कर॥४॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री नग्नाधिपतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

प्रभु रहे नष्ट पाखंड, दो पाप कर्म को दंड।
सो पायें रत्नकरण्ड, भोगो चैतन्य अखंड॥
वह एक बूँद दे दो, करुणाकर! करुणा कर।

हम अर्पित अर्घ्य करें, चरणों में नमोस्तु कर॥५॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री करुणाकरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हे स्वप्न वेद स्वामी, सर्वस देव साँचे।
आते न स्वप्न तुम्हें, हम स्वप्नों में नाचें॥
तीर्थंकर पदवी दो, माँ को स्वप्न देकर।
हम अर्पित अर्घ्य करें, चरणों में नमोस्तु कर॥६॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री स्वप्नवेदनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हे नाथ तपोधन जी, तुम परम तपस्वी हो।
हे अतुलवीर्य धारी, निज पर तेजस्वी हो॥
अब बनें यशस्वी हम, दो सम्यक तप जिनवर।
हम अर्पित अर्घ्य करें, चरणों में नमोस्तु कर॥७॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री तपोधननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हे पुष्पकेतु प्यारे, पुष्पों से कोमल हो।
चारित्र गंध धारी, कंचन से निर्मल हो॥
हम आतम पुष्प खिलायें, प्रभु छाँव आपकी पाकर।
हम अर्पित अर्घ्य करें, चरणों में नमोस्तु कर॥८॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री पुष्पकेतुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हे धार्मिक नाथ तुम्हें क्या भक्त भुला पाये।
क्या साँसों बिन जीवन, हम लोग चला पाये॥
तुम प्राण हमारे हो, विश्वास कहे खुलकर।
हम अर्पित अर्घ्य करें, चरणों में नमोस्तु कर॥९॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री धार्मिकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हे चंद्रकेतु जिनवर, तुम चंदा से चमको।
सबको शीतलता दे, पाये निज आतम को॥

चैतन्य चन्द्र पाये, चरणों के बन चाकर।
हम अर्पित अर्घ्य करें, चरणों में नमोस्तु कर॥१०॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री चंद्रकेतुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

अनुरक्त ज्योति प्रभुवर, तुम निज के हो स्वादी।
निज ज्योति जला बैठे, तज कर आधी व्याधी॥
निज ज्योति जलाये हम, अनुराग आप से कर।
हम अर्पित अर्घ्य करें, चरणों में नमोस्तु कर॥११॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री अनुरक्तज्योतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

प्रभु वीतराग बाबा, तुम निज के हो रागी।
हम तेरे रागी हो, बन जायें वैरागी।
बस राग आग तजने, हर दो यह मोह जहर।
हम अर्पित अर्घ्य करें, चरणों में नमोस्तु कर॥१२॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री वीतरागनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

(सखी)

उद्योत नाथ उजयारे, तुम दूर करो अंधियारे।
तुम चेतन गृह चमकाए, हम तुम्हें पूजने आये॥
तुम हम पर ध्यान जरा सा, कर दो चेतन उजरा सा।
खुश होकर अर्घ्य चढ़ायें, करके नमोस्तु गुण गाये।१३॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री उद्योतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हे तमोपेक्ष तीर्थंकर, हो आप हमारे शंकर।
तम पाप उपेक्षा हुआ ज्यों, अध्यात्म अपेक्षा हुआ त्यों॥
सुन के बस नाम तुम्हारा, दे मुक्ति इशारा।
खुश होकर अर्घ्य चढ़ायें, करके नमोस्तु गुण गायें॥१४॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री तमोपेक्षनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

मधुनाद नाथ विज्ञानी, कहलाते केवलज्ञानी।
जिनकी सुनकर के वाणी, झट आयी मुक्ति रानी॥
वह तुम्हें साथ ले लौटी, क्यों हमरी किस्मत फूटी।
खुश होकर अर्घ्य चढ़ायें, करके नमोस्तु गुण गायें॥१५॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री मधुनादनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

मरुदेव नाथ मंगल कर, तुम सभी अमंगल हर कर।
प्रभु हुए मांगलिक जैसे, अरंहत हुए हो वैसे॥
सो धरती अंबर गूँजे, चैतन्य प्राप्ति को पूजे।
खुश होकर अर्घ्य चढ़ायें, करके नमोस्तु गुण गायें॥१६॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री मरुदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

दमनाथ नाथ प्रभु दानी, है जग में अमर कहानी।
निधियाँ जग को दे डाली, सो जग में मने दीवाली॥
कुछ दान हमें भी दे दो, निज शरण हमें भी ले लो।
खुश होकर अर्घ्य चढ़ायें, करके नमोस्तु गुण गायें॥१७॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री दमनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री देव वृषभ जी स्वामी, हो सकल चराचर ज्ञानी।
कब आप मिलोगे हमको, यह हमें बता दो ध्यानी॥
ज्यों आप मिले मुक्ति से, हम मिले उसी युक्ति से।
खुश होकर अर्घ्य चढ़ायें, करके नमोस्तु गुण गायें॥१८॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री वृषभनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

तीर्थेश शिलातन हीरा, हो भव सागर के तीरा।
हमको भी पार उतारो, हे स्वामी तनिक निहारो॥
जो सिद्ध शिला तुम पाए, हम भी उस पर ललचाये।
खुश होकर अर्घ्य चढ़ायें, करके नमोस्तु गुण गायें॥१९॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री शिलातननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हे विश्वनाथ वैदेही, तुमको क्या बाँधे देही।
तुम विश्व शान्ति के रूपा, चिन्मय चैतन्य स्वरूपा॥
पथ विश्व शान्ति का कर दो, निज शान्ति भक्त में भर दो।
खुश होकर अर्घ्य चढ़ायें, करके नमोस्तु गुण गायें॥२०॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री विश्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हो महेन्द्र नाथ जी मुखिया, तुम उभय सुखों के सुखिया।
हम आप बिना है दुखिया, कब शुद्ध करोगे कुटिया॥
हम आये निकट तुम्हारे, या आओ हृदय हमारे।
खुश होकर अर्घ्य चढ़ायें, करके नमोस्तु गुण गायें॥२१॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री महेन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हे नंदनाथ आनंदी, तुम तो हो परमानंदी।
हम भक्तों को न डाँटो, आनंद तनिक तो बाँटो॥
तो भक्त बनेंगे ऐसे, भगवान बने तुम जैसे।
खुश होकर अर्घ्य चढ़ायें, करके नमोस्तु गुण गायें॥२२॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री नंदनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हो आप तमोहर योगी, अध्यात्म मनोहर भोगी।
हम सोच रहे है रोगी, यह आत्म स्वस्थ कब होगी॥
सब अंध हटे आतम के, सो भक्त यहाँ आ धमके।
खुश होकर अर्घ्य चढ़ायें, करके नमोस्तु गुण गायें॥२३॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री तमोहरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री ब्रह्मजनाथ निरंजन, जब हरे आत्म के अंजन।
अघ कर्म हुए सब भंजन, सो करते है चित्तरंजन॥
तज भक्त मनोरंजन हम, सो करे आपका दर्शन।
खुश होकर अर्घ्य चढ़ायें, करके नमोस्तु गुण गायें॥२४॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री ब्रह्मजनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

कितने तो अर्घ्य चढ़ाए, फिर भी तो मन अकुलाय।
पूर्णार्घ्य समर्पित करते, चौबीसी के पद भजते॥
रख लो प्रभु लाज हमारी, दो मोक्ष महल की गाड़ी।
खुश होकर अर्घ्य चढ़ायें, करके नमोस्तु गुण गाये॥.

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

अर्घ्यावली–२४

(सुविद्या)

पूज्य यशोधर नाथ यश रूपी, जिन पद पाये।
समवसरण में दिखी विभूति, ध्वज फहराये॥
ज्यों ही इसको तजें आप तो, मुक्ति आयी।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोस्तु, भक्ति छायी॥१॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री यशोधरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

सुकृतनाथ निरम्बर स्वामी, कमलासीना।
ब्रह्मानंदी लक्ष्य बिना अब, कैसा जीना॥
पाप त्याग ज्यों पुण्य किया तो, शक्ति आयी।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोस्तु, भक्ति छायी॥२॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री सुकृतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

अभयनाथ जब अभय बनें तब, आतम झलकी।
वे ही पाते मोक्ष जिन्हें ना चिंता कल की॥
बनने को अभय भक्त ने, अरज लगायी।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोस्तु, भक्ति छायी॥३॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री अभयनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

आप रहे निर्वाण नाथ जी, सिद्ध जिनालय।
जो निर्वाण चाहते बो तो, बोलें जय जय॥

पद निर्वाण चाहने, जय जयकार लगायी।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोस्तु, भक्ति छायी॥४॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री निर्वाणनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

परम पूज्य व्रतवास नाथ जी, व्रत के वासी।
निजानुभव में लीन, राह दो हमें जरा सी॥
तुम्हें देखकर याद हमें निज, आतम की आयी।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोस्तु, भक्ति छायी॥५॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री व्रतवासनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री अतिराज नाथजी करते, राज दिलों पर।
होकर दास जगत में हित है, प्रभु चरणों पर॥
राज आपका पाने हमने, आश लगाई।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोस्तु, भक्ति छायी॥६॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री अतिराजनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

अश्वदेव ने मन घोड़े का, मुख ज्यों मोड़ा।
समवसरण से मोक्ष महल, तक घोड़ा दौड़ा॥
तुम सम यात्रा को हम इसकी, करें पिटाई।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोस्तु, भक्ति छायी॥७॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री अश्वदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

अर्जुन नाथ स्वयं को पाने, लक्ष्य बनाए।
सो संकट उपसर्ग उन्हें तो, रोक न पाए॥
लक्ष्य सिद्ध करने को तुमसे, शिक्षा पाई।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोस्तु, भक्ति छायी॥८॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री अर्जुननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

तपश्यचंद्र ने सम्यक तप से, तपन नशाई।
तब ही ओजस्वी आतम की, बहार आई॥

यों बसंत अर्हंत संत की, हमको भायी।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोस्तु, भक्ति छायी॥९॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री तपश्यचंद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री शरीरिक नाथ हुए ना, लोक शरीरी।
सम्यक् कर उपयोग बने हो, ज्ञान शरीरी॥
ज्ञान शरीरी से मिलने की, जुगत लगाई।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोस्तु, भक्ति छायी॥१०॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री शरीरिकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

धार महाव्रत बने मुनीश्वर, फिर अर्हंता।
तभी महेशनाथ कहलाए, महा महंता॥
महा मनीषी बनने को, व्रत दो जिनराई।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोस्तु, भक्ति छायी॥११॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री महेशनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री सुग्रीवनाथ को ग्रीवा, हमने मोड़ी।
तुमसे करके राग लाज सब, हमने छोड़ी॥
पर को झुके न ग्रीवा, दो वह राह दिखाई।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोस्तु, भक्ति छायी॥१२॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री सुग्रीवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री पूज्य दृढ़ प्रहार नाथ के, व्रत प्रहार से।
कर्म शिलाएँ चटकीं, झलके मुक्ति प्यार से॥
विधि पर प्रहार करने को, जिन मूरत भायी।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोस्तु, भक्ति छायी॥१३॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री दृढ़प्रहारनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

अंबरीक प्रभु छाये रहते, भू अंबर में।
जगह हमें भी देना, अपने चरण कमल में॥

बने दिगम्बर अम्बर तज, सो दीक्षा भायी।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोस्तु, भक्ति छायी॥१४॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री अंबरीकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

दयातीत प्रभु परम दयालु, दया तीर्थ दें।
हम भक्तों पर दया धारकर, धर्म तीर्थ दें॥
सो भव से तिर मुक्तिवधू से, करें सगाई।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोस्तु, भक्ति छायी॥१५॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री दयातीतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

तुंबरनाथ हमें वर देकर, तत्त्व दीजिए।
निज सम मुक्ति मंदिर देकर, मुक्त कीजिए॥
तुम वर दाता से वर पाने, जनता आई।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोस्तु, भक्ति छायी॥१६॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री तुंबरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

सर्व शील प्रभु शील अठारह, हजार धारे।
तभी आपके गगन धरा में, गूँजे नारे॥
शील सुरक्षा अपनी करने, बने सहाई।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोस्तु, भक्ति छायी॥१७॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री सर्वशीलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

परमेष्ठी प्रतिजात नाथ जी, परम पिता हैं।
सबसे लाड़ प्यार जो करते, अतः हिता हैं॥
हम बच्चों की याद तुम्हें, फिर क्यों न आई।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोस्तु, भक्ति छायी॥१८॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री प्रतिजातनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूज्य जितेन्द्रिय नाथ आपने, निज की जीता।
सो चरणों का पराग यह, जग आकर पीता॥

तत्त्व ज्ञान की बूँद हमें, क्यों नहीं पिलाई।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोस्तु, भक्ति छायी॥१९॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री जितेन्द्रियनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

तपादित्य की देख साधना, अघ घबराये।
मिथ्या तम में भटके जन को, राह दिखाये॥
हम क्यों डरे नाथ जब तेरी, ज्योति पाई।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोस्तु, भक्ति छायी॥२०॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री तपादित्यनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री रत्नाकर नाथ तुम्हारे, रत्न अनोखे।
जड़ रत्नाकर दे न सकेगा, तुमको धोखे॥
अपने रत्न खोजने तुम सम, दुनियाँ आई।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोस्तु, भक्ति छायी॥२१॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री रत्नाकरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री देवेशनाथ स्वामी, देवों के देवा।
चित् चैतन्य विलास देख, सब करते सेवा॥
चिदानन्द की धार भक्त, पर क्यों न बहाई।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोस्तु, भक्ति छायी॥२२॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री देवेशनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

लांछनप्रभु ने जग लाँछन तो, सभी नशाये।
काँचन जैसी शुद्धातम को, तब ही पाए॥
लगे न लाँछन मौत भले दे, खड़ी दिखाई।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोस्तु, भक्ति छायी॥२३॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री लांछननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

सुप्रदेश प्रभु भेष दिगम्बर, ज्यों ही धारे।
निज के सभी प्रदेश चमकते, न्यारे प्यारे॥

देश प्रदेश हमारे चमकें, आश लगाई।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोस्तु, भक्ति छायी॥२४॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री सुप्रदेशनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

चौबीसों की एक साथ में, करें अर्चना।
ज्ञान नाव से पार उतरने, करें प्रार्थना॥
निकट आपके आने हम भी, चढ़े चढ़ाई।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोस्तु, भक्ति छायी॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

पुष्करार्ध के पूर्व के, ऐरावत के ईश।
त्रय कालिक जयमाल को, भक्त झुकायें शीश॥

(ज्ञानोदय)

जिनके हम गुण गाने आये, उनको शीश झुकाओ तो।
जिससे मोक्ष प्राप्त करते प्रभु, वह रास्ता अपनाओ तो॥
ऐसा क्या कर लिया इन्होंने, वह इतिहास विचारो तो।
उनको निज आदर्श बनाकर, अपना भाग्य सँवारों तो॥१॥

आदर्शों की परम्परा ये, परिषह उपसर्गों वाली।
विघ्न कष्ट संकट जग कहता, किन्तु शान्ति की फुलवाड़ी॥
लेकिन ज्यों सागर से मिलने, कौन नदी को बांध सकें।
वैसे ही निज लक्ष्य सिद्धि को, विघ्न कष्ट क्या रोक सकें॥२॥

जितने भी जिन सिद्ध हुए सब, इसी मार्ग को अपनाये।
विघ्न संकटों में भी चलकर, स्वानुभूति को कर पाये॥
और मजे से आज मोक्ष में, मंजिल पाकर सुखी हुए।
किन्तु संकट से घबराकार, आज तलक हम दुखी हुए॥३॥

अतः आज संकल्प करें हम, पूजन पाठ रचाने का।
भले प्राण ही चले जाएं पर, दया धर्म अपनाने का॥
जान न लेंगे लेकिन अपनी, हम तो जान लगा देंगे।
पापों के तूफान मोड़ के, प्रभु सा रूप सजा लेंगे॥४॥

जब तक होगा जीवन अपना, तब तक तो संकट होंगे।
जब तक संकट तब तक सच्चे, रत्नत्रय के पथ होंगे॥
जब निश्चय रत्नत्रय होगा, तब हम निजानन्द लेंगे।
'सुव्रत' जब लें निजानन्द तो, भय संकट क्या कर लेंगे॥५॥

(सोरठा)

ऐसा दो आशीष, हम संकट से ना डरें।
अतः झुकाकर शीश, आतम परमातम भजें॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें तीस चौबीसियाँ, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दें, हम पूजत भगवान॥

(शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुखों को मेंट दो, चौबीसी जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

(हरीगीतिका)

तीर्थंकरों के चक्र में जो, तीस चौबीसी भजें।
वो दूर दुख दारिद्र करने, पुण्य धन अर्जन करें॥
पा गुरु कृपा 'सुव्रत' धरें, अध्यात्म की विद्या चखें।
आशीष दो कि विधान करके हम नमोस्तु कर सकें॥

(इत्याशीर्वाद)

पूजा-९

पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधी भरत क्षेत्रस्थ त्रिकाल चौबीसी पूजन

स्थापना

(दोहा)

पश्चिम पुष्कर भरत के, त्रयकालिक चौबीस।
जगत पूज्य हैं जो प्रभु, उन्हें नवाये शीश॥

(ज्ञानोदय)

श्रद्धा ने आवाज लगाई, रे चेतन तू मन्दिर चल।
बहिरातम को जल्दी तज के, तू भी अपने भाव बदल॥
एक बार निज में आने को, अंतर आतम में आ तू।
परमातम बिन कोई न अपना, सो पूजा में रम जा तू॥
श्रद्धा की भाषा सुनी, चेता चेतन आज।
शरणागत को शरण दो, त्रयकालिक जिनराज॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकर अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ...। अत्र मम् सन्निहितो...। (पुष्पांजलिं...)

(शेरचाल)

जब तक भरी रहेगी जन्म मृत्यु की नदी।
तब तक न पार होगी नांव निज की निज कभी॥
हे नाथ! हमको अपनी ज्ञान नांव दीजिए।
हम तो करें नमोस्तु आप पार कीजिए॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

गैरों की जिंदगी में हमने आग लगाई।
सो अब लौं आत्मा की ठण्डी छांव न पायी॥
अब तो सबकी आग बुझे ध्यान छांव दीजिए।
हम तो करें नमोस्तु आप पार कीजिए॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनं...।

हैं विश्व के बाजार में गुम से गए इन्सान।
फिर कैसे मिलें आत्मा परमात्मा भगवान॥

अब निज की निज की खोज का सुमंत्र दीजिए।
हम तो करें नमोस्तु पार आप कीजिए॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

हमने बिखेरे दूसरों की जिंदगी में शूल।
सो आत्मा परमात्मा के खिल न पाये फूल॥
अब वीतरागता की पांखुड़ी तो दीजिए।
हम तो करें नमोस्तु आप पार कीजिए॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं...।

पर को भोगने के लिए निज को भुलाये।
तभी को निज को चखने तेरे द्वार पै आये॥
हे नाथ! अब तो हमको अपना स्वाद दीजिए।
हम तो करें नमोस्तु आप पार कीजिए॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

जड़ की ज्योति न जले तो निज की न जले।
प्रभु आपके बिना हमारा काम न चले॥
हे नाथ! हमको तत्त्व का प्रकाश दीजिए।
हम तो करें नमोस्तु आप पार कीजिए॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

कर्म बाँधने में हर कोई स्वतंत्र हैं।
कर्म काटने के योग्य जैन संत हैं॥
संत साधु बनके विचरूँ पंथ दीजिए।
हम तो करें नमोस्तु आप पार कीजिए॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

सबने हमको लूट लिया बारी बारी से।
किसी ने शत्रुता से तो किसी ने यारी से॥

हे नाथ! अब तो हमको निज स्वरूप दीजिए।
हम तो करें नमोस्तु आप पार कीजिए॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्ष फल प्राप्तये फलं...।

पूजा रचाई हमने आप पूज्य कीजिए।
उदास दास हम हैं हमको साथ दीजिए॥
हे नाथ! हम हैं छिन्न भिन्न पूर्ण कीजिए।
हम तो करें नमोस्तु आप पार कीजिए॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

अच्छाई से सुख मिले, मिले पुण्य से भक्ति।
गुण गाकर के यश मिले, मिले धर्म से मुक्ति॥

(ज्ञानोदय)

द्वीप पश्चिमी पुष्करार्ध के, भरत क्षेत्र की चौबीसी।
तीन काल के सब तीर्थंकर, जिनकी मूरत है नीकी॥
भूतकाल के पद्म चन्द्र से, जितेश स्वामी तक जिनवर।
वर्तमान सर्वांग स्वामी से, अंतिम रतानन्द प्रभुवर॥१॥

भाविकाल के नाथ प्रभावक, अंतिम हैं भरतेश प्रभो।
धर्म चक्र के यही प्रर्वतक, चिद्‌यन के चैतन्य विभो॥
निश्चय व्यवहारी रत्नत्रय, परम भेद विज्ञानी हैं।
अपने में भी रहकर जो तो, अपनों को वरदानी हैं॥२॥

सब कुछ ही तो दिया आपने, क्या क्या तुम्हें बतायें हम।
रहे जहां के तहां भक्त क्यों, तुमसे मिल ना पायें हम॥
नाथ! मोक्ष मंजिल को पाते, खड्‌गासन पद्‌मासन से।
भक्तों पर कब कृपा करोगे, पूछें भक्त गवासन से॥३॥

प्रभु जिनेन्द्र तो शुद्ध बुद्ध हैं, वर्णहीन अविकार रहे।
चिंतामणि अविरुद्ध अमूर्तिक, चेतन के त्यौहार रहे॥

निराभरण भी होकर स्वामी, अलंकार है आतम के।
इन जैसे निर्दोष बने हम, अतः चरण में आ धमके॥४॥

नाथ हमारी यही प्रार्थना, भूख प्यास भय चिंता खेद।
जन्म मरण आश्चर्य बुढ़ापा, राग द्वेष मद निद्रा स्वेद॥
रोग मोह विषाद वा अरति, दोष अठारह दूर करो।
चिन्मूरत चैतन्य बनाकर, निज सम हमें जरूर करो॥५॥

ऐसी कला सिखा दो जिससे, आतम रूप सजा लें हम।
कम बोलें पर तत्त्व समझ लें, मोक्ष प्राप्त कर ही लें हम॥
जियो और जीने दो सबको, ऐसा मंत्र सिखा देना।
'सुव्रत' को अपने बाजू में, हे प्रभु! शीघ्र बिठा लेना॥

(सोरठा)

तत्त्वादिक में श्रेष्ठ, त्रयकालिक तीर्थंकरा।
हम भी बने चिदेश, किया नमोस्तु सो खरा॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमला पूर्णार्घ्यं...।

अर्घ्यावली—२५

पद्‌मचन्द्र प्रभु खिले पद्‌म सम, तभी चाँद शर्माये।
चारु चन्द्र चैतन्य चेतना, चहके चित्र चुराये॥
ऐसे प्रभु को पूज मनायें, हम भी सिद्ध दिवाली।
करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें, बजा बजा के ताली॥१॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री पद्‌मचन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री रतनांगनाथ रतनों के, हमको अपने बना लो।
हम भी चमकें आप सरीखे, निज रस धार बहा दो॥
तुम्हें भक्त तो सब कुछ सौंपें, अतः संभालो डाली।
करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें, बजा बजा के ताली॥२॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री रतनांगनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

आप अयोगी केशनाथ जी, तीनों योग विजेता।
सो चरणों में झुकते नेता, और सभी अभिनेता॥
योग वियोग हमारे हर दो, हमें मुक्तिपुर वाली।
करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें, बजा बजा के ताली॥३॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री केशनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री सर्वार्थनाथ सिद्धि का, अर्थ सिद्ध कर डाले।
अतः बने अर्हंत सिद्ध हैं, कर्म आवरण टाले॥
तुमसे तुमको माँग रहे , हम मांग न जाये खाली।
करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें, बजा बजा के ताली॥४॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री सर्वार्थनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

चमत्कार ऋषिनाथ दिखाते, तजकर रिश्ते नाते।
ऋषि मुनियों के नाथ कहाते, फिर भी निज को ध्याते॥
चमत्कार कर ज्ञानामृत से, भरो भक्त की प्याली।
करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें, बजा बजा के ताली॥५॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री ऋषिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हीरे सम हरीभद्रनाथ की, चिन्मूरत मन हारी।
वीतरागता की सूरत पर, मोहित जनता सारी॥
अंतस सुन्दरता दो हमको, जिसे आपने पाली।
करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें, बजा बजा के ताली॥६॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री हरीभद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूज्य गुणाधिपनाथ आपको, खोज खोज गुण आये॥
सर्व गुणी संपन्न आपसे, सब अवगुण घबराये।
तुम विक्रेता हम गुण क्रेता, दूर करो कंगाली।
करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें, बजा बजा के ताली॥७॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री गुणाधिपनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पारत्रिक प्रभु ध्यान नाव से, भव जल पूरा तैरे।
हम संसार पार जाने को, आये द्वारे तेरे॥
सुनो प्रार्थना पार उतारो, कर दो वैभवशाली।
करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें, बजा बजा के ताली॥८॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री पारत्रिकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

ब्रह्मनाथ प्रभु विश्व विजेता, अटल ब्रह्मचारी।
कामी भोगी जिन्हें न समझे, जिन की बलिहारी॥
ब्रह्म बिना ब्रह्माण्ड अधूरा, फिर भी भक्त दीवाली।
करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें, बजा बजा के ताली॥९॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री ब्रह्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

महा मुनीन्द्रनाथ वैरागी, मन के वेग नशाये।
बने महा मृत्युंजय स्वामी, ज्यों मन पर जय पाये॥
हमें मनोबल दो जो हर ले, मन की करनी काली।
करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें, बजा बजा के ताली॥१०॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री मुनीन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

दीपकनाथ अनोखे दीपक, जहाँ तेल ना बाती।
जिन्हें पूजते सूरज चंदा, जड़ दीपक दिन राती॥
जले हमारा अंतर दीपक, दो हमको वह लाली।
करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें, बजा बजा के ताली॥११॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री दीपकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री राजर्षिनाथ आपकी, आत्म रियासत साँची।
जिसे देखकर जग की, कर्म सियासत काँपी॥
आत्मराज में करना चाहे, हम भी तो हम माली।
करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें, बजा बजा के ताली॥१२॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री राजर्षिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

(पद्धरी)

पूज्य विशाखदेव जिननाथ, मुक्ति वधू से कर ली शाख।
मुक्ति वधू से हमें मिलायें, नमोस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ाये॥१३॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री विशाखदेव जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूज्य अनिंदित प्रभु अर्हंत, तुम्हें पूजते संत महंत।
निंदित तत्त्व आप छुड़वायें, नमोस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ाये॥१४॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री अनिंदितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

रविस्वामी प्रभु ज्ञान प्रकाश, सूर्य चाँद पूजें बन दास।
हमें भेद विज्ञान दिलायें, नमोस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ायें॥१५॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री रविस्वामीनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

सोमदत्त प्रभु कर विधि, होम बने चिदातम दाता ओम्।
ओंकार मय हमें बनाए, नमोस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ायें॥१६॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री सोमदत्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जय स्वामी प्रभु परम दयाल, कर्म दैत्य का हरे मलाल।
जय जिनेन्द्र का पाठ सिखाएं, नमोस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ायें॥१७॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री स्वामीनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

मोक्षनाथ हैं प्रभु सर्वोच्च प्रभु प्रत्यक्ष दिलाते मोक्ष।
हम परोक्ष में तुम्हें मनायें, नमोस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ायें॥१८॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री मोक्षनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

अग्रभास प्रभु बने समग्र, निज निवास पाये लोकाग्र।
हमको अपने पास बुलाएं, नमोस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ायें॥१९॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री अग्रभासनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

धनुःसंग प्रभु बनें अनंग, क्रीड़ा करें मुक्ति के संग।

हमें तनिक आनन्द लुटायें, नमोस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ायें॥२०॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री धनु:संगनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

रोमांचक प्रभु का कर दर्श, रोम रोम में छाये हर्ष।

रोम रोम में प्रभु वस जाए, नमोस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ायें॥२१॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री रोमांचकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

मुक्तिनाथ नाथों के नाथ, तुम बिन कौन सुनेगा बात।

जग से मुक्ति हमें दिलाए, नमोस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ायें॥२२॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री मुक्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूज्य प्रसिद्धनाथ का नाम, हरे दरिद्रता काम बनाए।

हमको सिद्ध प्रसिद्ध बनाए, नमोस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ायें॥२३॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री प्रसिद्धनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जिनवर जितेशनाथ जिनराज , तुम बिन कौन बचाए लाज।

शुद्धातम का राज बताए, नमोस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ायें॥२४॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री जितेशनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

चौबीसी प्रभु कैसे ध्यायें, कैसे उन जैसे बन जाए।

इतनी शक्ति कहाँ से लायें, परमातम सम आतम पाए॥

मंदिर आए रख श्रद्धान, दर्शन पूजन करे विधान।

बदले में आत्म धन पाए, नमोस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ायें॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भूतकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

अर्घ्यावली—२६

(लय-पाँचों मेरु...)

श्री सर्वांग स्वामी जिनराज, सुन्दरता के तुम हो ताज।
तुम्हीं शिवराज, तुम्हीं दिलाते निज साम्राज्य॥
पश्चिम पुष्कर भरत महान, वर्तमान के जिन भगवान।
तुम्हें हम ध्यायें, करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें॥१॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री सर्वांगनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री पद्माकरनाथ जिनेन्द्र, परमानन्दी तुम हो इन्द्र।
दिये आनन्द, हमें बना दो ब्रह्मानन्द॥
पश्चिम पुष्कर भरत महान, वर्तमान के जिन भगवान।
तुम्हें हम ध्यायें, करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें॥२॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री पद्माकरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूज्य प्रभाकरनाथ जिनेश, आप हरे अज्ञान अशेष।
बने सर्वेश, हम में भरे प्रकाश विशेष॥
पश्चिम पुष्कर भरत महान, वर्तमान के जिन भगवान।
तुम्हें हम ध्यायें, करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें॥३॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री प्रभाकरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री बलनाथ महाबलवान, कर्म भागते हों हैरान।
बचा के प्राण, करो हमारा प्रभु कल्याण॥
पश्चिम पुष्कर भरत महान, वर्तमान के जिन भगवान।
तुम्हें हम ध्यायें, करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें॥४॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री बलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

परम पूज्य योगीश्वरनाथ, योग ध्यान से कर्म नाश।
हुए विख्यात, हुई मुक्ति रानी नत माथ॥
पश्चिम पुष्कर भरत महान, वर्तमान के जिन भगवान।

तुम्हें हम ध्यायें, करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें॥५॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री योगीश्वरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री सूक्ष्मांगनाथ सुख धाम, रागादिक पर लगा विराम।
बने निष्काम, करें काम हम काम तमाम।
पश्चिम पुष्कर भरत महान, वर्तमान के जिन भगवान।
तुम्हें हम ध्यायें, करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें॥६॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री सूक्ष्मांगनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री व्रत चलातीत व्रत कोश, जब पालें सुव्रत निर्दोष।
उड़े जग होश, दो संतोष हरो सब रोष॥
पश्चिम पुष्कर भरत महान, वर्तमान के जिन भगवान।
तुम्हें हम ध्यायें, करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें॥७॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री सुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूज्य कलंबक प्रभु अतिवीर, चला चलाकर संयम तीर।
गये भवतीर, दो भव तीर हरो दुख पीर॥
पश्चिम पुष्कर भरत महान, वर्तमान के जिन भगवान।
तुम्हें हम ध्यायें, करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें॥८॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री कलंबकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री परित्यागनाथ जग त्याग, किये स्वयं से जब अनुराग।
धरे वैराग्य, यही हमारा है सौभाग्य॥
पश्चिम पुष्कर भरत महान, वर्तमान के जिन भगवान।
तुम्हें हम ध्यायें, करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें॥९॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री परित्यागनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

प्रभो! निषेधिक कर्म निषेध, करके हरते सारे खेद।
तत्त्व के भेद, मिटा हमें दे धर्म अभेद॥

पश्चिम पुष्कर भरत महान, वर्तमान के जिन भगवान।
तुम्हें हम ध्यायें, करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें॥१०॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री निषेधिकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पापापहारि प्रभु परमेश, बने पाप जयकर पुण्येश।
तुम्हीं धर्मेश, पाप हमारे हरो चिदेश॥
पश्चिम पुष्कर भरत महान, वर्तमान के जिन भगवान।
तुम्हें हम ध्यायें, करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें॥११॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री पुण्येशनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री सुस्वामी प्रभु जिन तीर्थ, तुम तो निज से करके प्रीत।
बने जिन मीत, तुम सम बनने गायें गीत॥
पश्चिम पुष्कर भरत महान, वर्तमान के जिन भगवान।
तुम्हें हम ध्यायें, करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें॥१२॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री सुस्वामीनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

मुक्तिचन्द्र प्रभु चन्द्राकार, सिद्धशिला पाये सुखकार।
मुक्ति कर्त्तार, हमें बुला लो अपने द्वार॥
पश्चिम पुष्कर भरत महान, वर्तमान के जिन भगवान।
तुम्हें हम ध्यायें, करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें॥१३॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री मुक्तिचन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

अप्राशिक प्रभु परम रसाल, कहलाते जिन माँ के लाल।
अतः वरमाल, करे मोक्ष लक्ष्मी जयमाल॥
पश्चिम पुष्कर भरत महान, वर्तमान के जिन भगवान।
तुम्हें हम ध्यायें, करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें॥१४॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री अप्राशिकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री जयचन्द्रनाथ जगदीश, कर्म जयी पाये जगदीश।
बने निज ईश, हम शिष्यों को दो आशीष॥

पश्चिम पुष्कर भरत महान, वर्तमान के जिन भगवान।
तुम्हें हम ध्यायें, करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें॥१५॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री जयचन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

मलाधारी मौलिक मलनाथ, आत्म तत्त्व का किये विकास।
दिये संन्यास, दास बना लो हमको खास॥
पश्चिम पुष्कर भरत महान, वर्तमान के जिन भगवान।
तुम्हें हम ध्यायें, करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें॥१६॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री मलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूज्य सुसंयत प्रभु सर्वज्ञ, अनन्तज्ञ निज पर के विज्ञ।
बने आत्मज्ञ, करो क्षमा हमको हम अज्ञ॥
पश्चिम पुष्कर भरत महान, वर्तमान के जिन भगवान।
तुम्हें हम ध्यायें, करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें॥१७॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री सुसंयतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

मलयसिन्धु जिन आलय धाम, ज्ञाता दृष्टा आतम राम।
करें कल्याण, सिद्धालय का दें निज धाम॥
पश्चिम पुष्कर भरत महान, वर्तमान के जिन भगवान।
तुम्हें हम ध्यायें, करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें॥१८॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री मलयसिन्धुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूज्य अक्षधर अक्ष संभार, धर्म धुरन्धर शिव दातार।
करो भव पार, दो अर्हंत सिद्ध उपहार॥
पश्चिम पुष्कर भरत महान, वर्तमान के जिन भगवान।
तुम्हें हम ध्यायें, करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें॥१९॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री अक्षधरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

देव! देवधर दया निधान, दिये दयोदय का वरदान।
हमारी शान, रखो जरा सा हमरा ध्यान॥

पश्चिम पुष्कर भरत महान, वर्तमान के जिन भगवान।
तुम्हें हम ध्यायें, करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें॥२०॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री देवधरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्रेष्ठ देवगण अर्हत देव, करें देवगण जिनकी सेव।
सुखी स्वयमेव, हमें बना दे चेतन देव॥
पश्चिम पुष्कर भरत महान, वर्तमान के जिन भगवान।
तुम्हें हम ध्यायें, करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें॥२१॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री देवगणनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

आगम रूप आगमिकनाथ, करो क्रिया आगम की बात।
हमें दो साथ, कट जायें गम की हर रात॥
पश्चिम पुष्कर भरत महान, वर्तमान के जिन भगवान।
तुम्हें हम ध्यायें, करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें॥२२॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री आगमिकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूज्य विनीतनाथ अरिहन्त, मुक्ति वधू के तुम हो कंत।
रहो जयवन्त, हमें दो पंथ दो बनने संत॥
पश्चिम पुष्कर भरत महान, वर्तमान के जिन भगवान।
तुम्हें हम ध्यायें, करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें॥२३॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री विनीतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

रतानन्द प्रभु ब्रह्मानन्द, निज में रत हो दो आनन्द।
करो भव भंग, अंग अंग चाहे संत संग॥
पश्चिम पुष्कर भरत महान, वर्तमान के जिन भगवान।
तुम्हें हम ध्यायें, करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें॥२४॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री रतानन्दनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

चौबीसी पाए निज रूप, परम भेद विज्ञान स्वरूप।
हरे भव धूप, हमको आप करो चिद्रूप॥
पश्चिम पुष्कर भरत महान, वर्तमान के जिन भगवान।
तुम्हें हम ध्यायें, करके नमोस्तु अर्घ्य चढ़ायें॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

अर्घ्यावली—२७

(विष्णु छन्द)

पूज्य प्रभावकनाथ आपने, शुद्ध भाव धारे।
प्रभावना के निलय बने, हो गूंजें जयकारे॥
हमें शुद्ध उपयोग दान दे, ज्ञान चक्षु खोले।
अर्घ्य भेंट हम करके नमोस्तु, नमो नमो बोलें॥१॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री प्रभावकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूज्य प्रवर विनतेन्द्रनाथ जी, महा विनय पाले।
अतः चरण में महा जनों ने, निज डेरे डाले॥
विनय धर्म को हम अपना कर, धर्म चक्षु खोले।
अर्घ्य भेंट हम करके नमोस्तु, नमो नमो बोलें॥२॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री वितेन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

सुखद सुभावकनाथ पूज कर, श्रेष्ठ भावना हो।
सिद्ध शरण को देने वाली, संत साधना हो॥
मनोभावना पूरी करके, भाव चक्षु खोले।
अर्घ्य भेंट हम करके नमोस्तु, नमो नमो बोलें॥३॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री सुभावकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

दिनकरनाथ आपका दर्शन, आत्म ज्योति देता।
पाप निशाचर के शासन को, शीघ्र सुला देता॥

जिन दर्शन से निज दर्शन को, चर्म चक्षु खोले।
अर्घ्य भेंट हम करके नमोस्तु, नमो नमो बोलें॥४॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री दिनकरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

आज अगस्त्येजो अर्हं को, भक्त खूब ध्याये।
जिनका आतम तेज देखकर, आतम चमकाये॥
तेजस्वी ओजस्वी बनने, आत्म चक्षु खोले।
अर्घ्य भेंट हम करके नमोस्तु, नमो नमो बोलें॥५॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री अगस्त्येजोनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

धार्मिक श्री धनदत्तनाथ जी, निज धन प्रकटाये।
फूले नहीं समाएं सेवक, जब जिन धन पाए॥
जिनगुणसंपत्ति हम पाने, चरम चक्षु खोले।
अर्घ्य भेंट हम करके नमोस्तु, नमो नमो बोलें॥६॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री धनदत्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पौरव प्रभु का गौरव सुनकर, विधि कौरव हारा।
कृपा मिली जिसको उसने, प्रभु अघ रौरव मारा॥
पूर्वापर अब विचार करने, परम चक्षु खोले।
अर्घ्य भेंट हम करके नमोस्तु, नमो नमो बोलें॥७॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री पौरवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री जिनदत्तनाथ की जोड़ी, मिथ्यातम हरती।
संयम बगिया को महका कर, वीतराग करती॥
सिद्ध स्वरूपी सुन्दर बनने, तत्त्व चक्षु खोले।
अर्घ्य भेंट हम करके नमोस्तु, नमो नमो बोलें॥८॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री जिनदत्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पार्श्वनाथ के ध्यान हथौड़े, मन घोड़ा खाके।
घोड़ा दौड़ा घोड़ा दौड़ा, रुका मोक्ष जाके॥

मन घोड़े पर सवार होने, ध्यान चक्षु खोलें।
अर्घ्य भेंट हम करके नमोस्तु, नमो नमो बोलें॥९॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

परम पूज्य मुनि सिंधुनाथ जी, गहरे सागर से।
सांसारिक सुख दुख से खाली, ऊँचे पर्वत से॥
मुनि व्रत को निर्दोष पालने, शास्त्र चक्षु खोलें।
अर्घ्य भेंट हम करके नमोस्तु, नमो नमो बोलें॥१०॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री सिंधुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

आस्तिक प्रभु ने आस्तिक बनकर, नास्तिकता नाशी।
अतः बने हम जिन श्रद्धालु, आप मोक्ष वासी॥
श्रद्धा की यह डोर थाम कर, जिन चक्षु खोलें।
अर्घ्य भेंट हम करके नमोस्तु, नमो नमो बोलें॥११॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री आस्तिकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

भवानीक प्रभु के भावों से, जग में शान्ति हुई।
भाव भंगिमा शुद्ध बना कर, प्रभु ने मुक्ति छुई॥
भावों से भवसागर तिरने, रत्न चक्षु खोलें।
अर्घ्य भेंट हम करके नमोस्तु, नमो नमो बोलें॥१२॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री भवानीकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

(हाकलिका)

श्री नृपनाथ हमारे हो, तारण तरण सहारे हो।
तुमको हम भी अर्घ्य चढ़ा, करें नमोस्तु पुण्य बढ़ा॥१३॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री नृपनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

नारायण प्रभु नारायण, नंत गुणों में पारायण।
तुमको हम भी अर्घ्य चढ़ा, करें नमोस्तु पुण्य बढ़ा॥१४॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री नारायणनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हो स्वामी प्रशमौक तुम्हीं, तुम सा आत्मिक सौख्य नहीं।
तुमको हम भी अर्घ्य चढ़ा, करें नमोस्तु पुण्य बढ़ा॥१५॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री प्रशमौकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

भूपतिनाथ निराले हो, शिवभू देने वाले हो।
तुमको हम भी अर्घ्य चढ़ा, करें नमोस्तु पुण्य बढ़ा॥१७॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री भूपतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

भवभीरू प्रभु मुक्त हुए, भय हरने हम भक्त हुए।
तुमको हम भी अर्घ्य चढ़ा, करें नमोस्तु पुण्य बढ़ा॥१८॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री भवभीरूनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

नंदनप्रभु का अभिनन्दन, महकाता आतम चंदन।
तुमको हम भी अर्घ्य चढ़ा, करें नमोस्तु पुण्य बढ़ा॥१९॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री नंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

भार्गव प्रभु भव भार हरें, हमको भव से पार करें।
तुमको हम भी अर्घ्य चढ़ा, करें नमोस्तु पुण्य बढ़ा॥२०॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री भार्गवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

सुवसुनाथ सम्राट रहे, देते ठाठ विराट रहे।
तुमको हम भी अर्घ्य चढ़ा, करें नमोस्तु पुण्य बढ़ा॥२१॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री सुवसुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूज्य परावश बाँध न सके, पर त्यागी के मजे मजे।
तुमको हम भी अर्घ्य चढ़ा, करें नमोस्तु पुण्य बढ़ा॥२२॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री परावशनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

वनवासीक वसे वन में, हमें रमा लो चरणनन में।
तुमको हम भी अर्घ्य चढ़ा, करें नमोस्तु पुण्य बढ़ा॥२३॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री वनवासीकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री भरतेशनाथ भर्त्ता, नाम आपका सुख कर्त्ता।
तुमको हम भी अर्घ्य चढ़ा, करें नमोस्तु पुण्य बढ़ा॥२४॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री भरतेशनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

हम पीड़ित दुष्कर्मों से, तुम पोषित सुख धर्मों से।
सो अर्जी चौबीसी से, कर्म हरें आशीष से॥
चौबीसी में आ जायें, शुद्ध भेष को हम पायें।
तुमको हम भी अर्घ्य चढ़ा, करें नमोस्तु पुण्य बढ़ा॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ भाविकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

जिन शासन की दृष्टि से, कल का करें सुधार।
अतः कहें जयमालिका, तीनों योग संभार॥

(ज्ञानोदय)

कहीं किसी का अपना शासन, कहीं किसी का शासन है।
कहीं किसी का पतित विनाशन, कहीं कहीं उच्चासन है॥
किन्तु सभी की अपनी सीमा, आदि अन्त तक कौन यहाँ।
पर अनादि अनंत जिनशासन, के आगे सब मौन यहाँ॥१॥

प्यारे प्यारे जिन शासन की, मूरत कितनी प्यारी है।
कोई कैसा भी आश्रय ले, महिमा की बलिहारी है॥
तीन काल में तीन लोक में, समवसरण सी सभा नहीं।
जिनेन्द्र प्रभु सम देव नहीं है, जिनशासन सम दया नहीं॥२॥

पर इस पर विश्वास हमें तो, भूतकाल में हुआ नहीं।
तभी आज तक आत्म तत्त्व का, ज्ञान हमें भी हुआ नहीं॥
अगर आज विश्वास करें तो, आत्म शक्ति प्रकटा लेंगे।
फिर कितना विश्वास घात हो, निज अध्यात्म जगा लेंगे॥३॥

लेकिन इस विश्वास शब्द को, पढ़ने में सेकिण्ड लगे।
लिखने में मिनिटों लगते हैं, चिन्तन में कुछ वक्त लगे॥
लगे समझने में दिन भर तो, लगे सिद्ध करने में जन्म।
किन्तु सिद्धि में भव भव लगते, यह विश्वास बनाये धन्य॥४॥

ज्ञान सुलभ मिल जाये फिर भी, आता जाता बना रहे।
धन मिलता संपन्न जनों के, धनी इसी से तना रहे॥
किन्तु मिला विश्वास जहाँ पर, एक बार यदि खो जाये।
भव भव में भटकाये दुख दे, कभी लौटकर ना आये॥५॥

यह विश्वास अगर जुड़ जाये, जिनशासन की डोरी से।
तो वह सम्यग्दर्शन बनकर, मिले मुक्ति की गोरी से॥
अतः अगर तुम जीत चाहते, निजी विकारी भावों पर।
तो विश्वास घात न करना, तजो अंध विश्वास नजर॥६॥

जीवन हैं तो सपने होंगे, सपने हैं तो मंजिल हैं।
मंजिल हैं तो रास्ते होंगे, रास्ते हैं तो मुश्किल हैं॥
मुश्किल से ही बढ़ें हौसले, यही हौंसले दें विश्वास।
जो 'सुव्रत' को रत्नत्रय दे, दे शुद्धातम मोक्ष निवास॥७॥

(सोरठा)

दोष करें सब अन्त, गुण पायें छयालीस हम।
बनें सिद्ध अर्हन्त, अतः झुकायें शीश हम॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः भरत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें तीस चौबीसियाँ, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दें, हम पूजत भगवान॥

(शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुखों को मेंट दो, चौबीसी जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

(हरीगीतिका)

तीर्थंकरों के चक्र में जो, तीस चौबीसी भजें।
वो दूर दुख दारिद्र करने, पुण्य धन अर्जन करें॥
पा गुरु कृपा 'सुव्रत' धरें, अध्यात्म की विद्या चखें।
आशीष दो कि विधान करके हम नमोस्तु कर सकें॥

(इत्याशीर्वाद)

पूजा-१०

पश्चिम पुष्करार्धद्वीप संबंधी ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रिकाल चौबीसी पूजन

स्थापना

(दोहा)

विघ्नहरण मंगलकरण, वीतराग विज्ञान।
नमें उसे जिससे हुए, तीर्थंकर भगवान॥

(शुद्ध गीता)

दिगंबर रूप के स्वामी, परम अर्हंत कहलाते।
यही तीर्थंकर पूजित हो, स्व पर को पार ले जाते॥
धर्म की धार है ये तो, हमारे प्राण तीर्थंकर।
रचायें अर्चना जिनकी, उन्हीं के गीत हम गाकर॥

(दोहा)

पश्चिम पुष्कर द्वीप के, ऐरावत क्षेत्रीय।
हो नमोस्तु त्रयकाल के, प्रभुॐ को आत्मीय॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकर अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

जिन्हें हम मानते अपना, उन्हीं से कष्ट दुख पाते।
करें क्यों मोह फिर उनसे, इसे मोही न तज पाते॥

सुखाने मोह की धारा, भगत मंदिर चले आये।
नमोस्तु करके चरणों में, भजन पूजन के भी गाये॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

लगाते आश हम जिनसे, तनिक ना शान्ति वो देते।
बढ़ाते आंतरिक पीड़ा, हमारा चैन हर लेते॥
कि पाने आपकी छाया, भगत मंदिर चले आये।
नमोस्तु करके चरणों में, भजन पूजन के भी गाये॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनं...।

हमारे हो सके ना जो, उन्हीं को हम मनाते हैं।
मनाते जो हमें उनके, अरे हम हो न पाते हैं॥
तुम्हें अपना बनाने को, भगत मंदिर चले आये।
नमोस्तु करके चरणों में, भजन पूजन के भी गाये॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

लगाते बाग फूलों के, मगर काँटे ही उगते हैं।
अतः संसार में हम तो, सभी को खूब चुभते हैं॥
खिलाने आत्म की बगिया, भगत मंदिर चले आये।
नमोस्तु करके चरणों में, भजन पूजन के भी गाये॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं...।

नहीं चेतन न तन खाये, तभी तो कौन फिर खाता।
मिलन तन और चेतन का, कभी न तृप्त हो पाता॥
क्षुधा हरने जुदा करने, भगत मंदिर चले आये।
नमोस्तु करके चरणों में, भजन पूजन के भी गाये॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

दिखाते रोशनी सबको, अंधेरे में स्वयं चलते।
तभी दिन रात चलकर भी, जहाँ हैं अब वही कल थे॥

अंधेरा त्याग ने भ्रम का, भगत मंदिर चले आये।
नमोस्तु करके चरणों में, भजन पूजन के भी गाये॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

स्वयं बोओ स्वयं भोगो, यही कर्मों की लीला है।
कटे न आप बिन ये तो, बड़ा जिद्दी हठीला है॥
दिगम्बर रूप पाने को, भगत मंदिर चले आये।
नमोस्तु करके चरणों में, भजन पूजन के भी गाये॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

नहीं सुख को खरीद पाते, नहीं दुख बेच पाते हैं।
न जाने हम सभी फिर क्यों, कमाने रोज जाते हैं॥
कि चखने आप जैसे फल, भगत मंदिर चले आये।
नमोस्तु करके चरणों में, भजन पूजन के भी गाये॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

सहारा आप दो जिसको, सहारा जग उसे देता।
इशारा आप दो जिसको, किनारा भव उसे देता॥
नजारा देखने तेरा, भगत मंदिर चले आये।
नमोस्तु करके चरणों में, भजन पूजन के भी गाये॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

तीर्थंकर अरिहंत ही, बनें सिद्ध भगवान।
अतः सिद्ध अरिहंत को, हो नमोस्तु गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

द्वीप पश्चिमी पुष्करार्ध के, तीर्थंकर त्रयकालों के।
सकल चराचर जाननहारे, सभी हाल षट्कालों के॥

उनकी शरण पुण्य से मिलती, भव्य प्राणियों को जग में।
शरणार्थी भव पार उतरते, अतः झुके हम भी पग में॥१॥

अतीत के उपशांत नाथ से, श्री पुण्यांग नाथ तक जो।
वर्तमान के गांगेयक से, रहे शुभंकर जिनवर जो॥
भाविकाल के प्रथम अदोषिक, अंतिम सुरार्घ अरहंत हैं।
हुए बहत्तर कुल तीर्थंकर, चेतन के जिन तीरथ हैं॥२॥

जिनका अर्चन वर्णन करना, उन सा बनने का पथ दें।
फिर क्रमशः दे चिदानन्द फिर, मोक्षपुरी के गजरथ दें॥
तीर्थंकर बिन धर्म न चलता, नहीं सिद्ध का पद मिलता।
नहीं कर्म का फेरा टलता, नहीं मोक्ष का पट खुलता॥३॥

सो तीर्थंकर परम धुरंधर, बन जाते हैं श्रद्धा से।
जिनको हम भी पूज रहे हैं, मुक्ति वधू की निष्ठा से॥
जिससे एक आतमा पायें, दो सांसारिक द्वन्द्व हरें।
तीन रत्न चेतन के पायें, चारों गति का भ्रमण हरें॥४॥

पंचम ज्ञान प्राप्त हो जाये, षट् कालों का काल तजें।
सात तत्त्व में मोक्ष मिले बस, आठ कर्म का बंध तजें॥
नव देवों के चरण पखारें, दस धर्मों को चख पायें।
ग्यारह प्रतिमा जानें समझें, बारह व्रत तप श्रुत ध्यायें॥५॥

तेरह विध चारित्र धार लें, चौदह गुणस्थान तजें।
पंद्रह योग प्रमाद त्याग कर, सोलह विध का ध्यान तजें॥
सत्रह विध का मरण त्याग कर, दोष अठारह हनन करें।
उन्नीसा हर कार्य त्यागकर, बीसनाथ को नमन करें॥६॥

इक्कीसा हर भाव साथ कर, बाईस परिषह विजित करें।
तेईस पुद्गल वर्गणा त्यागें, चौबीसी त्रय काल भजें॥
इतनी सी बस भक्त भावना, लेकर तुम्हें पुकार रहे।
आत्म सिद्धि का लक्ष्य साधने, तुमसे तुमको मांग रहे॥७॥

द्वार आपका त्याग भक्त ने, दर दर तो खाई ठोकर।
गृहस्थी जोड़ी भवन बनाये, रिश्ते नातों में फँसकर॥
भजा न आतम ना परमातम, बस भोगों की चाहत में।
'सुव्रत' यह अपराध त्यागने, आया आतम के हित में॥८॥

(सोरठा)

द्वार आपका छोड़, कहीं भक्त ना जाए अब।
प्रभु से नाता जोड़, तीर्थंकर पद पायें सब॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

अर्घ्यावली–२८

(काव्यरोला)

श्री उपशांत जिनाय, किये जब शान्ति धारा।
करके शमित कषाय, रूप निज का श्रृंगारा॥
हो अपना श्रृंगार, शान्ति के बाँटो गहने।
नमोस्तु करके अर्घ्य, समर्पित लाए करने॥१॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री उपशांतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जिनवर फाल्गुणनाथ, ध्यान फाल्गुन में मेले।
जला कर्म की काठ, होलियाँ निज की खेले॥
उत्सव रंगारंग, भक्त आये हम करने।
नमोस्तु करके अर्घ्य, समर्पित लाए करने॥२॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री फाल्गुणनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

परमेष्ठी पूर्वास, पूर्व का वास भुलाये।
करके ब्रह्म विलास, स्वयं आवास सजाये॥
समवसरण में वास, दास भी आये करने।
नमोस्तु करके अर्घ्य, समर्पित लाए करने॥३॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री पूर्वासनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

स्वामी श्री सौधर्म, धर्म अपनाये साँचा।
नाशे सारे कर्म, मुक्ति ने पत्रक वाँचा॥
पायें जिनवर तत्त्व, लोक के सिर पर रहने।
नमोस्तु करके अर्घ्य, समर्पित लाए करने॥४॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री सौधर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

ज्ञाता गौरिकनाथ, मुक्ति की गोरी पाने।
ब्रह्मचर्य ले साथ, चले निज ब्याह रचाने॥
प्रभु का प्रीति भोज, भक्त भी आये करने।
नमोस्तु करके अर्घ्य, समर्पित लाए करने॥५॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री गौरिकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

त्रिविक्रम जिनराज, पराक्रम निज का करने।
हरे कर्म का ताज, राज अपने पर करने॥
आप रहें जयवन्त, भक्त आये जय करने।
नमोस्तु करके अर्घ्य, समर्पित लाए करने॥६॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री त्रिविक्रमनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री नरसिंह अखलेश, अखिल जगती के स्वामी।
खुद के बने महेश, पूज्य हो ब्रह्म विरामी॥
नरसिंह बनने पाप, भक्त आये जय करने।
नमोस्तु करके अर्घ्य, समर्पित लाए करने॥७॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री अखलेशनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूजित मृगवसुनाथ, तीन लोकों से पुजते।
फिर भी इनको त्याग, ध्यान आतम के रुचते॥
ख्याति प्रशंसा लाभ, तजें हम तुम सम बनने।
नमोस्तु करके अर्घ्य, समर्पित लाए करने॥८॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री मृगवसुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री सोमेश्वरनाथ, चाँद सा मुखड़ा पाये।
हम से कर लो बात, भक्त का दुखड़ा जाये॥
खिले चारु चैतन्य, कर्म का कालुष्य हरने।
नमोस्तु करके अर्घ्य, समर्पित लाए करने॥९॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री सोमेश्वरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूज्य सुधासुरनाथ, सुरासुर तुम्हें निहारें।
ज्ञान सुधा बरसात, करो तो आएँ बहारें॥
जड़ रस सारे त्याग, सुधा बस तेरा चखने।
नमोस्तु करके अर्घ्य, समर्पित लाए करने॥१०॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री सुधासुरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

अपापमल्ल भगवान, रहे हो पुण्य फला तुम।
करे आतम कल्याण, जगत का करो भला तुम॥
पुण्य फला अरिहंत, भगत आये हैं बनने।
नमोस्तु करके अर्घ्य, समर्पित लाए करने॥११॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री अपापमल्लनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूजित विवाधनाथ, सभी बाधायें टालें।
हर कर सभी विवाद, साध्य सिद्धि कर डालें॥
विसंवाद का मूल, मोह हम आये हरने।
नमोस्तु करके अर्घ्य, समर्पित लाए करने॥१२॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री विवाधनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

(सखी)

संधिक स्वामी जिनराजा, हमें एक झलक दिखला जा।
सो अर्घ्य दूर से लाये, हम करने नमोस्तु आये॥१३॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री संधिकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

मान्धात्र नाथ पथ सुख दे, फिर नित्यानन्दी रुख दे।
सो अर्घ्य दूर से लाये, हम करने नमोस्तु आये॥१४॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री मान्धात्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जिननाथ अश्वतेजो जी, दो अश्व मोक्ष दे जो जी।
सो अर्घ्य दूर से लाये, हम करने नमोस्तु आये॥१५॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री अश्वतेजोनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

विद्यारथ प्रभु का रथ दो, जिन विद्या परमारथ दो।
सो अर्घ्य दूर से लाये, हम करने नमोस्तु आये॥१६॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री विद्यारथनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

निज नेत्र सुलोचन प्रभु ज्यों, खोलें देखी शिव वधू त्यों।
सो अर्घ्य दूर से लाये, हम करने नमोस्तु आये॥१७॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री सुलोचननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

प्रभु मौननिधि महाराजा, निधि देने हृदय समा जा।
सो अर्घ्य दूर से लाये, हम करने नमोस्तु आये॥१८॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री मौननिधिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हे! पुंडरीक प्रभु पावन, दो श्वेत कमल सम चेतन।
सो अर्घ्य दूर से लाये, हम करने नमोस्तु आये॥१९॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री पुंडरीकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जिन देव चित्रगण भगवन्, क्या करें तुम्हारा वर्णन।
सो अर्घ्य दूर से लाये, हम करने नमोस्तु आये॥२०॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री चित्रगणनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

मणिरिन्द्रनाथ जग भूषण, हर लेते शोषण दोषण।
सो अर्घ्य दूर से लाये, हम करने नमोस्तु आये॥२१॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री मणिरिन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

प्रभु सर्वकाल क्षण क्षण में, हैं विद्यमान कण कण में।
सो अर्घ्य दूर से लाये, हम करने नमोस्तु आये॥२२॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री सर्वकालनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री भूरिश्रवण जिन हंसा, तुम पूर्ण करो हर मंसा।
सो अर्घ्य दूर से लाये, हम करने नमोस्तु आये॥२३॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री भूरिश्रवणनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पुण्यांगनाथ परमेष्ठी, हम को दें सम्यक दृष्टि।
सो अर्घ्य दूर से लाये, हम करने नमोस्तु आये॥२४॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक तीर्थंकर श्री पुण्यांगनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

प्रभु रखो ज्ञान में सबको, क्यों भूल गए प्रभु हमको।
हम भी तो अरज सुनाये, तुमसे मिलने ललचायें॥
क्यों दया न तुमको आती, क्यों पढ़ो न हमारी पाती।
प्रभु पढ़ कर दया दिखाओ, हर प्राण विशुद्ध बनाओ॥
फिर दूर ना होंगे हम तुम, जब पा बैठे शुद्धातम।
सो अर्घ्य दूर से लाये, हम करने नमोस्तु आये॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

अर्घ्यावली–२९

श्री गांगेयक प्रभु की गंगा, निज रस से करती मन चंगा।
जिन गंगा हमें नहायें, हम नमोस्तु कर अर्घ्य चढ़ायें॥१॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री गांगेयकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूज्य नल्लवासवनाथ जी, मुक्ति वधू तब तुम्हें रिझाये।
तुम्हें रिझाने को गुण गायें, हम नमोस्तु कर अर्घ्य चढ़ायें॥२॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री नल्लवासनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

भीमनाथ का तन हीरे सा, पर दयालु मन है मक्खन सा।
ऐसी चर्या हमें सिखायें, हम नमोस्तु कर अर्घ्य चढ़ायें॥३॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री भीमनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूज्य दयाधिकनाथ दयालु, तुम सम ना कोई धर्मालु।
श्रद्धालु जग बनने आये, हम नमोस्तु कर अर्घ्य चढ़ायें॥४॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री दयाधिकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

स्वामी सुभद्रनाथ चिदेशा, करते हो उपकार हमेशा।
विनय हमारी क्यों ठुकरायें, हम नमोस्तु कर अर्घ्य चढ़ायें॥५॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री सुभद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

स्वामीनाथ सभी के स्वामी, ज्ञानानन्दी अंर्तयामी।
भक्तों को निज धाम बुलाये, हम नमोस्तु कर अर्घ्य चढ़ायें॥६॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री स्वामीनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हनिकनाथ हर दृश्य दिखाते, नित्यानन्दी ज्योति जलाते।
हमको हरि हर ब्रह्म बनायें, हम नमोस्तु कर अर्घ्य चढ़ायें॥७॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री हनिकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

नन्दीघोष की दिव्य देशना, करे घोषणा तप्त गर्जना।
पापों पर जय घोष कराये, हम नमोस्तु कर अर्घ्य चढ़ायें॥८॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री नन्दीघोषनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

रूपबीज प्रभु ज्ञान स्वरूपी, हैं अरिहन्त सिद्ध चिद्रूपी।
मोक्ष बीज का पुण्य दिलायें, हम नमोस्तु कर अर्घ्य चढ़ायें॥९॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री रूपबीजनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

वज्रनाथ की वज्र साधना, वज्र कर्म हर दिये आतमा।
मोक्ष सुन्दरी हम भी पायें, हम नमोस्तु कर अर्घ्य चढ़ायें॥१०॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री वज्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री संतोषनाथ सुखिया हैं, आप बिना तो सब दुखिया है।
प्राणों को संतोष दिलायें, हम नमोस्तु कर अर्घ्य चढ़ायें॥११॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री संतोषनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

सुन्दर सुधर्मनाथ हितैषी, जिन भक्तों को चिंता कैसी।
चिंता का साम्राज्य नशाये, हम नमोस्तु कर अर्घ्य चढ़ायें॥१२॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री सुधर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

(हरीगीतिका)

स्वामी फणीश्वरनाथ, अपने आप में परिपूर्ण हो।
जयवंत हों जयशील हो, सर्वोच्च हो संपूर्ण हो॥
यशगान सुन वंदन करें, विस्तार हरने पाप का।
करके नमोस्तु अर्घ्य भेंट, मंत्र जप कर आपका॥१३॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री फणीश्वरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री वीरचन्द्र जिनेन्द्र वीरा, तैर कर संसार को।
खलु चिच्च रूपी दे गये, जिन नांव को पतवार को॥
यशगान सुन वंदन करें, विस्तार हरने पाप का।
करके नमोस्तु अर्घ्य भेंट, मंत्र जप कर आपका॥१४॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री वीरचन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

प्रभु धन्य मेधानिक हुए, जब अन्य का आश्रय तजा।
अध्यात्म मेधा पा गये वो, आपको जिसने भजा॥
यशगान सुन वंदन करें, विस्तार हरने पाप का।
करके नमोस्तु अर्घ्य भेंट, मंत्र जप कर आपका॥१५॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री मेधानिकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

प्रभु स्वच्छनाथ त्रियोग अपने, स्वच्छ करके जम गये।
हों स्वच्छ आत्म प्रदेश तुम सम, भक्ति में हम रम गये॥
यशगान सुन वंदन करें, विस्तार हरने पाप का।
करके नमोस्तु अर्घ्य भेंट, मंत्र जप कर आपका॥१६॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री स्वच्छनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

प्रभु कोपक्षय क्षय कोप का कर, खौफ कर्मों का हरे।
बल वीर्य सौख्य अनन्त पाये, कोप भक्तों का हरे॥
यशगान सुन वंदन करें विस्तार हरने पाप का।
करके नमोस्तु अर्घ्य भेंट, मंत्र जप कर आपका॥१७॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री कोपक्षयनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

अर्हम् अकामनाथ जिनेश्वर, काम को निष्काम कर।
प्रभु हो गये ओंकार रूपी, विश्व का हर काम हर॥
यशगान सुन वंदन करें, विस्तार हरने पाप का।
करके नमोस्तु अर्घ्य भेंट, मंत्र जप कर आपका॥१८॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री अकामनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री धर्मधाम जिनेश अपने, धर्म के पा धाम को।
सार्थक किया है जन्म अपना, मां पिता के नाम को॥
यशगान सुन वंदन करें, विस्तार हरने पाप का।
करके नमोस्तु अर्घ्य भेंट, मंत्र जप कर आपका॥१९॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री धर्मधामनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

प्रभु सूक्तिसेन सहायता दो, साथ दो हर भक्त को।
जो कुछ मिला है आपको वह, बाँट दो हर शिष्य को॥
यशगान सुन वंदन करें, विस्तार हरने पाप का।
करके नमोस्तु अर्घ्य भेंट, मंत्र जप कर आपका॥२०॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री सूक्तिसेननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

तीर्थेश क्षेमंकर क्षमा के, आप ही अवतार हो।
हो शान्ति सारे विश्व में, फिर भक्त को भी तार दो॥
यशगान सुन वंदन करें, विस्तार हरने पाप का।
करके नमोस्तु अर्घ्य भेंट, मंत्र जप कर आपका॥२१॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री क्षेमंकरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

जिनवर दयानाथेश हो, झरती दया हर अंग से।
वो मुक्त होते जो तुम्हें, पाते यहाँ सत्संग से॥
यशगान सुन वंदन करें, विस्तार हरने पाप का।
करके नमोस्तु अर्घ्य भेंट, मंत्र जप कर आपका॥२२॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री दयानाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

धर्मेश कीर्तिपनाथ तेरी, कीर्ति की खुशबू उड़े।
चैतन्यदायी उस महक से, भक्त की आतम जुड़े॥
यशगान सुन वंदन करें, विस्तार हरने पाप का।
करके नमोस्तु अर्घ्य भेंट, मंत्र जप कर आपका॥२३॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री कीर्तिपनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हो विघ्न नाशक प्रभु शुभंकर, शुभ करो फिर शुद्ध भी।
सो भक्त को कर शिष्य फिर, भगवन् बनाते सिद्ध भी॥
यशगान सुन वंदन करें विस्तार हरने पाप का।
करके नमोस्तु अर्घ्य भेंट, मंत्र जप कर आपका॥२४॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्री शुभंकरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

प्रभु श्रेष्ठ हैं जग ज्येष्ठ हैं, चौबीस ही भगवान हैं।
या आप स्वामी आप हैं या, भक्त के श्रद्धान हैं॥
फिर दूर हम तुम क्यों हुए, यह प्रश्न है हर दास का।
करके नमोस्तु अर्घ्य भेंट, मंत्र जप कर आपका॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

अर्घ्यावली—३०

(लय-माता तू दया करके)

भगवन् तेरी भक्ति में, हम झूम रहे आहा।
चरणों में नमोस्तु कर, हम बोल रहे स्वाहा॥
प्रभु आप अदोषिक हो, हम दोषों के भण्डार।
फिर भी तुमको भजते, बिन अपनी शक्ति विचार॥
अपराध क्षमा करके निर्दोष बना देना।
प्रभु अरज हमारी सुन, कुछ प्रेम झरा देना॥१॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री अदोषिकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ स्वामी, तुमने सब कुछ छोड़ा।
जब समवसरण लगा, तो जग भजने दौड़ा॥
तुमने तो कुछ ना दिया, पर सबने सब पाया।
इस लीला का ना पार, दो ब्रह्मानन्द अपार॥२॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री वृषभनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री विनयानन्द विभो, तुमसे यह विनय प्रभो।
दो निज आनन्द हमें, जिसमें चैतन्य रमें॥
वह सबको भर भर दो, प्रभु तनिक इधर भी दो।
फिर क्षत विक्षत से हम, बन जायेंगे तुम सम॥३॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री विनयानंदनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री मुनि भारत जिनवर, तुम सब आरत हर कर।
सब जग स्वारथ तज कर, निज परमारथ भज कर॥
चैतन्य सुन्दरी को, पा भूल गये हम को।
पर हम ना तुम्हें भूलें, सो भावों से झूलें॥४॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री भारतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

प्रभु इन्द्रक कर आज्ञा, बड़भागी पाल रहे।
वो रहें कहीं पर भी, पर माला माल रहे॥

जो दूर हुए तुमसे, वे हाल वही होंगे।
हम भक्त निराले हैं, जिन लाल हम ही होंगे॥५॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री इन्द्रकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री चन्द्रकेतु स्वामी, जिन केतु उड़ाते हो।
सब पर जादू करके नजदीक बुलाते हो॥
यह धर्म नीति साँची, रिपु कर्म मारने की।
है गजब कला तेरी, संसार तारने की॥६॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री चन्द्रकेतुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री ध्वजादित्य प्रभुवर, जिन ध्वजा सम्भाले हो।
जो छांव तले आते, उनको तुम पाले हो॥
उपकार करो हम पर, चरणों में जगह देना।
पचरंगे झण्डे की, बस छाँव हमें देना॥७॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री ध्वजादित्यनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

वसुबोधनाथ स्वामी, तुम केवलज्ञानी हो।
अभियंता मुक्ति के, भक्तों के कल्याणी॥
निश्चय व्यवहारी ने, जब सब ध्यान रखा।
सब भक्त भुला डाले, क्यों हमसे हुए खफा॥८॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री वसुबोधनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

प्रभु आप मुक्तिगत हो, दुर्गत हैं भक्त बड़े।
फिर कैसे आप मिलो, चरणों में आन पड़े॥
हमको गर्भस्थ करो, हम पंचम गति पायें।
क्यों दूर रहें तुमसे, हम साथी बन जायें॥९॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री मुक्तिगतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री धर्मबोध धर्मी, तुमसा है कौन यहाँ।
जो तुम्हें प्राप्त करते, हो जाते मौन यहाँ॥

बस जिन से बात करें बस निज में मगन रहे।
सो तुमको पाने हम, तुमसे ही माँग रहे॥१०॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री धर्मबोधनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

देवांगनाथ देवा तुम, दिव्य ज्योति पाये।
सो देव देवियाँ सब, सेवक बन कर आये॥
जब निज गृह लौटे तो, जिनगृह न भुला पाये।
प्रभु आँखों में झूले, खुद को न सुला पाये॥११॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री देवांगनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

मारीचिकनाथ महा, तुम महा महात्मा हो।
हो भक्तों के मन में, पर तुम शुद्धात्मा हो॥
उससे दुनिया हारी, जिसने बाजी मारी।
जिसने बाजी मारी, वह वरे मुक्ति प्यारी॥१२॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री मारीचिकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

(जोगीरासा)

पूज्य सुजीवननाथ, आप हो जीवन से भी बढ़के।
प्राणों की ये धड़कन तुम बिन, थोड़ी भी ना धड़के॥
अपने प्राण बचाने हमने, काम किया मन चाहा।
पूजन पाठ रचाकर बोलें, ओम् नमः हम स्वाहा॥१३॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री सुजीवननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूज्य यशोधरनाथ आपकी, जिसने कही कहानी।
उसका होगा बाल न बांका, कृपा जिसे वरदानी॥
उसके यश से कर्म भागते, सबने उसे सराहा।
पूजन पाठ रचाकर बोलें, ओम् नमः हम स्वाहा॥१४॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री यशोधरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री गौतम प्रभु ज्ञाता दृष्टा, तत्त्व प्रकाशी हो।
गूढ़ आत्म गृह में रह कर भी, घट घट वासी हो॥
गौ बछड़े सम प्रेम प्राप्ति को, हमने तुमको चाहा।
पूजन पाठ रचाकर बोलें, ओम् नमः हम स्वाहा॥१५॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री गौतमनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

परम पूज्य मुनि शुद्धिनाथ जी, शुद्ध करें आत्मा को।
करे तपस्या हरे समस्या, पाये शुद्धात्मा को॥
तब तो आतम बगिया महकी, धर्म खिला है हा हा।
पूजन पाठ रचाकर बोलें, ओम् नमः हम स्वाहा॥१६॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री शुद्धिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूज्य प्रबोधिक वीतराग प्रभु, बोध स्वयं का पाये।
बने स्वयंभू दिये देशना, शोध आत्म कर पाये॥
शुद्ध तत्त्व से शुद्धातम की, गूंज पड़ी तब आहा।
पूजन पाठ रचाकर बोलें, ओम् नमः हम स्वाहा॥१७॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री प्रबोधिकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

सदानीक प्रभु स्वयं सलोने, सबके चित्त चुराते।
सबको मोहित करने वाले, नित्यानन्द लुटाते॥
हम मोही हैं हमें चुरा लो, बदले अपनी गाहा।
पूजन पाठ रचाकर बोलें, ओम् नमः हम स्वाहा॥१८॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री सदानीकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

परम पूज्य चारित्रनाथ की, चमत्कार मय चर्या।
सबको विस्मय करने वाली, हमको लगती बढ़िया॥
ज्ञान इत्र दे मित्र बना लो, कर्म शत्रु ना चाहा।
पूजन पाठ रचाकर बोलें, ओम् नमः हम स्वाहा॥१९॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री चारित्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

शतानन्द प्रभु सत्यानन्दी, चिदानन्द को चाखो।
व्यवहारी को निश्चय देकर, लाज हमारी राखो॥
भक्त अनन्तानन्दी बनने, कहें आपको हा हा।
पूजन पाठ रचाकर बोलें, ओम् नमः हम स्वाहा॥२०॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री शतानन्दनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूज्य प्रवर वेदार्थनाथ से, मंत्र जाप थक हारे।
वेद ऋचायें फक फक रोती, शास्त्र पुराण पुकारे॥
हो जाओ तुम नाथ हमारे, हमने भी तो चाहा।
पूजन पाठ रचाकर बोलें, ओम् नमः हम स्वाहा॥२१॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री वेदार्थनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

सुधानीक प्रभु करुणा ने, तत्त्व सुधा वर्षाया।
जिससे संयम के अंकुर ने, रत्नत्रय तरू पाया॥
जिस पर शुद्धातम के फल को, चखने भक्त कराहा।
पूजन पाठ रचाकर बोले, ओम् नमः हम स्वाहा॥२२॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री सुधानीकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री ज्योतिर्मय प्रभुवर जी की, जब से ज्योत जली है।
गम की सारी रात टली है, चेतन कली खिली है॥
ज्यातिर्मय निर्ग्रन्थ बना दो, हो जाये मन चाहा।
पूजन पाठ रचाकर बोलें, ओम् नमः हम स्वाहा॥२३॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री ज्योतिर्मयनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श्री सर्वज्ञ सुरार्घनाथ जी, जब अनर्घ पद पाये।
तभी सुरासुर महाअर्घ्य ले, अनर्घ बनने आये॥
महा अर्घ्य सम्पूर्ण अर्घ्य ले, पूर्ण अर्घ्य को चाहा।
पूजन पाठ रचाकर बोलें, ओम् नमः हम स्वाहा॥२४॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक तीर्थंकर श्री सुरार्घनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

पूजा करने वालों पर प्रभु, यह आशीष रखे रहना।
नजरों से बस नहीं गिराना, दिल में सदा बसे रहना॥
जगह तनिक सी चरणों में दे, सिर पर हाथ रखे रहना।
जैसे तैसे कैसे भी हो, अपने साथ रखे रहना॥

(दोहा)

करके नमोस्तु अर्घ्य ले, पूजें प्रभु चौबीस।
आपस की दूरी मिटें, अतः झुकायें शीश॥.

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ भाविकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

कौन कौन से गांव में, कहाँ-कहाँ हम घूम।
त्रय चौबीसी की करें, अब जयमाला धूम॥

(ज्ञानोदय)

अस्तिकाय में द्रव्य तत्त्व में, अथवा सभी पदार्थों में।
तीन लोक में सार भूत क्या, पाना हमें हितार्थी में॥
किया आपको यह चिन्तन जब, उद्वेलित परमार्थों में।
तो चौरासी लाख योनि तज, जिनवर लगें निजार्थों में॥१॥

पंच परावर्तन को तुम तो, चारों गति के साथ तजो।
तीर्थंकर अरहंत बनो फिर, अपना चिद् घन आत्म भजो॥
स्वाश्रित शाश्वत सुख भोगों, फिर तुम शुद्धात्म विलासी हो।
रागादिक से रहित निराकुल, तुम ज्ञायक प्रतिभाषी हो॥२॥

हम हैं दास तुम्हारे भगवन्, कृपा करो अब हम पर भी।
हम अविरुद्ध शुद्ध बन जायें, पूजन पाठ रचा कर ही॥
चौरासी के चक्कर छूटे, चिदानन्द चैतन्य बनें।
सारभूत शुद्धात्म मनन कर, पंचम गति पा धन्य बनें॥३॥

अतः आपको नमोस्तु अगणित, हमें सहारा दे देना।
भव सागर में डूब न जायें, नाव किनारा दे देना॥

भक्त आपके हम जैसे हैं, वैसे ही तुम अपना लो।
तो भक्तों को देखो जल्दी, अपने बाजू में पा लो॥४॥
बाजू में आने को राजू , सात पार तुम करवा दो।
दूरी मजबूरी सब हर लो, स्वामी हमको अपना लो॥
ये अर्जी तो रही हमारी, तुम मर्जी के मालिक हो।
फिर भी 'सुव्रत' की अर्जी सुन, होकर ज्ञायक दायक हो॥५॥

(सोरठा)

एक पंथ दो काज, पूजन पाठ रचायकें।
बनना है जिनराज, आतम ध्यान लगायकें॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप संबंधिनः ऐरावत क्षेत्रस्थ त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें तीस चौबीसियाँ, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दें, हम पूजत भगवान॥

(शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुखों को मेंट दो, चौबीसी जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

(हरीगीतिका)

तीर्थंकरों के चक्र में जो, तीस चौबीसी भजें।
वो दूर दुख दारिद्र करने, पुण्य धन अर्जन करें॥
पा गुरु कृपा 'सुव्रत' धरें, अध्यात्म की विद्या चखें।
आशीष दो कि विधान करके हम नमोस्तु कर सकें॥

(इत्याशीर्वाद)

महा समुच्चय जयमाला

(दोहा)

ढाई द्वीप में हो रहे, त्रयकालिक तीर्थेश।
नमें तीस चौबीसियाँ, जय जय जिन परमेश॥

(ज्ञानोदय)

इस अनन्त आकाश तत्त्व के, मध्य भाग में लोक रहे।
तीन लोक के मध्य लोक में, ढ़ाई द्वीप दो सिन्धु रहे॥
जिसमें जम्बूद्वीप धातकी, अर्द्ध द्वीप पुष्कर प्यारे।
पांच भरत ऐरावत इतने, कर्म भूमि के आधारे॥१॥

इन दस क्षेत्रों में धर्मों के, तीन काल के तीर्थंकर।
हो जाते हैं पूज्य बहत्तर, धर्मों चक्र के स्वामीश्वर॥
इनके दर्शन पूजन करने, आकुल व्याकुल हम तरसे।
फिर भी दर्शन हो न पाये, सो नैना व्याकुल बरसे॥२॥

अतः यहीं पर कर स्थापन, परोक्ष में गुण गाते हैं।
जिनवर का सान्निध्य मिले, बस यही भावना भाते हैं॥
क्योंकि अर्चना तीर्थंकर की , रोग उपद्रव नाशक है।
सांसारिक इच्छित फल दायक, पाप कर्म की घातक है॥३॥

करे महा मृत्युंजय हमको, अपमृत्यु की नाशक है।
गरिमाशाली महिमाशाली, पद सान्निध्य प्रदायक है॥
अतः रचाई महा अर्चना, अनुष्ठान सह जाप करें।
भाव यही है तीर्थंकर सम, हम भी अपने पाप हरें॥४॥

जम्बू-धातकी-पुष्करार्ध के, भरत और ऐरावत के।
पूर्व और पश्चिम के जिनवर, संवाहक धार्मिक रथ के॥
ये चिंतामणि रत्न रहे हैं, कल्पवृक्ष सिद्धि दाता।
मंगल उत्तम शरणभूत हैं, निज में निज के हैं शास्ता॥५॥

इस पूजा का नाम इसी से, श्री तीर्थंकर चक्र विधान।
करके ध्यायें करें अर्चना, भजें सात सौ बीस महान॥
इष्ट वियोग अनिष्ट योग, भय रोग शोक पीड़ा हरता।
रेल-यान-बस-कार आदि की, वाहन दुर्घटना हरता॥

विस्फोटक दुर्घटना टाले, अग्निकाण्ड तूफान हरे।
सर्प आदि विष बाधा नाशे, बाढ़ और भूकम्प हरे॥६॥

विद्युत बिजली उल्का पातन, बादल फटना भी टाले।
अति वृष्टि या अनावृष्टि या, असमय में वृष्टि टालें॥
डाकू चोरादिक भय हरता, आकस्मिक भयभीत हरे।
भूत प्रेत की बाधा हरता, प्राकृतिक उपसर्ग हरे॥७॥

हृदय रोग या रक्त चाप, या वाद विषाद तमाम हरता।
इतना सब विधान हरता तो, कैसा क्या प्रभाव करता॥
गुणियों का सत्संग दिलाता, भयहर तन मन स्वस्थ करे।
मंगलमय यात्रा करवाता, विष बाधाएँ शान्त करे॥८॥

उचित समय पर सम मात्रा में, सुखमय वर्षा दान करे।
चोरी और डकैती रोके, भूत आदि आतंक हरे॥
प्रेम और वात्सल्य बढ़ाये, श्रद्धा को मजबूत करे।
व्यवहारी निश्चय रत्नत्रय, देकर जग कल्याण करे॥९॥

श्री तीर्थंकर चक्र अर्चना, करके हम बस यह चाहें।
जब तक यह संसार न छूटे, मिले भक्ति की बस राहें॥
तो संसार अवस्था में हम, सर्वगुणी सम्पन्न बनें।
फिर संसार अवस्था तजकर, धरें महाव्रत धन्य बनें॥१०॥

पर तब तक सबसे मैत्री हो, गुणियों में आह्लाद रहे।
दुखी जनों पर करुणा करने, गुरु का आशीर्वाद रहे॥
जिससे अलग करें हम वन से, अनन्त शक्ति की आतम को।
कृपा प्राप्ति को 'सुव्रत' पूजें, तीस चौबीसी भगवन् को॥११॥

(सोरठा)

तीस चौबीसी पूज, सच की राह प्रशस्त हों।
जिन सम निज की खोज, करके हम भी मस्त हों॥

ॐ ह्रीं पंचभरत पंचऐरावत संबंधिनः तीसचौबीसी संबंधी सप्तविंशति तीर्थंकरेभ्यो महासमुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें तीस चौबीसियाँ, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दें, हम पूजत भगवान॥

(शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुखों को मेंट दो, चौबीसी जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

(हरीगीतिका)

तीर्थंकरों के चक्र में जो, तीस चौबीसी भजें।
वो दूर दुख दारिद्र करने, पुण्य धन अर्जन करें॥
पा गुरु कृपा 'सुव्रत' धरें, अध्यात्म की विद्या चखें।
आशीष दो कि विधान करके हम नमोस्तु कर सकें॥

(इत्याशीर्वाद)

॥इति विधान सम्पन्न॥